... को झकझोर कर दि...

...से सामना कराने वाली उत्...

खलील जिब्रान
की
श्रेष्ठ कहानियाँ

खलील जिब्रान की श्रेष्ठ कहानियाँ

संपादक

डॉ. महेन्द्र मित्तल

मूल्य

एक सौ पचास रुपये

संस्करण

2001

वितरक

अनु प्रकाशन

धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर

मुद्रक

शीतल प्रिन्टर्स

दो शब्द

विद्रोह के प्रतीक थे ख़लील जिब्रान

ख़लील जिब्रान विश्वख्याति प्राप्त लेखक थे। कवि और चित्रकार के रूप में उन्हें विशेष यश मिला था। उनके विद्रोही तेवर उनकी कथाओं में दिखाई पड़ते हैं। ख़लील जिब्रान के समग्र साहित्य में गहरी जीवन अनुभूति, संवेदनशीलता, भावात्मकता, व्यंग्य एवं पाखण्ड के प्रति गहरा विद्रोह परिलक्षित होता है। उनकी भावनाओं में जबरदस्त आग है। अपनी कथाओं के माध्यम से उन्होंने समाज, व्यक्ति, धार्मिक पाखण्ड, वर्गसंघर्ष, प्रेम, न्याय, कला आदि पर सारगर्भित लेखनी चलाई है।

ख़लील जिब्रान के कहानी-संग्रह 'स्पिरिट्स रिबेलियस' (विद्रोही आत्माएं) में उनके विद्रोही स्वर मुखरित हुए थे। सर्वप्रथम यह पुस्तक अरबी भाषा में छपी थी। बाद में विश्व की अनेक भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद हुआ। यह पुस्तक उन्होंने अट्ठारह से तीस वर्ष की उम्र तक के अरसे में लिखी थी। इस दौरान वे पेरिस में चित्रकला का अध्ययन कर रहे थे। उनकी अन्य रचनाओं में अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित 'दि मैड मैन', 'दि फोर रनर', 'दि प्रॉफेट', 'सैण्ड एण्ड फोम', 'सीक्रेट्स ऑफ दि हार्ट', 'जीसस दी सन ऑफ मैन', 'दि अर्थ गॉड्स', 'दि वाइन्डरर', 'दि गार्डन ऑफ दि प्रॉफिट' और 'टीयर्स एण्ड लाफ्टर' प्रमुख हैं। इस प्रकार उन्होंने लगभग 25 पुस्तकें लिखी थीं।

ख़लील जिब्रान का जन्म 6 फरवरी, 1883 को लेबनान के बशरी गांव में, मैरोनाइट चर्च के सम्प्रदाय में हुआ था। उनके नाना उस चर्च के पुरोहित थे। उनके दादा उत्तरी लेबनान के एक बड़े अमीर घराने से थे। उनकी माता का नाम कामिला और पिता का नाम ख़लील था। अपने माता-पिता की वे प्रथम सन्तान थे।

'खलील' का अर्थ है— चुना हुआ प्रिय मित्र, 'जिब्रान' का अर्थ है— आत्माओं को सन्तोष देने वाला तथा 'कामिला' का अर्थ है— परिपूर्ण। इस प्रकार उनके नाम के अनुसार ही ख़लील जिब्रान एक ऐसे प्रिय मित्र थे, जो सभी आत्माओं को संतोष देने वाले थे।

दुर्भाग्य से खलील जिब्रान को अधिक जीवन प्राप्त नहीं हुआ। सन् 1931 में अप्रैल की 10 तारीख़ को उन्होंने अन्तिम सांस ली थी। मृत्यु के समय वे स्थायी रूप

से अमरीका के न्यूयार्क शहर में रह रह थे अपनी इस छोटी सी उम्र में ही वे अपने ख्याति के चरम शिखर पर पहुंच गए थे।

खलील जिब्रान के साहित्य मे धार्मिक पाखण्ड के प्रति सर्वप्रथम विद्रोह के स्वर उस समय प्रकट हुए, जब उनकी कृति 'विद्रोही आत्माएं' प्रकाशित हुई। इस कृति मे जो कथाए संगृहीत थीं, उनमें समाज के जीर्ण-शीर्ण और जड़ हुए स्वरूप पर तीखे प्रहार किए गए थे। चर्च के पुरोहितों ने इस पुस्तक को बेरूत के बाज़ारों में सरे-आम जलाया था। वे इस पुस्तक को खतरनाक, क्रान्तिकारी और देश के युवको के दिमाग़ में जहर भरने वाली मानते थे।

प्रस्तुत संग्रह मे, उसी संग्रह से कई रचनाएं ली गई हैं, जैसे—'सवेरे की रोशनी', 'दोस्त की वापसी', 'पागल जॉन', 'कब्रो का विलाप', 'आत्मा का उपहार', 'विद्रोही आत्माएं' और 'नई दुलहिन' आदि। संग्रह की अन्य रचनाओं मे— 'तूफान' आत्म जागृति की कहानी है। 'शैतान' धार्मिक पाखण्ड पर गहरा व्यंग्य करती है। 'इसाफ', 'तीन चींटियां' और 'पवित्र नगर' छोटी कथाएं है जो न्याय, धर्मान्धता एवं जीवन के अस्तित्व पर तीखा व्यंग्य करने वाली रचनाएं है।

ख़लील जिब्रान की सभी रचनाएं, सामाजिक अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलन्द करती हैं और अनाचार को सहन न करने की प्रेरणा देती हैं। उनकी लेखन-शैली मे कवि की कल्पना-शक्ति, हृदय की गहरी संवेदनशीलता एव कलाकार की सहज शालीनता प्राप्त होती है। यह संग्रह आपको निश्चित रूप से पसन्द आएगा और आपकी सोच को परिष्कृत करेगा, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

—डॉ० महेन्द्र मित्तल

134-गाधी कुंज,

हापुड़ (उ प्र)

यह किताब ले लो और हंसनेवाले अपने इन पादरियों को बता दो कि उस प्रभु के पुत्र ने माफ करने से कब इन्कार किया था? लो पढो, यह स्वर्ग की त्रासदी और इन्हें बतला दो कि ईसामसीह ने कब यह कहा था कि दूसरों पर दया या मेहरबानी मत करो— फिर भले ही वह पहाड़ी पर दिया हुआ प्रवचन हो या मंदिर मे दी हुई तकरीर। क्या उसने उस व्यभिचारिणी को उसके पापों के लिए माफ नहीं किया था? क्या इंसानियत को गले लगाने के लिए उसने सलीब पर अपनी बांहें नहीं फैलाई थी?

□□

तुम लोग बहुत हो और मैं अकेला हूं जो भी चाहो, तुम मेरे साथ कर सकते हो। रात के अंधेरे में भेड़िये मेमने को फाड़ कर खा जाते हैं, मगर उसके खून के धब्बे घाटी के पत्थरों पर दिन निकलने तक बाकी रहते हैं और सूरज सबको गुनाह की खबर कर देता है।

□□

''और ऐ मूर्ख! तुमने झूठ, ढोंग और फ़रेब से मुझे अपनी बीवी बनाना चाहा। तुम उस जाति के नाश को देखो, जो अत्याचारों में रोशनी ढूंढ़ती है, जो पत्थर से पानी निकालने की उम्मीद रखती है और रेगिस्तान में फूल उगाने की इच्छुक है। तुम उन बस्तियों को देखो, जो अपने आपको इस तरह मूर्खता के हवाले कर चुकी है, जिस तरह एक अंधा अपना हाथ दूसरे अंधे के हाथ में दे देता है। तुम उस ताक़त के पुतले हो, जो हारो और चूड़ियों के लिए गरदनें और बांहें काटती हैं। मैं तुम्हें माफ़ करती हूं, क्योंकि ख़ुश रूहें इस दुनिया से कूच करने से पहले सबके गुनाह माफ़ कर दिया करती हैं।''

कथा क्रम

० आत्मा का उपहार

बाप जब मरा, उस समय वह दूध पीती बच्ची थी और जब मां मरी तब ठ-नौ बरस की भोली-भाली लड़की, जिसे लाचारी और दरिद्रता ने एक ग़रीब ड़ोसी के टुकड़ों पर ला पटका। यह पड़ोसी लेबनान की मनोहारी घाटियों में ती-बाड़ी करता था और वहीं एक झोंपड़ी में अपने कुनबे के साथ अनाज और लो पर ज़िंदगी बिताता था।

बाप की ओर से उस बेचारी को मरने वाले का नाम और अखरोट शफतालू के ो से घिरी हुई एक छोटी-सी झोंपड़ी विरासत में मिली थी। मां की ओर से दुःख आंसू और मुफलिसी का अपमान और तिरस्कार! अब वह अपने गांव में परदेसी और उन ऊंची चट्टानों और घने पेड़ों में अकेली।

उसके रोज़ के काम का सिलसिला यह था कि वह तड़के नंगे पांव दूध देने ली गाय-भैंसों का झुंड हांकती हरी-भरी चरागाहों में जाती और पेड़ों की छाया तले बैठकर चिड़ियों के साथ गाती, नहर के साथ रोती, गाय-भैंसों को उनके र की बहुतायत पर, ईर्ष्या की नज़र से देखती और फूलों का खिलना और तलियों का उड़ना ताक़ती। शाम को जब भूख लगती तो घर वापस आती और पने मालिक की छोटी लड़की के साथ बैठकर थोड़े-से सूखे फल और जैतून के ल और सिरके में डूबी तरकारियों से ज्वार की रोटी कंगालों की तरह खाती। सके बाद सूखे घास के बिस्तर पर अपनी बांहों का तकिया बनाकर लेट जाती और पने दुर्भाग्य पर ठंडी आहें भरती इस आशा में सो जाती कि काश, जीवन एक री नींद होता, जिसे न सपने तोड़ सकते, न जाग्रति छू सकती! सुबह जब उसका लिक उसे जगाता तो वह घबराकर उठ बैठती—उसके डर से कांपती और ़खडपन से डरती हुई।

साल-पर-साल बीतते गए और ग़रीब रैहाना उसी तरह उन टीलों और घाटियों पलती बढ़ती रही। उम्र के साथ-साथ उसकी मुसीबतें भी बढ़ रही थीं। उसके तर अनजाने तौर पर नाजुक भावनाएं पैदा हो रही थीं, जैसे फूल की गहराइयों में

खुशबू पैदा होती है। दिल की धड़कनें और आशंकाएं उसे चारों तरफ़ से घेर रही थीं, जैसे ढोर-जानवर झरने को घेर लेते हैं।

अब वह सूझबूझ वाली लड़की थी, उस बढ़िया और अछूती जमीन की तरह, जो आत्मसाक्षात्कार के बीजों और अनुभव के पैरों से अपरिचित हो।

अब उसके अंदर एक पवित्र आत्मा ने जन्म लिया था, जिसे ईश्वरीय इच्छा ने उसके जादू-भरे चरागाह में फेंक दिया था, जहां जीवन मौसम के परिवर्तन के साथ बदलता रहता है।

अपनी इन अच्छाइयो के कारण वह ऐसी मालूम होती थी, मानो अनजान भगवान का नूर धरती और सूरज के बीच चमक रहा हो।

हम लोग, जिनकी ज़िदगी का ज्यादातर हिस्सा सुसभ्य शहरों में बीतता है, लेबनान की देहाती ज़िदगी के बारे में कुछ नहीं जानते। हम नई सभ्यता की धारा मे बहते हैं, यहां तक कि उस सीधे-सादे, साफ-सुथरे और सुंदर जीवन के दर्शन को भूल जाते हैं या जान-बूझकर भुला देते हैं—वह जीवन जो ध्यान देने पर हमें बसंत में मुस्कराता हुआ, गर्मियों में फलों से लदा हुआ, पतझड़ के दिनों में सोना बिखेरने वाला, जाड़ों में शांति लाने वाला और अपने हर दौर में प्रकृति के उपहार भेंट करने वाला होता है। भौतिक दृष्टि से हम देहातियों से बढ़े-चढ़े हैं, परंतु आत्मिक दृष्टि से वे हमारी तुलना में कहीं अधिक अच्छे हैं। हम बोते बहुत कुछ हैं, पर काटते कुछ नहीं। इसके विपरीत वे जो कुछ बोते हैं, वही काटते हैं। हम खुदग़रज़ी और जरूरतों के गुलाम हैं, वे संतोष के पुतले हैं; हम मायूसी, डर और उदासी के कड़वे जीवन की शराब पीते हैं, वे पवित्र, शुद्ध, साफ़-सुथरा जीवन बिताते हैं।

रैहाना अब सोलह बरस की थी। उसकी आत्मा एक निर्मल आईने के समान थी, जिसमें हरियाली और फूलों की शोभा का प्रतिबिब पड़ता है। उसका हृदय घाटियों के शून्य स्थान की तरह था, जिसमें हर आवाज़ गूंजती है।

प्रकृति के रोने-धोने के दिन थे। रैहाना एक झरने के पास बैठी थी। वह झरना जमीन पर होते हुए भी उससे इस प्रकार दूर था, जैसे कवि की प्रतिभा उसकी भौतिक परिस्थितियों से अछूती होती है। वह पीले पत्तों को देखने में मग्न थी, जिनसे हवा की लहरें खेल रही थीं, जिस तरह मौत इंसान के प्राणों के साथ खेलती है। उसने उन मुरझाये हुए फूलों की ओर निगाह डाली, जो टहनियों से गिरकर अपने बीजों को धरती के हवाले कर रहे थे, जिस तरह अंधाधुंधी के ज़माने में औरतें अपने हीरे-जवाहरात और ज़ेवर मिट्टी में दबा देती हैं।

वह फूलों और पेड़ों को देख रही थी और ग्रीष्म ऋतु की जुदाई की शोक भरी अनुभूति उसके हृदय को व्यथित कर रही थी। उसने सुना, घाटी घोड़े की टापों से गूंज रही है। पलटकर देखा तो एक घुड़सवार धीरे-धीरे उसकी ओर आ रहा था। झरने के पास पहुंचकर वह घोडे से उतर गया। उसकी पोशाक और रूप-रंग से

उसकी ख़ुशहाली और होशियारी प्रकट हो रही थी। उसने बड़े शिष्टाचार से, जो खास पुरुष का ही काम होता है, रैहाना को सलाम किया और कहा, "मैं शहर का रास्ता भूल गया हूं। क्या तुम मेरी सहायता कर सकती हो?"

वह एकदम ऐसे खड़ी हो गई, जैसे झरने के किनारे के पेड़ की टहनी। फिर उसने उत्तर दिया, "मुझे शहर का रास्ता मालूम नहीं, लेकिन मैं अभी जाकर अपने मालिक से पूछ लेती हूं। वह जानता है।"

ये शब्द उसने दिल कड़ा करके कहे। लज्जा ने उसकी सुंदरता और मोहकता में चार चांद लगा दिये, परतु जब वह जाने लगी तो अजनबी ने उसे रोक लिया। जवानी की शराब उसकी रगों में लहरें मार रही थी और उसकी आंखें एक अवर्णनीय आनंद से चमक रही थीं। वह कहने लगा, "नहीं! नहीं! तुम जाओ मत।"

रैहाना ने उसकी आवाज़ में एक ऐसी सामर्थ्य का अनुभव किया, जिसने उसके पैरों में बेड़ी डाल दी और वह जहां थी, वहीं चकित होकर खड़ी रही। उसने शर्म से उचटती हुई निगाह उस अजनबी पर डाली। वह उसे घूर रहा था—एक ऐसी शान के साथ, जिसका मतलब उसकी समझ में नहीं आया। वह मुस्करा रहा था—एक ऐसे जादूभरे ढंग से, जिसकी मिठास रैहाना को रुला देती। वह मज़ा ले-लेकर प्यार भरी नजर से रैहाना के नंगे पांवों, सुदर भुजाओं, चमकदार गरदन और घने, नरम व नाजुक बालों को देख रहा था। वह शौक़ और अचरज के साथ इस बात पर ग़ौर कर रहा था कि सूरज ने किस तरह उसके चेहरे को चमकदार बनाया है और प्रकृति ने कैसे उसकी भुजाओं को इतनी सामर्थ्य दी है।

लेकिन रैहाना? वह शर्म से नीची निगाह किये खड़ी थी। अज्ञात कारण से वह न वहां से हिलना चाहती थी, न उससे बातचीत कर सकती थी।

उस दिन शाम को दुधारू गायें-भैंसें अकेली अपने बाड़े में वापस आईं। रात को जब रैहाना का मालिक खेत से लौटा तो उसे खोजने के लिए निकला। लेकिन उसका कहीं पता न था, उसने 'रैहाना! रैहाना!' कहकर उसे पुकारना शुरू किया, लेकिन पेड़ों में सनसनाती हुई हवा और घाटियों के सिवा किसी ने जवाब न दिया। विवश और निराश होकर वह अपनी झोंपड़ी में वापस आया और उसने अपनी औरत को उस दुर्घटना का हाल बताया। वह उस यकीन न आने वाली बात को सुनकर हैरान रह गई। उस दु:ख में वह बेचारी सारी रात चुपके-चुपके रोती और अपने दिल में कहती रही, "मैंने एक बार सपने में देखा था कि रैहाना एक जंगली-हिंसक पशु के चंगुल में फंसी है, वह पशु उसे फाड़ रहा है और वह हंस भी रही है और रो भी रही है।"

उस छोटे से सुंदर गांव में लोगों को रैहाना के विषय में केवल इतना ही मालूम था। मुझे उसकी जानकारी गांव के एक बूढ़े आदमी से मिली, जिसके सामने रैहाना छोटी से बडी हुई थी और एकाएक लापता हुई थी। इस तरह अपनी यादगार के तौर

पर पीछे कुछ छोड़ा भी तो अपनी मालकिन की आंख में दो बूंद आंसू या मीठी याद, जो उस घाटी में सवेरे-सवेरे सुगंधित वायु की नर्म और नाजुक लहरों के साथ बहती है और नष्ट हो जाती है, जैसे खिड़की के शीशे पर बच्चे के मुंह की भाप।

□□

सन् १९०० ईसवी की बात है। पतझड़ का मौसम था कि मैं अपनी छुट्टियों के दिन उत्तरी लेबनान में बिताकर वापस आया और कॉलेज के खुलने से पहले लगातार एक सप्ताह तक अपने दोस्तों के साथ घूमता-फिरता, आज़ादी से उस सुख का आनंद लूटता रहा, जिससे जवानी को बेहद प्यार है और जिसका अनुभव वह मां-बाप या नज़दीक के रिश्तेदारों के घरों में भी करती है और स्कूल-कॉलेजों की चहारदीवारी में भी। हम सबकी हालत उस वक़्त उन पंछियों की सी थी, जो पिंजड़े का दरवाज़ा खुला देखें और जिनका हृदय उड़ने के आनंद और चहचहाने की ख़ुशी से भर जाये।

जवानी एक सुंदर सपना है, जिसकी मिठास किताबों की बारीक और छिपी हुई समस्याओं को अपना दास बनाकर एक दुखदायी जाग्रति में बदल देती है। तो क्या कभी वह दिन भी आयेगा, जब महान दार्शनिक जवानी की कल्पनाओं और साक्षात्कार की मिठास को एक कर देंगे, जिस तरह झिड़की दो घृणा करने वाले हृदयों को आपस में मिला देती है? कभी वह दिन भी आयेगा, जब प्रकृति मानव की अध्यापिका, मानवता उसकी किताब और ज़िंदगी उसकी पाठशाला होगी? कोई मुझे बता दे कि क्या मेरी यह इच्छा कभी पूरी होगी?

यद्यपि हम जानते नहीं, पर अनुभव करते हैं कि हम बड़ी तेजी के साथ 'आत्मिक उन्नति' की ओर जा रहे हैं और वह उन्नति प्रकृति के सौंदर्य की अनुभूति है, जो हमें अपने दिल की भावनाओं के द्वारा प्राप्त होती है, और सौभाग्य और सज्जनता की अधिकता है, जो उस सौंदर्य के प्रति हमारे प्रेम का परिणाम है।

एक दिन मैं चौक में किसी ऊंची जगह पर बैठा उन हंगामों को देख रहा था, जो शहर के मैदानों मे हमेशा पाये जाते हैं। दूकानदारों और फेरी वालों की आवाज़ें सुन रहा था, जो वे अपने माल या खाने-पीने की चीज़ों की तारीफ़ में लगा रहे थे। तभी पांच बरस का एक बच्चा फटे-पुराने कपड़े पहने कंधे पर छोटी-सी टोकरी लिये, जिसमें फूलों के हार थे, मेरे पास आया और घुटी हुई आवाज़ में, जिससे परपरागत पतन एवं भयानक विनाश प्रकट हो रहा था, कहने लगा, "बाबूजी, फूल लेंगे?"

मैंने उसके नन्हे-मुन्ने से पीले चेहरे की ओर देखा। उसकी आंखें दुर्भाग्य और दरिद्रता की परछाइयों से धुंधली हो रही थीं, मुंह थोड़ा-सा खुला हुआ था, मानो बीमार की छाती का गहरा घाव हो। कलाइयां नंगी और दुबली-पतली थीं। छोटा-सा नाजुक शरीर फूलों की टोकरी पर झुका था जैसे हरे भरे पौधों में मुरझाये ु ए

पीले गुलाब की टहनी हो। मैंने एक क्षण में उसका वह हृदयविदारक स्वरूप देखा और मेरे अंदर का प्यार और दया उस मुस्कराहट की शक्ल में ज़ाहिर हुई, जो आंसुओं से ज़्यादा कड़वी होती है—वह मुस्कराहट, जो हमारे अंत:करण की गहराइयों में उभरकर होंठों पर आती है और अगर हम उससे भागने की कोशिश करते हैं तो वह हमारी आंखों में पहुंचती है और आंसू बनकर हमारे गालों पर ढलक आती है।

मैंने कुछ फूल खरीदे और उससे बातें करने लगा। मुझे मालूम था कि उसकी दु:खभरी निगाहों के पीछे एक छोटा-सा दिल है, जिसमें शाश्वत और अविनाशी फकीरों की दर्दभरी कहानी का एक अध्याय छिपा है—वह दु:खभरी कहानी, जो दिन-रात संसार के रंगमंच पर खेली जाती है, पर बहुत कम लोग उसकी व्यथाओ को देखने की सामर्थ्य रखते हैं।

जब मैं प्यार-भरे स्वर में उससे सहानुभूति के साथ बातें करने लगा तो उसका डर दूर हुआ और वह मुझे अचरज से देखने लगा, क्योंकि वह भी अपने जैसे मुहताजों की तरह उन नौजवानों की झिड़कियां-घुड़कियां सुनने का आदी था, जो आमतौर से सड़क पर भीख मांगने वाले नौजवान लड़के-लड़की को इस तरह देखते हैं, मानो वह एक गंदी और अपवित्र चीज़ है, जिसकी कोई हस्ती नहीं। उन ख़ुदा के बंदों को कभी यह खयाल नहीं होता कि वह गरीब भी उन क़िस्मत के मारो में से एक है, जिनकी छातियां ज़माने के तीरों ने छलनी कर दी हैं!

मैंने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

ज़मीन से नज़र ऊपर उठाये बिना उसने उत्तर दिया, "फवाद!"

"तुम किसके बेटे हो?" मैंने आगे पूछा, "तुम्हारे रिश्तेदार कहा हैं?"

"मैं रैहाना का बेटा हूं," उसने उत्तर दिया।

"और तुम्हारा बाप कहां है?"

जवाब में उसने इस तरह सिर हिला दिया, मानो वह बाप के माने ही न जानता हो।

"फवाद! तुम्हारी मां कहां है?"

"वह घर में बीमार पड़ी है।"

बच्चे के मुंह से निकले हुए ये संक्षिप्त शब्द मेरे कानों में पहुचे और मेरी भावनाओं ने अनोखी तस्वीरें और दु:खभरी परछाइयां बनाते हुए असलियत की कल्पना कर ली। मैं उसी क्षण समझ गया कि गरीब रैहाना, जिसकी कहानी मैने गांव के एक बूढ़े से सुनी थी, आजकल बेरूत में है और बीमार है; वह तरुण सुदरी, जो कल तक घाटी के पेड़ों में संतोष और निश्चिंतता का जीवन बिता रही थी, आज शहर मे है और दरिद्रता और बेबसी की ज़िदगी जी रही है; वह अनाथ लड़की, जिसने सुदर चरागाहों में गायें भैंसें चराते हुए अपनी तरुणाई का प्रारंभिक काल

प्रकृति की हथेलियों पर बिताया था, आज सड़ी हुई सभ्यता की बाढ़ में बहकर असफलता और दुर्भाग्य के ख़ूनी चंगुल का शिकार हो गई है।

मैं चुपचाप बैठा इन सारी बातों के बारे में सोच रहा था और वह बच्चा एक अजीब हैरानी की हालत में मुझ पर निगाह जमाये निश्चल खड़ा था, मानो अपनी पवित्र और अबोध आत्मा की आंखों से मेरे अंत:करण की बरबादी का दर्दनाक दृश्य देख रहा हो। जब उसने जाने का इरादा किया तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "मुझे अपनी मां के पास ले चलो, मैं उसे देखना चाहता हूं।"

वह चकित होकर चुपचाप मेरे आगे-आगे हो लिया। वह बार-बार मुड-मुड़कर देख रहा था, यह मालूम करने के लिए मैं उसके पीछे-पीछे आ भी रहा हूं या नहीं।

मैं उन गंदे गली-कूचों को पार कर रहा था, जहां का वायुमंडल मृत्यु की सांसों से बोझिल था, उन टूटे-फूटे मकानों के पास जा रहा था, जहां अंधेरे पर्दे में छिपकर बदमाश गुनाह किया करते हैं; उन चौराहों को पार कर रहा था, जिनके दाएं-बाएं काले सांपों की तरह बल खाती हुई सड़कें थीं। मुझ पर एक अज्ञात भय छाया हुआ था। वह लड़का मेरे आगे-आगे था, जिसके बचपन और मन की पवित्रता ने उसमें निडरता पैदा कर दी थी— एक ऐसी निडरता, जिसे वह व्यक्ति अनुभव ही नहीं कर सकता, जो उस शहर के बदमाशों और दुष्टों की चालबाज़ियों से परिचित हो, जिसे पौर्वात्य लोग 'शाम की दुलहिन' और 'बादशाहों के ताज का मोती' कहते हैं।

एक मुहल्ले के आख़िरी सिरे पर पहुंचकर लड़का एक छोटे-से मकान में दाखिल हुआ, जिसका सिर्फ़ एक टूटा-फूटा हिस्सा कालचक्र के आघातों से बच रहा था। उसके पीछे-पीछे मैं भी उस मकान में चला गया। हर क़दम पर मेरे दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी। अंत में मैं उस सील-भरे कमरे में पहुंचा, जिसमें सामान के नाम पर सिर्फ़ एक टूटा दीया था, जिसकी पीली रोशनी के तीर अंधेरे की छाती को छेद रहे थे, और एक टूटी हुई चारपाई थी, जिससे ग़रीबी और लाचारी ज़ाहिर हो रही थी। उस चारपाई पर एक स्त्री पड़ी हुई थी, उसका मुंह आंगन की ओर था, मानो उसके द्वारा ज़माने के जुल्म से वह बच रही थी, या फिर उसके पत्थरों में एक ऐसा दिल पा रही थी, जो मनुष्य के दिल से ज़्यादा नर्म और मुलायम था।

बच्चा उसके पास गया और 'मां' कहकर उसने उसे आवाज़ दी। उस स्त्री ने घबराकर आंखें खोल दीं और यह देखकर कि वह मेरी तरफ़ इशारा कर रहा है, वह अपने सड़े-गले लिहाफ़ में कांप उठी। एक ऐसी दर्दनाक आवाज़ में, जो आत्मिक व्यथा और कड़वी आहों से भरी हुई थी, उसने मेरी ओर देखकर कहा, "तुम क्या चाहते हो? क्या तुम इसलिए आये हो कि मेरी जिंदगी के आखिरी लम्हे ख़रीदकर उन्हें अपनी विषय वासना से कर दो? जाओ मेरे पास से चले जाओ

बाज़ार उन औरतों से भरा पड़ा है, जो कौड़ियों के मोल अपना शरीर और अपनी आत्मा बेचा करती हैं। अब मेरे पास कुछ है भी नहीं, जिसे मैं बेच सकूं, सिवा उन बचे-खुचे, टूटते हुए सांसों के, जिन्हें मौत जल्दी ही क़ब्र के आराम के बदले में खरीदेगी।''

मैं उसकी चारपाई के पास खड़ा हो गया। उसके इन शब्दों ने मेरे अंत:करण को अकथनीय व्यथा से भर दिया, इसलिए कि वे उसके दुर्भाग्य की संक्षिप्त कहानी कह रहे थे।

मैंने दु:खी स्वर में उससे कहा, ''रैहाना! मुझसे डरो नहीं। मैं तुम्हारे पास भूखे जानवर की हैसियत से नहीं, सहानुभूति रखने वाले इंसान की हैसियत से आया हूं। मैं लेबनानी हूं और एक अर्से तक उन घाटियों और उस गांव में रहा हूं, जो सनोवर के जंगल के पास है। क़िस्मत की मारी रैहाना, मुझसे तुम डरो मत!''

उसने मेरे ये शब्द सुने और वह जान गई कि वे उस आत्मा की गहराइयों से निकल रहे थे, जिसे उसके दु:ख के साथ हमदर्दी थी। वह अपने बिस्तर पर ऐसे कांप उठी, जिस तरह बिना पत्तों की टहनियां जाड़े की हवाओं के सामने कांपती हैं। उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया, जैसे अपने को उस याद से बचाना चाहती हो, जो अपनी मधुरता की दृष्टि से भयानक और अपनी सुंदरता की दृष्टि से कड़वी थी।

थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद, जो आहों से भरी थी, कांपते हुए कंधों में से उसका चेहरा दिखाई दिया और मैंने देखा कि उसकी धंसी हुई आंखें कमरे में खड़ी हुई एक अनुभूतिविहीन वस्तु पर जमी हुई हैं; सूखे होंठ निराशा से फड़क रहे हैं; गले में गहरी और टूटती हुई कराह के साथ मृत्यु की खरखराहट है। प्रार्थना और याचना से उभरती और टूटती हुई कराह के साथ कमज़ोरी और दु:ख से गिरती हुई आवाज़ में उसने कहा, ''तुम एक उपकारकर्ता और सहानुभूति रखने वाले की हैसियत से आये हो। अगर अपराध करने वालों पर उपकार करना अच्छी बात है और पापियों के साथ मेहरबानी से पेश आना नेकी है तो भगवान तुम्हें इसका पुण्य दे दें। मगर मैं प्रार्थना करती हूं कि तुम जहां से आये हो, उल्टे पांव वहीं वापस चले जाओ। तुम्हारा यहां ठहरना तुम्हारे लिए लज्जा और बदनामी का बायस बन जायेगा, और मेरी स्थिति के प्रति तुम्हारी यह सहानुभूति तुम्हें दुनिया की नज़रों में कलंकित कर देगी। जाओ, इससे पहले कि इस गंदे और अपवित्रता से भरे हुए कमरे में तुम्हें कोई देख ले, यहां से चले जाओ। इस गली से जाते समय अपने मुंह पर कपड़ा डाल लेना, वरना किसी आते-जाते की निगाह तुम पर पड़ जाएगी और तुम मुफ़्त में बदनाम हो जाओगे। वह दया और सहानुभूति, जो तुम्हारे हृदय में है, मुझे फिर से नेकचलन नहीं बना सकती। मेरे दोषों को नहीं मिटा सकती। मेरे दिल से मौत के ताक़तवर हाथ को नहीं हटा सकती। मुझे मेरे दुर्भाग्य और पाप ने इन

अंधेरी गहराइयों मे फेंक दिया है। भगवान के लिए तुम अपनी सहानुभूति के कारण इस गंदी नाली में न गिरो!''

कुछ रुककर उसने कहा—''मैं उस कोढ़ी की तरह हूं, जो क़ब्रिस्तान में बैठा हो। इसलिए तुम्हें चाहिए कि मेरे पास न आओ, वरना समाज तुम्हें अपमानित कर देगा। इस अक्षम्य अपराध के दंडस्वरूप तुम्हारे सारे सामाजिक अधिकार तुमसे छीन लिये जाएंगे और तुम कहीं मुंह दिखाने के लायक़ न रहोगे। जाओ, फौरन वापस चले जाओ और देखो, उन पवित्र घाटियों में मेरा नाम अपनी जबान पर न लाना, क्योंकि गडरिया अपने रेवड़ को रक्षा के लिए सक्रामक रोग से पीड़ित भेड को त्याग देता है। अगर मेरे बारे में तुमसे कोई पूछे भी तो कह देना कि रैहाना मर गई। इसके सिवा और कुछ मत कहना।''

उसने अपने बच्चे के छोटे-छोटे हाथ अपने हाथ में ले लिये और उन्हें दुःख-भरा चुंबन दिया। उसके बाद उसने एक आह भरी और कहने लगी, ''लोग मेरे बच्चे को अपमान और घृणा से देखेगे और कहेंगे, 'यह पाप का फल है। यह रैहाना वेश्या का बेटा है! यह बेहयाई की उपज है! यह हरामी है!' ऐसे बहुत से लोग है, जो इसके बारे में यही कुछ कहेंगे, इसलिए कि वे अंधे हैं, उन्हें दिखाई नहीं देता। वे मूर्ख हैं, जो नहीं जानते कि इसकी मां ने अपनी व्यथा और आंसुओं से इसके बचपन को नहलाया है। अपने दुर्भाग्य और दुर्दैव से इसके जीवन का प्रायश्चित कर दिया है।

''मैं मर जाऊंगी और गली के बच्चों में इसे अनाथ बनाकर छोड़ जाऊंगी। यह इस निर्दय जीवन में अकेला रह जायेगा। मैं इसके लिए कुछ न छोडूंगी, सिवाय भयावनी स्मृति के, जो इसे लज्जित करेगी, अगर यह डरपोक निकला, और इसका ख़ून खौलायेगी, अगर यह बहादुर और न्यायी साबित हुआ।

''अगर ज़माने ने इसका साथ दिया और यह शक्तिशाली युवक बन गया तो भगवान उस पुरुष के विरुद्ध इसकी सहायता करेगा, जिसने इसे और इसकी मां को ससार में अछूतों से भी बदतर बना दिया, और यदि यह मर गया, जीवन के जाल से इसने छुटकारा पा लिया, तो यह उस लोक में मुझे अपनी प्रतीक्षा करते हुए पायेगा, जहां चारों ओर प्रकाश-ही-प्रकाश और सुख-ही-सुख है।''

मैंने अपने हृदय के भावों को प्रकट करते हुए कहा, ''रैहाना, माना कि तुम कब्रिस्तान में बैठी हो, मगर फिर भी तुम कोढ़ी नहीं हो, माना कि जमाने ने तुम्हें नीचों के हवाले कर दिया है, फिर भी तुम नीच नहीं हो। शरीर की गंदगी आत्मा की पवित्रता को नहीं छू सकती, जिस प्रकार बर्फ़ की पर्तें ज़िंदा बीजों को नहीं मार सकतीं। यह जीवन है क्या? महज सुख-दुःख का खलिहान है जिसे दाना निकालने से पहले इसान की उम्र कुचल-कुचलकर रख देती है, परंतु अफसोस गेहूं की उन बालियो पर है, जो खलिहान से अलग पड़ी हैं! चींटियां उन्हें उठाकर ले जाती हैं, पछी चुग लेते हैं और वे किसान के घरों में नहीं पहुच पातीं

''तुम अत्याचार-पीड़ित हो, रैहाना! पर अत्याचारी नहीं हो। अत्याचारी वह नीच है, जो पैसे की रू से चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न हो, पर आत्मा की निगाह से अत्यत पतित है। तुम अत्याचार-पीड़ित हो, परंतु मनुष्य के लिए अत्याचार पीड़ित होना अत्याचारी होने से बेहतर है। भौतिक दुर्बलताओं का शिकार होना ऐसा शक्तिशाली होने से बेहतर है, जो अपने हाथों से जीवन के फूलों को मसल देता है, अपनी घृणित इच्छाओ से सुंदर भावनाओ को मिट्टी में मिला देता है।

''रैहाना। आत्मा एक सुनहरी कडी है, जो ईश्वरीय ज़ंजीर से टूटकर गिर पड़ी है। इस कड़ी को दहकती हुई आग की ज्वालाएं लपक लेती है और इसका रूप बदल देती हैं। इसका सारा सौंदर्य नष्ट कर देती हैं, लेकिन इस कडी के सोने को किसी दूसरी धातु में नहीं बदलतीं; बल्कि इसकी चमक में और बढ़ावा कर देती है। पर खेद उस सूखी लकड़ी पर है, जिसे आग की ज्वालाए जलाकर राख कर देती हैं और हवा उसकी राख को जंगल में उड़ा देती है।

''रैहाना! निःसंदेह तुम वह फूल हो, जो इंसानी शरीर में छिपे हुए जानवर के पावों तले रौंदा गया है, तुम्हें फ़ौलादी जूतों ने बेहरमी से कुचल डाला है, परंतु डर की कोई बात नहीं। तुम्हारी सुगंध, जो विधवाओं के शोक-विलाप, अनाथो की पुकार और ग़रीबों की आह के साथ आकाश की ओर जा रही है, दया और न्याय का झरना है। रैहाना, सब्र करो कि तुम रौंदा हुआ फूल हो, रौंदने वाला पाव नहीं।''

मैं बोल रहा था,और वह सुन रही थी। मैंने उसे जो तसल्ली दी थी, जो ढांढ़स बंधाया था, उससे उसका पीला चेहरा चमक उठा, जिस प्रकार डूबने वाले सूरज की सुदर किरणे बादलों को चमका देती हैं। उसने मुझे अपने पलंग के पास बैठ जाने का इशारा किया। मैं बैठ गया। मेरी निगाह उसके चेहरे पर जमी हुई थीं, जो उसकी दु:खी आत्मा के रहस्यों को प्रकट कर रहा था; उस व्यक्ति के मुंह पर केन्द्रित थी, जिसे मालूम था कि उसकी मृत्यु निकट है; उस नौजवान स्त्री के चेहरे को देख रही थीं, जिसे अपने फटे-पुराने बिस्तर के चारों ओर मौत के भयानक पांवों की चाप सुनाई दे रही थी; उस ठुकराई हुई औरत के मुंह को ताक रही थी जो कल तक लेबनान की सुहावनी घाटियों में शक्ति और जीवन से भरी-पूरी ज़िंदगी बसर कर रही थी, लेकिन आज बेजान पड़ी जीवन के बंधनों से मुक्त होने की प्रतीक्षा कर रही थी।

थोड़ी देर की स्तब्धता के बाद उसने अपनी बची-खुची शक्ति जमा की और वह इस तरह बोलने लगी कि आंसू उसके शब्दों के साथ-साथ निकलने लगे और उसकी शक्ति उसकी सांसों के साथ घुटने लगी, ''हां, मैं अत्याचार-पीड़ित हूं; उस हिंस्र पशु का शिकार हूं, जो आदमी में छिपा हुआ है; मैं पांव तले रौंदा हुआ फूल हूं। मैं झरने के किनारे बैठी थी कि एक अजनबी आदमी घोड़े पर सवार वहां आ गया उसने मुझसे प्यार भरी बातें कीं और बताया कि मैं सुदर हू और वह मुझसे

प्रेम करता है और जीवन-भर प्रेम करता रहेगा। उसने कहा कि जगल जगलियो से भरा पड़ा है और घाटियां पंछियों और गीदड़ों का घर है। उसके बाद वह मुझ पर झुका और अपनी छाती से चिपटाकर उसने मुझे प्यार किया। मैं उस वक्त तक चुबन के आनंद को नहीं जानती थी, इसलिए कि मैं एक ठुकराई हुई अनाथ लड़की थी। उसने मुझे घोड़े की पीठ पर अपने पीछे बिठा लिया और एक सुदर, पर तनहा मकान मे ले गया। वहा मै उसके साथ रहने लगी। वह मेरे लिए भाति- भांति के तोहफे लाता—रेशमी कपडे, बढिया सुगधें, खाने की स्वादिष्ट चीजें और कीमती शराबें। उसने यह सब कुछ किया—मुस्कराते हुए अपनी वासनाओं की गदगी और उद्देश्यों की पशुता को शब्दों की मधुरता और आकर्षक इशारों में छिपाते हुए— परतु जब मैंने अपने शरीर से उसकी वासनाओ का पेट भर दिया, अपनी आत्मा को अपमान और कलंक से बोझिल बना दिया तो वह मेरे प्रति लापरवाह हो गया। मेरे पेट ने भड़कती हुई आग की जीवित लपट छोड़कर, जो मेरे कलेजे से खुराक लेकर देखते- देखते बढने लगी, वह न मालूम कहा भाग गया। इस प्रकार मैं इस अंधेरे गढे मे आ फसी, जहा चारों ओर आक्रोश और विलाप का धुआ और दु:ख और क्लेश की कड़वाहट है। इस तरह मेरी जिदगी दो हिस्सों मे बंट गई—एक कमजोर और दर्दनाक हिस्सा और दूसरा छोटा हिस्सा, जो अनत वायुमंडल मे उड जाने के लिए रात की स्तब्धता में चिल्लाता था।

"वह निर्दयी मुझे और मेरे दूध-पीते बच्चे को उस सुनसान मकान में छोडकर चलता बना और हम दोनों भूख, सर्दी और अकेलेपन के कष्ट सहन करने लगे। आहों और विलापों के सिवाय हमारा न कोई मददगार था और न डर और धडकनों के सिवाय कोई हमसे बातचीत करने वाला ही था।

"अंत में उसके दोस्तो को मेरी दुर्दशा का पता चला तो वे मेरे पास आये, पर उनमें से हरेक अपनी दौलत से मेरी इज्ज़त ख़रीदना चाहता था। मेरा शरीर लेकर उसके बदले मे मुझे रोटी देना चाहता था।

"आह! कितनी बार मैंने चाहा कि गला घोंटकर अपना काम तमाम कर दू, पर न कर सकी, क्योंकि मैं अकेली नहीं थी। अब मेरे जीवन में मेरा बच्चा भी शरीक था, जिसे भगवान ने परलोक के आनंद-भवनो से इस संसार में धकेल दिया था—बिलकुल उसी तरह, जैसे मुझे पवित्र जीवन से दूर करके इस नरक की गहराइयों मे फेंक दिया था।

"मगर अब वह घड़ी पास आ गई है, जिसका इंतज़ार मै कई दिनों से कर रही थी। मेरे जीवन का स्वामी, वह मृत्युदूत, लंबे वियोग के बाद मुझे लेने आया है, ताकि मैं उसके नर्म और मुलायम बिस्तर पर आराम करूं।"

एक गहरी ख़ामोशी के बाद, जो उड़ने वाली आत्माओं के स्पर्श के समान थी, उसने अपनी आखे खोलीं जिन पर मृत्यु की छाया पड़ी थी और वह धीरे धीरे

कहने लगी, ''हे अदृश्य न्याय-देवता, तू जो इन भयानक घटनाओं के पीछे छिपा हुआ है, तू ही मेरी यात्रिक आत्मा की पुकार और मंदगति हृदय की आवाज सुनने वाला है। तुझसे, केवल तुझी से, मैं प्रार्थना करती हूं कि तू मुझ पर दया कर, अपने दायें हाथ से मेरे बच्चे का हाथ पकड और बायें हाथ से मेरी आत्मा का उपहार स्वीकार कर!''

उसकी शक्ति समाप्त होने लगी। उसमें कमज़ोरी और बढ़ गई। उसने दु:ख और व्यथा से भरी निगाह अपने बच्चे पर डाली और उसकी आंखें धीरे-धीरे बंद होने लगीं। बड़े करुण स्वर में, जो स्तब्धता के अधिक निकट था, उसने कहा, ''ऐ आकाश में रहने वाले! तेरा नाम हमेशा पवित्र रहे! तेरा भेजा हुआ मृत्युदूत आ गया है। तेरी इच्छा जिस प्रकार आकाश में सर्वोपरि है, उसी प्रकार वह पृथ्वी पर भी रहे हे भगवान.. हमारे अपराधों को. .क्षमा करना''. . !

उसकी आवाज बद हो गई, पर होंठ थोड़ी देर तक हिलते रहे। फिर होंठो के बंद होने के साथ उसके शरीर की सारी क्रियाएं ख़त्म हो गई। उसके बाद उसके शरीर मे कंपकंपी पैदा हुई और मुंह से हलकी-सी आह निकली। चेहरे पर पीलापन छा गया और आत्मा उड़ गई, परंतु उसकी आंखें एक काल्पनिक वस्तु पर जमी रहीं।

□□

सुबह को रैहाना की लाश लकड़ी के एक ताबूत में रखी गई और फ़कीरो के कधों पर शहर से दूर एक मैदान में पहुंचाकर दफना दी गई। पादरी ने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ने से इन्कार कर दिया और लोगों ने उसकी लाश को कब्रिस्तान मे दफ़नाने की इजाजत न दी, जहां सलीब कब्रों की रक्षा करता है। उस सुदूर मैदान में उसके जनाजे के साथ कोई नहीं गया, सिवा उसके बेटे और एक नौजवान के, जिसे संसार की विपत्तियों ने सहानुभूति का पाठ पढ़ाया था।

□□

2. नई दुलहिन

दूल्हा–दुलहिन मन्दिर से निकले। उनके पीछे–पीछे उनको बधाइयां देने वाले प्रसन्न और आनन्दित लोग थे और आगे–आगे बड़ी–बड़ी मोमबत्तियां और फानूस थे। नवयुवक ख़ुशी के गीत गा रहे थे और कुमारिकाएं मंगल–गान गा रही थीं।

यह जुलूस दूल्हे के मकान पर पहुंचा, जो क़ीमती गलीचों और भड़कीले सामान से सजा हुआ और सुगंधों से महक रहा था। दूल्हा–दुलहिन एक ऊंचे तख्त पर बैठ गए और मेहमान रेशमी सोफ़ों और मख़मली कुरसियों पर विराजमान हो गए, यहा तक कि सारा बड़ा हॉल इंसानों से भर गया।

नौकर शराब की सुराहियां ले आये और शराब के दौर चलने लगे। प्यालों की झकार और आनद के स्वर मस्ती की दुनिया पैदा करने लगे। इसके बाद गाने वाले आ गए और अपने जादू–भरे संगीत से लोगों को मुग्ध करने लगे। उनके मीठे सुरो और सारंगी की रसीली आवाज़ से हृदयो में ख़ुशी की लहरें उछलने लगीं। तबले की थाप और श्रोताओं की दाद अलग ही बहार दिखाने लगी।

इसके बाद नाचने वाली औरतें उठीं और अपने नृत्य और संगीत से सुनने वालों को मस्त करने लगीं। उनके लचकदार शरीर इस तरह हिल रहे थे, जिस तरह सुगधित वायु के झोंकों से पेड़ों की नरम शाखाएं झूमती हैं। उनके कपड़े इस तरह उड़ रहे थे,, मानो सफ़ेद बादल चांद को किरणों से खेल रहे हों। आखें उनको घूर रही थीं, माथे उनको सलाम कर रहे थे, युवकों की आत्माए उनको गले लगा रही थीं और बूढे उनके रूप और सौंदर्य से आनदित हो रहे थे।

शराब का दौर बढ़ गया और मेहमान अपनी इच्छाओं को शराब में डुबोने लगे। गति और हलचल बढ़ गई, आवाजें ऊंची हो गई। चारों ओर मनमानी होने लगी, मस्तिष्क विचलित होने लगे। इद्रियो में गरमी पैदा हो गई। दिल बेचैन हो उठे और घर–का–घर तार टूटी हुई सारगी की तरह हो गया, जिसे किसी पागल के हाथ मे दे दिया गया हो और वह जोर से मिजराब मारकर उससे संगीत पैदा करने की कोशिश कर रहा हो

यहां एक नौजवान है, जो अपनी प्रेयसी के प्रेम में डूबा हुआ बैठा है। वहां एक नवयुवक सौंदर्य और प्रीति की कहानी सुना रहा है। एक तरफ एक बूढ़ा जाम-पर-जाम चढ़ाकर गाने वाली औरतों से गजल की फरमाइश कर रहा है, जिससे उसकी जवानी की याद ताजी हो जाये। उस छज्जे पर एक औरत बैठी उस शख्स को गमजा दिखा रही है, जो उसकी तरफ प्रणय की दृष्टि से घूर रहा है। उस कोने मे एक बड़ी उम्र की महिला बैठी है, जिसके सिर के बाल सफेद हो रहे है। वह मेहमान लडकियों मे से अपने लड़के के लिए किसी दुलहिन का चुनाव कर रही है। उस खिडकी के पास एक विवाहित स्त्री बैठी है, जिसे उसके पति के शराब के नशे मे चूर हो जाने से अपने परिचितों से बातचीत करने की फुरसत मिल गई है गर्ज कि सारे-के-सारे लोग शराब और गजल के सागर मे डूबे हुए थे और खुशी और मस्ती के आलम मे दुनिया और उसकी सारी चीजों से गाफिल, बीते हुए दु खों और आने वाली चिंताओं से लापरवाह, वर्तमान के आनद में खोये हुए थे।

यह सिलसिला जारी था और सुंदर नववधू इस दृश्य को अपनी बड़ी बड़ी आखों से इस तरह देख रही थी, जिस तरह निराश कैदी क़ैदखाने की काली दीवारों पर नजर डालता है। उसकी निगाहें बार-बार हॉल के एक कोने पर पड़ रही थी जिसमें बीस साल की उम्र वाला एक नौजवान आनंदित मेहमानो से इस तरह अलहदा बैठा था, जैसे कोई घायल पछी अपने झुंड से जुदा हो गया हो। उसने अपना हाथ अपनी छाती पर इस तरह रखा था, मानो उसका दिल बाहर निकलना चाहता हो और उसे हॉल का वायुमंडल किसी अप्रिय वस्तु से घिरा हुआ नज़र आ रहा था। ऐसा मालूम होता था कि उसकी आत्मा उसके शरीर से अलग हो चुकी है और अधेरे के विस्तार मे उड़ रही है।

आधी रात बीत गई और मजलिस की खुशी की किलकारियां बढती गई, यहा तक कि गड़बड मच गई। सब लोग शराब के नशे मे चूर हो गए। उनकी जुबाने लडखडाने लगीं, बदसूरत दूल्हा अपनी जगह से उठकर मेहमानों के बीच में फिरने लगा। वह भी नशे के चगुल मे फंस गया था।

इसी क्षण दुलहिन ने एक लडकी को इशारे से बुलाया और जब वह करीब आकर उसके पास बैठ गई तो दुलहिन ने इधर-उधर निगाह दौड़ाई, मानो वह उस लडकी से कोई रहस्य की बात कहना चाहती हो। इसके बाद उसने कांपती हुई आवाज में लड़की से कानाफूसी की, ''ऐ मेरी बहन! मैं तुम्हें उस प्रीति की कसम दिलाती हूं, जो मेरे और तुम्हारे दरमियान बचपन से है। मैं तुम्हें उस चीज की कसम दिलाती हूं, जो तुम्हें इस दुनिया में सबसे प्यारी है। मैं तुम्हें तुम्हारे हृदय के रहस्यो की सौगंध दिलाती हूं, मै तुम्हें उस प्रेम की कसम दिलाती हूं, जिसमे हमारी आत्मा बधी हुई है और किरणें पैदा कर रही है। मैं तुम्हें तुम्हारे दिल की ख़ुशी और अपने दिल के दर्द की कसम दिलाकर प्रार्थना करती हू कि तुम अभी सलीम के पास

जाओ और उससे कहो कि वह छुपकर बाग में जाये और चिनार के पेड के नीचे मेरी राह देखे। ऐ सोसन! मेरी ओर से तुम उससे अनुरोध करो और किसी तरह से मेरी बात उससे मनवा लो। उसे बीते हुए दिनों की याद दिलाओ, उसे प्रीति की कसम दिलाओ और कहो कि वह बेचारी रो-रोकर अंधी हुई जाती है। वह चाहती है कि अनंत अंधेरे में समा जाने से पहले वह अपना हृदय खोलकर तुम्हारे सामने रख दे। और कहो कि वह अभागिन नरक की आग में जलने से पहले तुम्हारी आखों की रोशनी बढ़ाना चाहती है, और कहो कि वह अपराधी है और चाहती है कि अपने दोषों को स्वीकार करे और तुमसे क्षमा मांगे। जल्दी करो मेरी बहन! और मेरी तरफ से उसके सामने रो-धोकर उससे प्रार्थना करो। इन जगली सूअरो की निगाहों से न डरो, क्योंकि ये सब शराब के नशे में चूर हैं और इनके कान और आखे बद हो चुके हैं।''

सोसन दुलहिन के पास से उठी और सलीम के नजदीक जा बैठी। वह अकेला बैठा था। वह उसके कान में प्रेम से बाते करने लगी, जो उसके चेहरे से टपका पड़ता था। सलीम सिर झुकाये उसकी बातें सुनता रहा। जब सोसन की बात खत्म हुई तब सलीम ने उसकी ओर दुःखभरी निगाह से देखा और उत्तर दिया, ''बहुत अच्छा, मैं चिनार के पेड़ के नीचे उसका इंतजार करूंगा।''

इतना कहकर वह अपनी जगह से उठा और बाग़ की ओर निकल गया। कुछ मिनट के बाद दुलहिन भी उठी और मेहमानों की आंख बचाकर अधेरे के परदे मे बाहर निकल गई। वह मुड-मुड़कर पीछे देखती जाती थी और उस हिरनी की तरह भागती जा रही थी, जो भेड़ियों के झुंड से बच निकली हो। आख़िर वह चिनार के पेड़ों के नीचे पहुंच गई, जहां वह नवयुवक खड़ा था। जब उसने अपने आपको उसके पास पाया तो वह उससे लिपट गई और उसकी आंखों में आंखें डालकर आसू बहाती हुई दुःख भरे शब्दों में बोली, ''सुनो, ऐ मेरे प्यारे, ध्यान से सुनो! मै अपनी मूर्खता और जल्दबाज़ी पर बहुत लज्जित हूं। ऐ सलीम! शर्म ने मेरे दिल को कुचल डाला है। मैं तुमसे मुहब्बत करती हूं, तुम्हारे सिवा किसी से मुहब्बत नही करती और आखिरी दम तक तुम्हारे अलावा किसी से मुहब्बत नहीं करूगी। लोगो ने मुझसे कहा कि तुमने मुझे भुला दिया, मुझे छोड़ दिया। किसी दूसरी लड़की की बात से मेरे दिल को कड़वा बना दिया। उन्होंने मेरा दिल जला दिया और अपनी झूठी बातों से मुझे परेशान कर दिया। उन्होंने मुझे उस लडकी के बारे में सब कुछ बता दिया, जिसके प्रेम में पड़कर तुमने मुझसे नफरत की और मुझे छोड़ दिया। उस डायन ने मुझ पर जुल्म किया और मेरी मुहब्बत को तबाह कर दिया। और तब मैं एक आदमी को अपना पति बनाने पर राज़ी हुई। लेकिन ऐ सलीम! मेरा पति तुम्हारे सिवा कोई नहीं, और अब— और अब— मेरी आंखों से परदे हट गए हैं। इसलिए तुम्हारे पास आई हू कि अपने आपको तुम्हारे पहलू में डाल दू दुनिया की कोई

ताकत उस आदमी के पहलू में नहीं ले जा सकती, जिसके क़ब्ज़े में मुझे जबरन दे दिया गया है। मैंने उस आदमी को, जिसे मैंने झूठमूठ का पति बनाया, उन फूलों को जो मुझे मौलवी ने दे दिये, उस शरीयत को, जिसे मैंने रूढ़ि के बन्धनों से लाचार होकर मंजूर किया और दूसरी सभी चीजों को उसी मकान में छोड़ दिया, जो शराबियो से भरा हुआ है। मैं तुम्हारे पास आई हूं, ताकि तुम्हारे साथ किसी दूसरे देश मे चली जाऊं। हम दुनिया के किसी और हिस्से में चलें, भूतों की बस्ती में चलें, मौत के कब्जे में चलें। आओ सलीम! जल्दी करो, रात के अंधेरे परदे में हम इस मकान से निकल जायें। समुद्र के किनारे पर जायें और जहाज पर सवार होकर दूर किसी ऊजड़ और अनजान शहर को चले जायें। आओ, अभी चलें! सुबह होने से पहले ही हम दुश्मनों के चंगुल से निकल भागें। देखो-देखो, ये हैं मेरी सोने की चूड़ियां, ये है हार, ये हैं कीमती अंगूठियां और ये हैं जवाहरात! ये सब चीजें हमारी आगे की ज़िदगी के लिए काफ़ी हैं और हम अमीरों की तरह रह सकेंगे...। अरे! तुम बोलते क्यों नहीं, सलीम? मेरी तरफ़ देखते क्यों नहीं? मुझे चूमते क्यों नहीं? क्या तुम मेरा रोना-धोना और मेरे दिल का विलाप नहीं सुनते? क्या तुम यकीन नहीं करते कि मैं अपने दूल्हे और अपने मां-बाप को छोडकर नई दुलहिन की पोशाक में ही तुम्हारे साथ भाग जाने के लिए यहां आई हूं? बोलो-बोलो, ये क्षण हीरो के कणों से भी ज्यादा अनमोल और बादशाहों के ताजों से भी ज्यादा अहम हैं।''

दुलहिन बातें कर रही थी। उसकी आवाज़ में एक ऐसा गीत भरा हुआ था, जो जिंदगी की बुराइयो से ज्यादा क्लेश-भरा, मौत की फ़रियाद से ज्यादा दर्दनाक और सागर की लहरों के ज्वार से ज़्यादा गहरा था। यह गीत उसकी आत्मा को आशा और निराशा, सुख और दु:ख, ख़ुशी और हैरानी के बीच झुला रहा था।

नौजवान उसकी बातें सुन रहा था। उसके मन में प्रीति और सज्जनता के बीच कशमकश चल रही थी— वह प्रीति, जो कठिनाइयों को आसान बना देती है और अंधेरे को रोशनी में बदल देती है; वह सज्जनता, जो मनुष्य के सामने आकर उसे उसकी इच्छाओं से रोकती है; वह प्रीति, जिसे भगवान ने दिल में उतारा है और वह सज्जनता, जो दिमाग से संबंध रखती है।

कुछ देर तक वह ख़ामोशी के साथ उन अंधेरे दिनों की शक्ल बनाता रहा, जिनमें राष्ट्र उठने और गिरने के दरमियान कशमकश करते हैं। फिर उसने सिर उठाया। उसकी वासनाओं पर सज्जनता विजय पा चुकी थी। उसने उस डरपोक और बेचैन लड़की की ओर देखा और कहा, ''ऐ औरत! जा, अपने पति के पहलू में जा, कुदरत को ऐसा ही मंजूर है। जल्दी से अपनी ख़ुशी की दुनिया में जा, इसके पहले कि दुश्मनों की नजरें तुम्हें देख पाएं और लोग कहें कि दुलहिन ने विवाह की पहली रात को ही बेईमानी की, जिस तरह उसके मुरब्बी ने विरह के दिनों में उससे बेवफाई दिखाई

ये शब्द सुनकर दुलहिन काप उठी और इस तरह बेचैन हो गई जिस तरह कुम्हलाया हुआ फूल हवा के झोको मे परेशान हो जाता है फिर दर्दभरी आवाज से बोली, ''जब तक मुझमें आख़िरी सांस बाक़ी है, मैं उस मकान में वापस नहीं जाऊंगी, जहां से मैं हमेशा के लिए निकल आई हूं। मैंने उसे और वहां की हर चीज को इस तरह छोड़ दिया है, जिस तरह क़ैदी क़ैदखाने से भाग खड़ा होता है। तुम मुझे अपने-आप से दूर न हटाओ और यह न कहो कि मैं बेईमान हूं, क्योंकि वह मुहब्बत, जिसने मेरी आत्मा को तुम्हारी आत्मा के साथ जोड़ दिया है, उस मौलवी के हाथ से बहुत ज्यादा मज़बूत है, जिसने मेरा जिस्म दूल्हे के कब्जे में कर दिया। आओ, मुझे अपनी उन बाहों को अपने गले में डालने दो, जिन्हें कोई ताक़त छुडा न सके। आओ, हम इस तरह मिल जाएं कि हमें मौत भी एक- दूसरे से जुदा न कर सके।''

नौजवान ने बडे जोर के साथ अपने गले को उसकी बांहों से छुड़ाकर कहा, ''मुझसे दूर हो जा, ऐ औरत! मैंने तुम्हे छोड़ दिया .छोड़ दिया। मैंने तुमसे नफ़रत की और किसी दूसरी से मुहब्बत पैदा कर ली। लोग गलत नहीं कहते। क्या तुम्हें सुनाई देता है, मैं क्या कह रहा हूं? मैंने तुम्हें इस हद तक छोड़ दिया कि मैं तुम्हे भूल गया। मैंने इस हद तक नफरत की कि तुम्हारी शक्ल से बेज़ार हो गया। मुझसे दूर हट जा और मुझे अपनी राह जाने दे। तू अपने पति के पास वापस चली जा और उसकी वफ़ादार बीवी बन।''

दुलहिन ने चिल्लाकर कहा, ''नहीं-नहीं! मैं तुम्हारी बातों का यकीन नहीं कर सकती। तुम मुझसे मुहब्बत करते थे। मैंने तुम्हारी आखों में मुहब्बत देखी थी और जब कभी तुम्हारे जिस्म को छुआ था, तो मानो मुहब्बत को छुआ था। तुम मुझसे मुहब्बत करते हो, मुहब्बत करते हो, मुहब्बत करते हो, जिस तरह मैं तुमसे मुहब्बत करती हू। मैं इस जगह से तुम्हारे बिना नहीं हटूंगी और उस मकान में हरगिज नहीं जाऊंगी। मेरा इरादा पक्का है और मैं तुम्हारे पास इसलिए आई हू कि किसी दूसरे मुल्क में चली जाऊं। इसलिए चलो मेरे आगे। अगर नहीं तो हाथ उठाओ और मेरा खून कर डालो।''

नौजवान ने पहले से ऊंची आवाज़ में कहा, ''ऐ औरत! मुझे छोड़ दे, वरना मैं जोर-ज़ोर से चिल्लाकर उन मेहमानों को यहां जमा कर लूंगा जो तुम्हारी शादी की खुशी मनाने के लिए आए हुए हैं। फिर क्या होगा! वे तुम्हारे इस गंदे बरताव को देखकर तुम्हें बुरा-भला कहेंगे। फिर इस बात को भी तो सोचो कि वह औरत भी तुम्हारे सामने खड़ी होगी और तुम्हारी हार और अपनी जीत पर मुंह बनाकर मुस्कराएगी।''

यह कहकर नौजवान ने उसकी भुजाओं को पकड़ लिया ताकि अपने आपको उनसे छुड़ाए। दुलहिन के चेहरे का रंग बदल गया। उसकी आंखें लाल हो गईं, उसकी मुहब्बत और बेबसी गुस्से और बेरहमी में बदल गई उसने चिल्लाकर कहा

"देखती हूं वह कौन है, जो मेरे बाद तुम्हारी मुहब्बत से फ़ायदा उठाती है और मेरे दिल के सिवा कौन-सा दिल है, जो तुम्हारे होंठों के चुम्बन से सुखी होता है।"

यह कहकर उसने कपड़ों में से एक पानीदार खंजर निकाला और बिजली की-सी तेज़ी के साथ उस नौजवान की छाती में भोंक दिया। वह इस तरह जमीन पर गिरा, जैसे आंधी से टूटी हुई पेड़ की डाली। दुलहिन उसके पास हाथ में ख़ंजर लिए खड़ी थी। उस खंजर से ख़ून टपक रहा था। नौजवान ने आंखें खोलीं, जो मौत की छाया में पहुंच रही थी। उसके होंठ हिलने लगे और उनमें से ये शब्द धीमी आवाज़ में निकले, "ए मेरी जान! अब मेरे पास आओ! मेरे करीब आओ और मुझे छोडकर न जाओ। जिन्दगी मौत से कमजोर है और मौत मुहब्बत से कमजोर है। सुनो, अपने बारातियों के खुशी के ठहाके सुनो! शराब के प्यालों की झनकार सुनो। तुमने मुझे ठहाकों और इन झनकारों की बेरहमी से निजात दिलाई। लाओ मैं उस हाथ को चूमूं, जिसने मेरे बंधनों को तोड़ दिया। तुम मेरे होंठों को चूमो, जिन्होंने तुमसे झूठ कहा और मेरे दिल के राज को छिपाए रखा। मेरी आंखों को अपनी उंगलियों से बंद कर दो, जो मेरे खून में सनी हुई हैं और जब मेरी रूह जिस्म के पिंजड़े में से उड जाये तो ख़ंजर को मेरी बगल में रख देना और उन लोगों से कहना कि इस आदमी ने मायूसी और हसद की वजह से खुदकुशी कर ली है। मैं तुम्हारा ही आशिक था और तुम्हारे सिवा किसी से मुहब्बत नहीं करता था। लेकिन मेरे दिल की सज्जनता और नेकी ने मुझे इजाज़त नहीं दी कि तुम्हारे साथ शादी की रात को भाग निकलूं। ए मेरी जान! इससे पहले कि लोग मेरी लाश को देखें, मुझे चुम्बन दो, मुझे चूमो, मूझे चूमो!"

इतना कहकर उसने अपने बदनाम दिल पर हाथ रखा और उसकी गरदन मुड़ गई। उसकी रूह उड़ गई।

दुलहिन ने अपना सिर उठाया, मकान की तरफ़ निगाह दौड़ाई और चीख़-पुकार करने लगी, "आओ लोगो, और देखो! यह है दूल्हा और यह है दुलहिन। दौड़ो, ताकि मैं तुम्हें नरम-नरम बिस्तर दिखाऊं। जो सो रहा है, उसे जगाओ और जो बेहोश है, उसे होश में लाओ। सब-के-सब आओ, ताकि मैं तुम्हें मुहब्बत, जिंदगी और मौत का राज़ खोलकर दिखाऊं।"

दुलहिन की पुकार उस घर के कोने-कोने में पहुंच गई और महफ़िल में ख़ुशी से झूमते लोगों के कानों में गूंज उठी। उनकी रूहें कांप उठीं। यह सोचकर वे एक पल रुक गए कि शायद उनके कान उन्हें धोखा दे रहे हैं। लेकिन उसके बाद वे मकान के दरवाज़ों से निकल-निकल कर जल्दी से भाग चले। वे इधर-उधर तलाश करने वाली नजरों से देखने लगे। शीघ्र ही उनकी निगाहें लाश और दुलहिन पर पड़ीं। वह नजारा देखकर वे डर के मारे पीछे की तरफ भागे क्योंकि उस खूनी नज़ारे को देखने की हिम्मत किसी मे भी नहीं थी जहा मुर्दे की छाती से ख़ून बह

रहा था और दुलहिन के हाथ में ख़ंजर चमक रहा था। उनकी ज़बानें बंद हो गईं और जिस्मों के अंदर रूहें जम गईं।

दुलहिन ने उनकी तरफ़ देखा। उसका चेहरा दुःख और डर से स्याह हो रहा था। उसने चिल्लाकर कहा, "आगे आओ, ऐ डरपोको! मौत के ख़याल से मत डरो! कांपो मत और इस ख़ंजर से मत घबराओ, क्योंकि यह पाक हथियार है, जो तुम्हारे गंदे जिस्म को और अंधेरे दिलों को नहीं छू सकता। देखो इस नौजवान को, जिसने शादी की पोशाक पहन ली है। यह मेरा मुरब्बी है और इसको मैंने इसलिए मार डाला कि यह मेरा मुरब्बी है। यह दूल्हा है और मैं दुलहिन हूं। हम राह ढूंढ़ते थे, लेकिन नाकामयाब रहे, क्योंकि तुम्हारी मूढ़ताओं और बंधनों ने हमारे लिए जिंदगी की राहें बंद कर दी थीं। आओ, कायर और कमज़ोर इन्सानो! देखो, ताकि तुम्हें हमारे चेहरों से ख़ुदा का नूर नज़र आये। सुनो, ताकि हमारे दिल से तुम्हारे कानों में फ़रियाद पहुंचे। वह डायन औरत कहां है, जिसने मेरे मुरब्बी के बारे में मुझसे यह कहा कि वह उसकी मुहब्बत में पड़ा है, उसने मुझे छोड़ दिया है और मुझे भूल चुका है। जब मौलवी ने अपना हाथ मेरे और मंगेतर के सिर पर उठाया होगा, तब उस बदमाश औरत को यह शक हो गया होगा कि उसकी फतह हुई। लेकिन वह जहन्नुमी नागिन है कहां? मैं उसे दावत देती हूं कि वह क़रीब आये और देखे कि उसने तुम लोगों को मेरे मुरब्बी की शादी की ख़ुशियां मनाने के लिए किस तरह इकट्ठा किया है—हां, मेरे मुरब्बी की शादी, और उस आदमी की शादी नहीं, जिसे मैंने अपना पति बनाया है।

"तुम मेरी बातों को नहीं समझते, लेकिन तुम अपने बाल-बच्चों को बताओगे कि एक औरत ने अपने मुरब्बी को अपने ब्याह की रात क़त्ल कर दिया। तुम मेरा ज़िक्र करोगे और अपने क़सूरवार मन से मुझे बुरा-भला कहोगे, लेकिन तुम्हारे पोते मुझे ही बधाइयां देंगे।

"और ऐ मूर्ख! तुमने झूठ, ढोंग और फ़रेब से मुझे अपनी बीवी बनाना चाहा। तुम उस जाति के नाश को देखो, जो अत्याचारों में रोशनी ढूंढ़ती है, जो पत्थर से पानी निकालने की उम्मीद रखती है और रेगिस्तान में फूल उगाने की इच्छुक है। तुम उन बस्तियों को देखो, जो अपने आपको इस तरह मूर्खता के हवाले कर चुकी हैं, जिस तरह एक अंधा अपना हाथ दूसरे अंधे के हाथ में दे देता है। तुम उस ताकत के पुतले हो, जो हारों और चूड़ियों के लिए गरदनें और बांहें काटती हैं। मैं तुम्हे माफ़ करती हूं, क्योंकि ख़ुश रूहें इस दुनिया से कूच करने से पहले सबके गुनाह माफ कर दिया करती हैं।"

इतना कहकर दुलहिन ने ख़ंजर ऊंचा किया और हंसते हुए उसे अपनी छाती में भोंक लिया।

□□

10. दोस्त की वापसी

अभी रात नहीं हुई थी कि दुश्मन हार खा गया। उसकी पीठ पर तलवार और भाले के जख्मो के निशान थे। विजय पाने वाली सेना गर्व का झंडा फहराती हुई वादी की पथरीली ज़मीन पर शोर मचाते हुए घोड़ों की टापों की आवाज़ के साथ ~~त और खुशी के गीत गाती हुई वापस लौटी।

दूर क्षितिज पर चाद निकल रहा था और तब वह लश्कर एक टीले पर चढा। वह टीला ऐसे दिखाई देने लगा, जैसे वह कौम की उठती हुई आवाजों के साथ आसमान पर चढने लगा हो। उन टीलों के दरमियान धान के खेत ऐसे नज़र आने लगे, मानो वे लेबनान की छाती पर बीती हुई पीढ़ियों की लगाई हुई शराफ़त की मुहरें हो।

चाद की किरणें लश्कर के चमकते हुए हथियारों पर पड़ रही थीं। दूर-दूर के पहाड उसके नारों का जवाब दे रहे थे और वह चला जा रहा था। जब लश्कर पहाड़ की चोटी पर पहुंचा तो रेतीली घाटियों से एक घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ ने उसको वहीं ठहरा दिया।

ऐसा मालूम होता था कि वह घोड़ा उस लश्कर का स्वागत कर रहा हो। उसका हाल मालूम करने के लिए लश्कर घोड़े के पास पहुंचा। वहां लश्कर वालों ने देखा कि मिट्टी और ख़ून से लथपथ एक लाश पड़ी हुई है।

सेना का सेनापति चिल्लाया, "मुझे इसकी तलवार दिखाओ, ताकि मैं पहचान सकू कि यह कौन है?"

सेना के कुछ सवार घोड़े से उतरे और लाश के चारों ओर खड़े होकर उसे टटोलने लगे।

थोडी देर के बाद एक सवार सरदार के पास भर्राई हुई आवाज में कहने लगा, "हुजूर, उसकी ठडी उंगलियां तलवार की मूठ पर जमी हुई हैं। उन उंगलियों से तलवार छीन लेना बहुत मुश्किल है।"

दूसरे ने कहा "उसकी तलवार की धार ख़ून के म्यान में छिपी हुई है।"
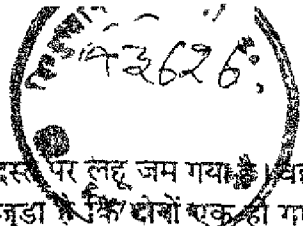
तीसरे ने कहा, "हथेली और तलवार के दस्ते पर लहू जम गया है। यह दस्ता कलाई के साथ भी ख़ून से इतनी मजबूती से जुड़ा है कि दोनों एक ही गए हैं।"

तब सरदार घोड़े से उतरा और यह कहता हुआ मृत व्यक्ति के पास पहुंचा, "इसका सिर उठा लो ताकि चांद की रोशनी में उसका चेहरा हम देख सकें।"

फौज के सिपाहियों ने जल्दी से उसका सिर ऊपर उठाया। मौत के पर्दे के पीछे से मृतक का चेहरा दिखाई दिया। वीरता और बहादुरी के चिह्न अब तक उसमें साफ नज़र आ रहे थे।

यह एक ऐसे घुड़सवार का चेहरा था, जो घटनाओं की भाषा में अपनी बहादुरी की कहानियां सुना रहा था। उस पर ख़ुशी और अफसोस के निशान एक ही साथ दिखाई दे रहे थे।

यह ऐसा चेहरा था, जो दुश्मन को गुस्से में और मौत से मुस्कराता हुआ मिला था।

यह एक लेबनानी बहादुर का चेहरा था, जो आज की लड़ाई में शरीक रहा और जिसने विजय के चिह्न अपनी आंखों से देखे थे। मगर मौत ने उसे इतना भी अवसर नहीं दिया कि वह अपने साथियों से मिलकर विजय की ख़ुशियां मनाता।

जब उन्होंने उसका नक़ाब उतारा और उसके पीले चेहरे से धूल पोंछ डाली तो सरदार घबराहट और तकलीफ़ से चीख़ते हुए बोला, "आह! यह तो इब्न उल साबी है।"

लश्कर के तमाम सिपाही भी यह सुनकर आहें भरने लगे।

थोड़ी देर बाद सब ख़ामोश हो गए और वहां शांति छा गई। ऐसा मालूम होता था कि जीत की शराब का नशा उन बदमस्त सिपाहियों के सिर से उतर गया है और उन्हें अब इस बात का होश आया है कि लड़ाई में हासिल की हुई तमाम कामयाबी इस एक बहादुर की जान के मुक़ाबले में कोई क़ीमत नहीं रखती।

इस तथ्य को समझ लेने के बाद उनकी ज़बानों पर मुहर-सी लग गई और वे पत्थर के बुत बने खड़े-के-खड़े रह गए।

बहादुर और निर्भीक पुरुषों के दिलों पर मौत का यही असर होता है। मृत्यु का दृश्य देखकर रोना-पीटना औरतों का और चीखना-चिल्लाना बच्चों का काम है। हाथ में तलवार लेकर धर्म के नाम पर लड़ने के लिए निकले हुए मर्दों के चेहरों पर मौत को देखकर आतंक, रौब और ख़ामोशी ऐसे छा जाती है, जैसे कोई बाज़ अपने शिकार की गरदन दबा लेता है।

ऐसी ख़ामोशी आंख के आंसुओं को ख़ुश्क और ज़बान से निकलने वाली फरियाद को बंद कर देती है, और इसीलिए यह मुसीबत और ज्यादा भयानक और दर्दनाक सूरत इख्तियार कर लेती है।

ऐसी ख़ामोशी हवा में उड़ने वाली आत्माओं को पहाड़ की चोटियों से गहरे गढ़ों में धकेल देती है।

और ऐसी ख़ामोशी अक्सर आने वाले तूफ़ानों का पूर्व लक्षण हुआ करती है।

सिपाही मृतक के कपड़े उतारकर देखने लगे कि शरीर का कौन-सा हिस्सा मौत का निशाना बना है। नोकदार भाले के ज़ख़्म मृतक की छाती पर ऐसे नज़र

आने लगे, मानो वे रात की शांतिपूर्ण स्तब्धता मे उस जवान की हिम्मत और बहादुरी का संदेश दुनिया को दे रहे हों। लश्कर का सरदार लाश को ध्यान से देखने के लिए और पास आया। उसकी नज़र नवयुवक की कलाई में बंधे हुए जरकशी रूमाल पर पड़ी। उसने उसे ध्यान से देखा और रूमाल बनाने वाले हाथ को पहचान गया। वह जल्दी से रूमाल को अपने कपड़ों से और अपने उदास चेहरे को कांपते हाथो मे छिपाता हुआ दो क़दम पीछे हटा।

दु:खी चेहरे को छिपाने वाले हाथ वही हाथ थे, जो अपनी एक हरकत से बड़े-बड़े बहादुरों के सिर उतार दिया करते थे; लेकिन अब वे कमजोर पड़ गए थे। वे काप रहे थे और आसुओं को पोंछ रहे थे। यह क्यों? सिर्फ़ इसलिए कि उन हाथों में वह रूमाल था, जो मृत नवयुवक की कलाई पर एक सुंदर और नाजुक प्रियतमा ने बांधा था।

वह नवयुवक, जो यह इरादा लेकर आया था कि अपनी बहादुरी के जौहर दिखाकर अपनी और कौम की इज्जत की रक्षा करेगा, अब अपने साथियों के कंधों पर सवार होकर अपनी प्रियतमा के सामने जाएगा।

सरदार के विचार मृत्यु के अत्याचारों और प्रीति के रहस्यों के सागरों में डुबकियां लगा ही रहे थे कि एक ने कहा, "आओ, बलूत[1] के इस पेड़ के नीचे उसकी कब्र खोदें। इसकी जड़ें उसके ख़ून से भर जाएंगी और उसका शरीर इसकी शाखाओ की खुराक बनेगा। इस तरह पेड़ की जड़ें मज़बूत बनेंगी और इसकी उम्र बढ़ेगी। यह पेड़ हमेशा के लिए इन टीलों के सामने उस नौजवान की बहादुरी और वीरता की यादगार रहेगा।"

दूसरे ने कहा, "इसको चावल के खेतों में गिरजे के करीब दफ़न करना चाहिए, जिससे इसकी हड्डियों पर हमेशा के लिए सलीब का मुबारक साया पड़ता रहे।"

तीसरे ने कहा, "इसको उस स्थान पर दफ़न करना चाहिए, जहां की मिट्टी इसके ख़ून से सन चुकी है। इसकी तलवार इसके दाहिनी तरफ़ रख देनी चाहिए। इसका भाला इसके बाईं तरफ़ गाड़कर इसके घोड़े को उसकी क़ब्र पर ही बलि चढ़ाना चाहिए, ताकि अकेलेपन में वे उसके साथी बनें।"

चौथे ने कहा, "दुश्मन के ख़ून से रंगी हुई तलवार को मिट्टी में दफ़न न करो। मौत के मैदान में आगे बढ़ते हुए घोड़े को क़त्ल न करो और उन हथियारों को ख़ाली मैदान के सुपुर्द न करो, जो मज़बूत कलाइयों और ताक़तवर हाथों में रहने के आदी हैं, बल्कि इन तमाम चीज़ों को नवयुवक के सच्चे वारिसों तक पहुंचा दो, इसलिए कि वे ही उनके सही हक़दार हैं।"

पांचवें ने कहा, "आओ, हम सब मिलकर अपने धर्म के मुताबिक़ इसकी लाश पर नमाज़ पढ़ें और उसके लिए दुआ मांगें, ताकि इसे निजात मिले और हमारी फतह इस बहादुर की वजह से मुबारक रहे।"

---

1 एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल से चमड़ा रंगा जाता है

छठे ने कहा, ''आओ, भालों और ढालों का ताबूत बनाकर इसको अपने कंधो पर उठायें और जीत के गीत गाते हुए इन वादियों के चक्कर काटें, ताकि यह नवयुवक अपनी आत्मा की आंखों मे दुश्मन की लाशों को देखे और मिट्टी में मिल जाने से पहले उसके ज़ख़्म दुश्मनों को देख-देखकर हंसे।''

सातवें ने कहा, ''नहीं, आओ! इसको अपने घोड़े की जीन पर बिठाकर दुश्मनो की खोपड़ियों का सहारा इसके लिए तलाश करें। इसके भाले को इसके गले में लटकाएं और कामयाब मुजाहिद की तरह इसे शहर में ले जाये, इसलिए कि इसने उस वक्त तक जान नहीं दी, जब तक दुश्मनों की आत्माओं का भारी बोझ उसके कन्धों पर न पड़ा।''

आठवें ने कहा, ''आओ, इस पहाड के अंचल में इसके जिस्म को मिट्टी के हवाले कर दें। झरनो की आवाजें इसका साथ देंगी, नदियों की आवाजें इसके दु:ख की हिस्सेदार बनेंगी और इस तरह ऐसे जंगल में, जहां रात भी दबे पांव आया करती है, इसकी हड्डियां हमेशा सुख से रहेंगी।''

नौवे ने कहा, ''इसको यहां न छोडो। इस जंगल में भीषणता बरसती है और भयानक एकांत इस जगह छाया रहता है। इसलिए चलो, इसे शहर के कब्रिस्तान मे ले जायें। हमारे बाप-दादाओं की आत्माएं इसके साथ रहेंगी। रात की ख़ामोशी मे वे आपस में बातें करेंगी और अपनी लड़ाइयों और अपने कारनामों के किस्से सुनाएंगी।''

ये सारे प्रस्ताव सुनने के बाद सरदार लश्कर के बीच आया और सबको हाथ के इशारे से खामोश करके ठडी आहें भरते हुए बोला, ''लड़ाइयो की याद दिलाकर इसकी शांति में बाधा मत डालो। इसकी आत्मा के कानों तक, जो हमारे सिरों पर उड़ रही है, तलवारों और भालों की ख़बरे न पहुंचाओ, बल्कि आओ, इसको आराम से उठाकर इसके घर पहुंचायें— इसलिए कि उस जमात में एक ऐसी आत्मा है, जो इसके स्वागत के लिए हमेशा से जाग रही है— एक नौजवान कुमारी की आत्मा, जो भालों से घिरे हुए लड़ाई के मैदान से इसकी वापसी की राह देख रही है। हमें चाहिए कि इसकी लाश को उस कुमारी तक पहुंचा दें, ताकि वह इसके चेहरे पर आख़िरी नजर डालने और इसके माथे का आख़िरी चुंबन लेने से महरूम न रहे।''

तब उस नौजवान की लाश को कंधों पर उठाया गया। सबके सिर झुके हुए और आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं। दु:ख से भरी ख़ामोशी के साथ वे जा रहे थे और नौजवान का घोडा उदासी के साथ अपनी लगाम को पीछे घसीटता उनके पीछे- पीछे आ रहा था। वह कभी-कभी हिनहिनाने लगता। तब आसपास के टीले गूज के रूप मे उसकी हिनहिनाहट का जवाब दे देते, मानो उन टीलों के भी ऐसा दिल था, जो उस वफ़ादार जानवर के दु:ख को समझता था।

उस वादी मे, जहां चाद की चांदनी हर चोटी पर कदम रखती है, फतह का काफिला मौत के काफिले के पीछे-पीछे चला जा रहा था और उन दोनों क़ाफ़िलो के आगे- आगे सच्ची मुहब्बत अपने टूटे हुए पैरों को घसीटती हुई जा रही थी।

❑❑

4. सवेरे की रोशनी

उत्तरी लेबनान के एक गांव में शेख़ अब्बास नाम का एक बड़ा ज़मींदार रहता था। वह अपने को गांव का मालिक ही समझता था। जब वह किसानों से बातें करता, तब वे दीनता के साथ सिर झुका लेते और जब वह गुस्से में आता तो वे डर के मारे कांप उठते। उसकी शक्ल देखते ही भाग जाते। अगर वह किसी के गाल पर तमाचा मार देता तो वह आदमी चुप खड़ा रहता और सोचता कि यह मार आसमान से आ पड़ी है। अगर वह किसी को देखकर तनिक मुस्कराता तो सब लोग उस आदमी को बधाई देते।

ये गरीब लोग शेख़ अब्बास के सामने सिर झुकाते थे—इसलिए नहीं कि वे कमज़ोर थे और शेख़ ताक़तवर था, बल्कि इसलिए कि वे कंगाल थे और उन्हें शेख़ की जरूरत थी, क्योंकि जिस भूमि में वे खेतीबाडी करते थे और जिन मकानों में रहते थे, वे सब शेख की जायदाद थे। जी-तोड़ मेहनत करने पर भी उन्हें इतना भी अनाज नहीं मिल पाता था, जो उन्हें भूख के गढ़ों से निकाल सके। अधिकतर किसान तो ज़ाड़ा बीतने से पहले ही रोटी तक मुहताज हो जाते थे और एक-एक करके शेख़ के पास जाकर रोना-धोना शुरू कर देते थे, ताकि उससे एक दीनार या गेहू की एक टोकरी क़र्ज़ मिल सके। शेख़ उनकी मांग को ख़ुशी से मंजूर कर लेता, क्योंकि वह जानता था कि फ़सल के समय एक दीनार और गेहूं की एक टोकरी की दो टोकरियां बन जायेंगी। इस तरह वे शेख़ अब्बास के क़र्ज़ के नीचे दबे हुए थे।

जाड़े का मौसम आया। बर्फ़ गिरने लगी। देहात के लोग शेख़ अब्बास के गोदामों को अनाज से और मटकों को अंगूर के रस से भरकर घरों में बैठ गए।

रात हो गई थी। तूफ़ानी हवा बर्फ़ से लदे बड़े-बड़े पहाड़ों से बर्फ़ को उड़ा-उड़ाकर नीचे फेंकने लगी।

इस भयानक रात में बाईस बरस का एक नवयुवक कजहिया[1] के गिरजाघर से

---

1 कजहिया सरियानी (सीरियन) शब्द है जिसका अर्थ है जीवन का स्वर्ग

एक कठिन रास्ता पार कर शेख़ अब्बास के गांव को जा रहा था। कजहिया का गिरजाघर लेबनान का सबसे अधिक प्रसिद्ध और धनवान गिरजा है।

सर्दी नवयुवक के जोड़ों को ऐंठ रही थी। भूख और डर ने उसकी ताक़त को खत्म कर दिया था। उसकी काली पोशाक बर्फ़ से ढकी हुई थी, मानो उसने कफन पहन रखा हो। वह आगे की ओर बढ़ता तो हवा ऐसे जोर से धक्का लगाती, मानो वह उसे जीवन के बधन में देखना नहीं चाहती थी। वह बेचारा गिर पड़ता और फिर उठ जाता।

नवयुवक चलता गया और मौत भी उसके पीछे-पीछे हो ली। अत में उसकी सारी ताकत चुक गई। उसकी सुध-बुध कम होती गई। उसकी नसों का लहू जम गया और वह बर्फ़ पर गिर पड़ा।

उसके शरीर में जीवन का केवल एक ही निशान बाक़ी था, और वह था उसका रह-रहकर चिल्लाना।

इस गांव के उत्तर की ओर खेतों के बीच एक छोटे-से मकान में राहील नाम की एक स्त्री अपनी अठारह साल की बेटी मरियम के साथ रहती थी। यह स्त्री समआन नामक एक आदमी की बेवा थी, जो पाच साल हुए जगल मे मरा पाया गया था और जिसके हत्यारे का पता आज तक नहीं लगा था।

अपनी ही मेहनत से वह रोजी कमाती थी। उसकी बेटी मरियम खूबसूरत थी और घर के काम-काज मे अपनी मां का हाथ बंटाती थी।

उस भयावनी रात में राहील और मरियम अंगीठी के पास बैठी थी। आधी रात बीत चुकी थी। अब वे सोने जा रही थी कि इतने मे मरियम को खिड़की में से कोई आवाज सुनाई दी। उसने मां से पूछा, ''अम्मा, क्या तुमने सुना? मुझे लगता है, बाहर कोई कराह रहा है।''

राहील उठकर खिड़की के पास गई और बोली, ''हां, मुझे भी आवाज सुनाई दे रही है। आओ, दरवाज़ा खोलकर बाहर जाये और उसकी तलाश करें!'' इतना कहकर राहील बाहर निकल गई। मरियम दरवाजे में ही खडी रही।

राहील थोड़ी दूर गई होगी कि इतने मे उसने अपने सामने एक आदमी को बर्फ पर बहोश पड़ा पाया। उसने आगे बढकर उसके कपड़ों से बर्फ को झाड़ा और उसका सिर अपनी गोद मे रखकर वह उसकी नाड़ी और दिल की धडकन देखने लगी। फिर उसने जोर से आवाज़ दी।

मरियम घर से निकली और डर तथा जाड़े से कांपती हुई उस स्थान पर पहुच गई। दोनो ने नौजवान को उठा लिया और उसे लेकर मकान पर पहुच गई। उन्होंने उस युवक को अगीठी के पास लिटा दिया। मां उसके हाथ-पाव मलने लगी और बेटी अपने कपडे से उसके भीगे हुए बालों को पोंछने लगी कुछ मिनट में उस युवक के शरीर मे हरकत हुई और उसकी आखो मे जान आ गई मरियम ने उसके

गीले जूते और भीगा लबादा उतारते हुए कहा, "देखो मां, इसकी पोशाक जोगियो की-सी है।"

राहील ने अंगीठी में सूखी लकड़ी डालते हुए कहा, "अजीब बात है! ऐसी भयावनी रात में तो जोगी या पादरी भी मठ से नहीं निकला करते। इस दु:खी आदमी को किसी बात ने मजबूर किया होगा कि वह अपनी जान ख़तरे मे डाले।"

लड़की बोली, "लेकिन इसकी दाढ़ी तो नहीं है। जोगियो की तो घनी दाढी होती है।"

मा बोली, "बेटी, इसके पांव मलो।"

इसके बाद मरियम पास वाली कोठरी मे से एक प्याले में थोड़ी-सी शराब लाई और उस युवक को पिलाई। तब उस युवक ने उसकी तरफ़ देखकर कहा, "भगवान तुम्हारा भला करे!"

फिर राहील दो रोटियां एक रकाबी मे रखकर लाई और युवक के पास बैठकर उसके मुह में इस तरह कौर देने लगी, जैसे मां अपने बेटे को खिलाती है। जब वह काफी खा चुका तो बोला, "आदमी के हाथों ने मुझे इस हालत मे डाला, और आदमी के हाथो ने ही मुझे बरबादी से बचा लिया।"

राहील ने ममताभरी आवाज में पूछा, "ऐ भाई, तुम पर ऐसी क्या गुज़री कि जिससे तुम्हें इस भयावनी रात में जोगियों के मठ को छोड़ना पड़ा?"

नौजवान ने आह भरकर कहा, "मैं मठ[1] से ज़बरदस्ती निकाल दिया गया।"

राहील ने डरी आवाज़ मे पूछा, "निकाल दिया गया?"

"हां, मुझे मठ से निकाल दिया गया, क्योंकि मुझे दु:खियों और गरीबो का माल खाने से नफ़रत हो गई थी।"

तब राहील ने प्यार से पूछा, "ऐ भाई, तुम्हारे मा-बाप कहां हैं?"

युवक ने दर्दभरी आवाज़ में उत्तर दिया, "मेरे न बाप है, न मां-बहन और न कोई ऐसी जगह, जहां मैं अपना सिर छिपा सकूं।"

नौजवान ने अपना सिर उठाया और कहना शुरू किया, "सात साल की उम्र में ही मेरे मां-बाप गुज़र गए। गांव का पादरी मुझे कजहिया के मठ में ले गया। वहां मुझे गायों का चरवाहा बनाया गया। जब मैं पंद्रह बरस का हुआ, तब उन्होंने मुझे यह मोटी और काली पोशाक पहना दी और कहा, 'भगवान की क़सम खाकर अहद करो कि तुम अपने-आपको ग़रीबी, हुक्म मानने और संयम के लिए निछावर कर दोगे।' उनके कहने का मतलब ध्यान में आने से पहले ही मैंने उनके शब्दों को दुहराया। मेरा नाम ख़लील था और जब मैं जोगी बना, तब उन्होंने मेरा नाम बिरादर मुबारक रख दिया; मगर उन्होंने मुझे अपना भाई न बनाया। वे बडे अच्छे-अच्छे

---

1 चर्च

खाने खाते थे, मगर मुझे सूखी रोटिया और बासी सब्जी खिलाते थे . मुझे यह बुरा लगता था और मैं उस पर सोचता रहता था।

"आख़िर एक दिन हिम्मत करके मैं मठ के जोगियों के पास गया और बोला, 'हम गरीबों और दु:खियों के दान से फ़ायदा क्यों उठाते हैं? हम बेकार बैठकर क्यो ऐश उड़ाते हैं? आओ, इस मठ की यह बड़ी खेती उन गरीब देहातियों में बांट दे और उनका जो माल हम उनसे ले चुके हैं, उनकी जेबो में डाल दें। हम उन कमजोर लोगों की सेवा करे, जिन्होने हमें ताक़तवर बनाया है और उन गांवो की तरक्क़ी करे, जिनके दान ने हमें धनवान बना दिया है।'

"जब मेरी बात खत्म हुई तो जोगियो में से एक आगे बढ़ा और दांत पीसकर बोला, 'ए मरियल आदमी, तेरी इतनी जुर्रत।' फिर दूसरा बोला, 'शैतान, तू अभी इसका नतीजा भुगतेगा।'

"इसके बाद उन्होंने बड़े पादरी से शिकायत की। उसने मुझे बुलाकर एक माह तक जेलख़ाने में रखने का हुक्म दिया। एक महीना मैं उस क़ब्र में पड़ा रहा, जहां मुझे रोशनी भी दिखाई नहीं दी। महीना बीत गया। मैं जेलखाने से बाहर निकला, मगर वहां की तकलीफें मेरी हिम्मत को पस्त नहीं कर सकीं। आज शाम को मैंने उन लोगों को इंजील से ये फिकरे पढ़ कर सुनाये— उसने एक समूह से, जो उसका यकीन पाने के लिए निकला था, कहा— 'ए सांप की औलादो! आने वाली आफत से डरो और संयम का मीठा फल पैदा करो। तुम अपने दिलों में कहते हो कि हम हजत इब्राहीम की औलाद हैं; लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि भगवान इस पत्थर से भी इब्राहीम की संतान पैदा कर सकता है। अब कुल्हाड़ा पेड़ की जड काट चुका है और जो पेड़ अच्छे फल नहीं देता, उसे आग में जला दिया जाता है।' लोगों ने पूछा, 'अब हम क्या करें?' उसने उत्तर दिया, 'जिसके पास कपडे हैं, वह उन्हें उस आदमी को दे दे, जिसके पास नही हैं, और जिसके पास खाना है, वह उसे दे दे, जो भूखा है।'

"मेरे होंठों से इन शब्दों का निकलना था कि एक ने मेरे मुंह पर बड़े जोर से तमाचा मारा, दूसरे ने मुझे पांव से ठोकरें मारीं; तीसरे ने मेरे हाथ से इंजील छीन ली और चौथे ने बड़े पादरी को पुकारा। बड़ा पादरी जल्दी से आया और जब उसने सारी बातें सुनीं तो उसकी आंखे लाल हो गई। वह ग़ुस्से से कापने लगा और गरजती हुई आवाज में बोला, 'इस बदमाश जोगी को पकड़ लो और मठ से निकाल दो, ताकि बाहर की आफ़तें इसे अच्छा सबक़ सिखा दें।'

"जोगियों ने मुझे तुरंत पकड लिया और मुझे मठ से बाहर धकेल दिया।

"इस तरह जोगियों और पादरियों ने मुझे मौत के मुंह में दे दिया, मगर बर्फ और आधी के पीछे से एक ताकत ने मेरी पुकार को सुना और आपको मेरे पास भेजा ताकि आप मुझे मरने से बचा लें।"
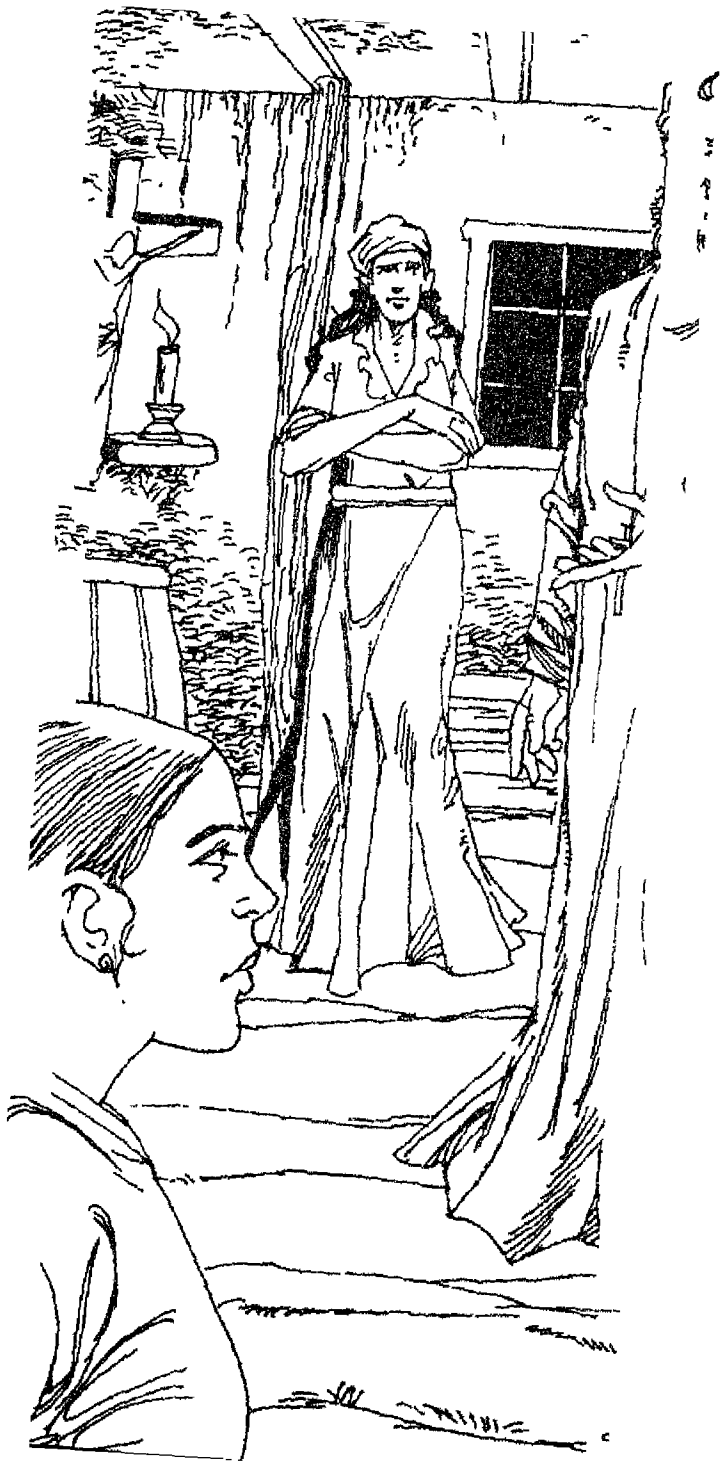
ख़लील की कहानी सुनकर राहील बोली, "भगवान जिसे सच्चाई के रास्ते मे मदद देता है, उसे न जुल्म ख़त्म कर सकते हैं और न आंधी और बर्फ़ मार सकते हैं।"

मरियम ने आह भरकर कहा, "आंधी और बर्फ़ फूलों को बरबाद कर सकते हैं, लेकिन बीज नहीं मर सकते।"

इस हमदर्दी से ख़लील का चेहरा चमक उठा। कुछ हो मिनट में उसकी आंखें मुद गई और वह इस तरह सो गया, जैसे बच्चा मां का दूध पीकर सो जाता है। राहील और मरियम भी अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर सो गईं।

□□

दो हफ्ते बीत गए। ख़लील ने तीन बार कोशिश की कि वह समुद्र के किनारे की राह ले, मगर राहील ने प्यार से उसे रोककर कहा, "देखो भाई, तुम अब कही मत जाओ, यहीं रहो; क्योंकि जो रोटियां दो आदमियों का पेट भरती हैं, वे तीन के लिए काफी होती हैं। भैया, हम ग़रीब ज़रूर हैं, मगर भगवान की दुआ से उसी तरह जीते हैं, जैसे दूसरे आदमी।"

मरियम भी अपनी ख़ामोश आखो से अपना प्यार जाहिर करती थी।

एक दिन हिम्मत करके उसने खलील से कहा, "तुम इसी गांव में क्यों नही रहते? क्या यहां की जिदगी दूर-दूर के उजाड परदेस से अच्छी नहीं है?"

उसके शब्दों की कोमलता और स्वर के संगीत से व्याकुल होकर खलील बोला, "इस गाव के लोग पसद न करेंगे कि पादरियों के मठ से निकाला गया आदमी उनका पडोसी बने। अगर मै इस गांव में रह गया और मैंने यहा के लोगो से कहा, 'आओ भाइयो, अपनी मर्जी के मुताबिक प्रार्थना करें, न कि इस तरह जिस तरह जोगी और पादरी चाहते हैं, क्योंकि भगवान की यह मर्ज़ी नहीं हो सकती कि वह ऐसे मूर्खों का देवता बने, जो ईश्वर को छोड़ औरो के पीछे चलते हैं' तो ये लोग मुझे काफ़िर ठहरायेगे और कहेंगे कि यह आदमी उस हुकूमत से वैर रखता है, जो भगवान ने पादरियों को दी है...। फिर भी मरियम! इस गांव में एक ऐसा जादू है, जिसने मुझे जीत लिया है। मैं इस गांव में एक बड़ा अच्छा फूल देखता हूं, जो काटो मे पडा है। क्या मैं इस फूल को छोड़कर जा सकता हूं? नही, कभी नही।"

मगर खलील की क़िस्मत ने उसे ज़्यादा दिन तक चैन से नही रहने दिया।

उस गांव के मालिक शेख अब्बास की पादरियो से गहरी दोस्ती थी। एक दिन उस गांव का पादरी इलियास शेख़ अब्बास के पास गया और बोला, "पादरियो ने एक बादमाश बागी को मठ से निकाल दिया था। वह काफ़िर अब दो हफ़्तों से इस गाव मे आया हुआ है और समआन की बेवा राहील के घर में रहता है। हमारा फर्ज है कि हम भी उसे अपने गांव से निकाल बाहर करें!"

अब्बास ने पूछा, "क्या हमारे लिए यह मुनासिब न होगा कि हम उसे यही रहने दें और अपने अगूर के बाग़ों का रखवाला या ढोरो का चरवाहा बना लें?"

पादरी बोला, "अगर यह आदमी काम करने वाला होता तो वे पादरी उसे क्यों निकाल देते, जिनकी खेती बहुत बड़ी है और जिनके पास बेशुमार ढोर हैं?" और फिर उसने वह सारा क़िस्सा उसे सुनाया जो उसने मठ के पादरियों से सुना था। सुनकर शेख़ अब्बास ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया। उसने ज़ोर से चिल्लाकर अपने नौकरों को आवाज दी और कहा, "बेवा राहील के घर में एक आदमी है, जिसने पादरियो का लिबास पहन रखा है। जाओ, उसकी मुश्कें कसकर यहां ले आओ। और अगर वह औरत किसी तरह की रुकावट डाले तो उसे भी गिरफ़्तार कर लो और उसके सिर के बालो को पकड़कर उसे बर्फ में खीचते हुए ले आओ, क्योंकि बदमाश का मददगार भी बदमाश ही होता है।"

नौकर हुक्म बजा लाने के लिए तेज़ी से बाहर निकले।

□□

राहील, मरियम और ख़लील एक चौकी के पास बैठे खाना खा रहे थे कि इतने मे दरवाज़ा खुला और शेख़ अब्बास के नौकर अंदर आये। राहील डर गई और मरियम ने चीख मारी, मगर ख़लील खामोश था, क्योकि उसने उनके आने का सबब जान लिया था। एक नौकर आगे बढ़ा और ख़लील के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "पादरियों के मठ से निकाले हुए नौजवान तुम्हीं हो?"

खलील ने जवाब दिया, "जी हा, मैं ही हूं। क्यों, क्या चाहते हो?"

नौकर ने कहा, "हम चाहते हैं कि तुम्हारी मुश्कें कसकर तुम्हें शेख अब्बास के मकान पर ले चलें और अगर तुम कुछ आनाकानी करो तो तुम्हें मरे हुए बकरे की तरह घसीटकर ले जायें।"

राहील का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कांपती हुई आवाज में पूछा, "इसका क्या क़सूर है, जिसकी वजह से शेख़ अब्बास ने इसे बुलाया है?"

नौकर मारे ग़ुस्से के चिल्ला उठा, "क्या इस गांव में कोई ऐसी औरत भी हो सकती है, जो शेख अब्बास की इच्छा के ख़िलाफ़ जाये?"

यह कहकर उसने ख़लील की मुश्कें कसने को एक मोटी रस्सी निकाली। खलील उठकर खड़ा हो गया। उसके होंठो पर मुस्कराहट थी। उसने उन नौकरों से कहा, "दोस्तो, मुझे तुम्हारी हालत पर तरस आता है। तुम एक ज़बरदस्त आदमी के हाथ में अंधे औज़ार की तरह हो। वह तुम पर जुल्म करता है और तुम्हारे हाथों से कमज़ोरों को बरबाद कराता है। तुम्हारी लाचारी पर मुझे दु:ख है। आओ, मेरी मुश्के कस लो और जो जी में आये, करो।"

नौकरों ने ये बातें सुनी तो उनकी आंखें पथरा गईं। मगर फ़ौरन उन्हें याद आ गया कि वे किस काम के लिए वहां आये हैं। आगे बढ़कर उन्होंने ख़लील की मुश्कें कस ली और उसे पकड़े हुए चुपचाप बाहर निकले। राहील और मरियम भी उनके पीछे-पीछे चल दीं—उसी तरह जिस तरह [illegible] की लडकिया हज़रत

ईसा मसीह के पीछे हो ली थीं, जबकि उन्हें क्रूस पर लटकाने के लिए ले जाया जा रहा था।

□□

देहात में छोटी-बड़ी ख़बरें बहुत जल्दी फैल जाती हैं। शेख़ अब्बास के आदमियों ने ज्यों ही ख़लील को गिरफ्तार किया, यह ख़बर गांव के लोगों में छूत की बीमारी की तरह फैल गई। वे अपने-अपने मकान छोड़कर बिखरे हुए सिपाहियों की तरह हर तरफ़ से तेज़ी के साथ भागे। जैसे ही नवयुवक को शेख़ के मकान मे लाया गया, वह बड़ा घर स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों से भर गया। सब-के-सब उस काफ़िर की ओर आश्चर्य से देख रहे थे, जिसे पादरियों ने मठ से निकाल दिया था।

शेख अब्बास एक ऊंची गद्दी पर विराजमान था और उसके पास पादरी इलियास बैठा था। सामने किसान व नौकर-चाकर खड़े थे और बीच में खलील, जिसकी मुश्कें कसी हुई थीं। वह इस तरह अकड़ कर खड़ा था, जैसे गढ़ों के बीच ऊंचा टीला।

शेख अब्बास ने खलील की ओर देखकर पूछा, "ऐ शख्स, तेरा नाम क्या है?"

खलील ने उत्तर दिया, "मुझे ख़लील कहते हैं।"

शेख ने पूछा, "तुम्हारा ख़ानदान कौन-सा है? और तुम कहां के रहने वाले हो?"

ख़लील ने उन किसानों की ओर देखा, जो उसकी तरफ़ नफ़रत से देख रहे थे और कहा, "ये दु:खी-ग़रीब लोग ही मेरा ख़ानदान हैं और ये ही फैले हुए गांव मेरी मातृभूमि है।"

शेख अब्बास मुस्कराया और बोला, "तुम जिन लोगों के साथ अपना रिश्ता जोड़ते हो, वे तुम्हें सज़ा दिलाना चाहते हैं और जिन गांवों को तुम अपनी मातृभूमि बताते हो, वे नहीं चाहते कि तुम हां चैन से रहो।"

ख़लील ने व्याकुल होकर उत्तर दिया, "नासमझ जातियां अपने शीलवान बेटों को पकड़कर जुल्म करने वालों को बेरहमी के हवाले कर देती हैं और बेइज्जती तथा दुर्दशा के गढों में फंसे हुए गांव अपने प्यारे बेटों पर जुल्म करते हैं। ये दीन-दु:खी लोग, जिन्होंने आज मुझे रस्सी से जकड़कर तुम्हारे हवाले किया है, कल अपनी गरदनें तुम्हारे हवाले कर चुके हैं।"

शेख ने ज़ोर से ठहाका मारकर कहा, "क्या तुम पादरियों के मठ में चरवाहे नहीं थे? तो फिर तुमने अपने ढोरों को क्यों छोड़ दिया? और तुम वहां से क्यों निकाले गए?"

ख़लील ने उत्तर दिया, "मैं चरवाहा था, क़साई नहीं। मैं ढोरो को हरी-भरी चरागाहों में ले जाता था सूखे पहाडों पर नहीं अगर हम इन गरीब आदमियों के

साथ ऐसा ही सलूक करते तो तुम आज इन शानदार महलों के मालिक न होते और ये बेचारे अपने अंधेरे झोंपड़ों में भूखों न मरते।''

शेख के माथे पर ठंडे पसीने की बूंदे चमकने लगीं। लेकिन जल्दी ही वह सभल गया और उसने हाथ फैलाकर कहा, ''तुम्हारी मुश्के कसवाकर तुम्हे यहा इसलिए नहीं मंगाया गया है कि तुम्हारी वाहियात बातें सुनें; बल्कि इसलिए कि एक बदमाश अपराधी की तरह तुम्हारी जांच की जाये। तुम पर जो जुर्म लगाये गए हैं उनके बारे में तुम अपनी सफ़ाई पेश करो या हमारे सामने झुककर दया की प्रार्थना करो। हम तुम्हे माफ़ कर देगे और उसी तरह गायों का चरवाहा बना देंगे, जिस तरह तुम पादरियों के मठ में थे।''

खलील ने लापरवाही से जवाब दिया, ''अपराधी का इंसाफ अपराधी नही किया करते और 'बदमाश काफिर' अपनी सफाई दोषियों के सामने पेश नही करते।''

ये शब्द कहकर खलील ने उस बड़े मकान में जमा हुए लोगों पर नजर दौड़ाई और कहा, ''ऐ लोगो, तुम अपनी अगीठियों की गर्मी छोड़कर यह देखने आये हो कि किस तरह तुम्हारा बेटा और तुम्हारा भाई जकड़ा हुआ लाया गया है। तुम एक मुजरिम काफ़िर को अदालत के सामने खड़ा देखने आये हो। वह अपराधी मैं ही हू। वह काफिर मैं ही हूं। तुम मेरी दलील सुनो और मेरे साथ रहम न करो, बल्कि इसाफ़ करो, क्योकि दया कमजोर और अपराधी लोगों के लिए होती है। बेक़सूर आदमी तो इंसाफ चाहता है। मैं तुम्हारे इंसाफ के फ़ैसले को स्वीकार करता हू, क्योकि जनता की इच्छा भगवान की इच्छा होती है। अपने दिलों को खोलो और मेरी बातो को सुनो। फिर तुम्हारा विवेक जैसा कहे, वैसा न्याय करो।

''ऐ मर्दो! मेरा जुर्म यह है कि मै तुम्हारी बरबादी की जानकारी और तुम्हारी गुलामी को महसूस करता हूं, और ऐ नारियो! मेरा गुनाह यह है कि मेरे दिल मे तुम्हारे लिए और तुम्हारे बच्चों के लिए हमदर्दी भरी हुई है। मित्रो! मैं तुम मे से ही एक हूं। मैने मठ में यह देखा कि तुम लोग अपने खेतों में बकरियों के उस रेवड़ की तरह हो, जिसके पीछे भेड़िया जा रहा है। मैं रास्ते के बीच में खड़ा होकर चीखने-चिल्लाने लगा। इस पर भेड़िये ने मुझ पर हमला करके मुझे दूर भगा दिया, ताकि मेरे शोर-गुल से बकरियां भेड़िये को रात के अंधेरे में अकेला छोड़कर इधर-उधर भाग न जायें।

''तुमने सुना है कि अल्लाहतआला ने हजरत आदम से कहा था कि मेहनत करके रोटी कमाओ। फिर शेख़ अब्बास वह रोटी क्यों खाता है, जिसमें तुम्हारे माथे का पसीना मिला हुआ है? तुम बहुत बड़े और आलीशान महल बनाते हो, लेकिन तुम्हारे रहने के लिए झोपड़ी के सिवा कुछ नहीं। क्या तुमने ईसा मसीह का वह वचन नहीं सुना है, जो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा था—'जो कुछ दो, मुफ़्त दो और जो कुछ लो, मुफ़्त लो। घरों में सोना, चांदी और तांबा जमा न करो?' फिर ये पादरी और जोगी किस शिक्षा के अनुसार अपनी प्रार्थनाओं को चादी-सोने के बदले में बेचते हैं?''

खलील का चेहरा चमक उठा। उसने जान लिया कि सुनने वालों के हृदय मे उनकी आत्मा जग रही है। उसकी आवाज़ पहले से ज़्यादा ऊंची हो गई। वह कहने लगा, ''मेरे भाइयो! तुम अल्लाह के बेटे होकर यह कैसे क़बूल करते हो कि आदमी की ग़ुलामी मंजूर की जाय? ईसा मसीह ने तुम्हें 'भाई' कहकर पुकारा था, फिर तुम अपने को शेख़ अब्बास के गुलाम क्यों कहलाते हो?. .आज तुमने जो बातें मुझसे सुनी, उन्हीं बातों के सबब से मैं मठ से निकाला गया। अब अगर तुम्हारे गांव का शेख और तुम्हारे गिरजा का पादरी मुझे सूली पर चढ़ा दें तो मुझे ख़ुशी ही होगी।''

ख़लील की बातों ने लोगों के दिलों पर जादू का-सा असर किया। उनकी आंखों से पर्दे इस तरह हट गए, जैसे एक अंधा आदमी अचानक देखने लग जाये। मगर शेख अब्बास और पादरी इलियास गुस्से के मारे कांप रहे थे। वे चाहते थे कि खलील को चुप करा दें; पर ऐसा कर नही सकते थे। आख़िर शेख अब्बास खड़ा हो गया। उसने त्यौरी चढाकर कठोर आवाज़ में लोगों से कहा, ''तुम्हें हो क्या गया है? क्या तुम सुन नहीं रहे हो? क्या तुम्हारे शरीर सुन्न हो गए हैं कि तुम इस काफिर को पकड़ने लायक नहीं रहे?''

इतना कहकर शेख़ ने तलवार खींच ली और वह ख़लील की ओर झपटा ताकि उस पर वार करे, मगर इतने में वहां जमा हुए लोगों में से एक ताक़तवर आदमी आगे बढ़ा और बोला, ''ऐ सरदार! अपनी तलवार को म्यान में डालो, वरना तलवार का बदला तलवार से लिया जायेगा!''

शेख़ कांपने लगा। उसके हाथ से तलवार गिर गई। उसने चिल्लाकर कहा, ''क्या एक कमजोर नौकर ईश्वर के समान अपने मालिक को रोक सकता है?''

उस आदमी ने जवाब दिया, ''ईमानदार नौकर बदमाशी और जुल्म में अपने मालिक का मददगार नहीं होता।''

अब राहील को भी बोलने की हिम्मत हो गई। वह आगे बढ़ी और बोली, ''इस आदमी ने अपनी बातों से हमारा ही दिल खोलकर रख दिया है। इसलिए अब जो आदमी बदमाशी करेगा, वह सबका दुश्मन होगा।''

शेख़ ने दांत पीसते हुए कहा, ''तू भी विद्रोह करती है, ऐ औरत! क्या तू भूल गई कि आज से पांच बरस पहले जब तेरे शौहर ने मुझसे बगावत की थी तो उसका क्या नतीजा हुआ था?''

यह सुनकर राहील को बहुत ग़ुस्सा आया और ग़ुस्से के मारे वह कांपने लगी। उसने लोगों की तरफ़ देखकर फ़रियाद की, ''सुन रहे हैं आप? यह हत्यारा ग़ुस्से में आकर अपने गुनाह को क़बूल कर रहा है। मेरे पति के हत्यारे का पता उस वक़्त नहीं चल सका, क्योंकि वह तो दीवारों के पीछे छिपा हुआ था। भगवान ने अचानक हमें वह हत्यारा दिखा दिया है, जिसने मुझे बेवा बनाया।''

राहील की इस बात से उस कमरे में सन्नाटा-सा छा गया। इतने में पादरी इलियास उठा और उसने कांपती हुई आवाज़ में नौकरों को हुक्म दिया ''इस औरत

को गिरफ्तार कर लो, जो तुम्हारे मालिक पर झूठा इल्ज़ाम लगा रही है और इसे काफिर ख़लील के साथ क़ैदख़ाने में डाल दो। जो आदमी ऐसा करने से तुम्हें रोकेगा, वह भी इनके अपराध में शामिल समझा जायेगा और उनकी तरह उसे भी पाक गिरजा से निकाल दिया जायेगा।''

लेकिन नौकर चुप रहे। उनके जमादार ने कहा, ''हमने शेख़ अब्बास की नौकरी रोटी के टुकड़े के लिए की थी, पर हम उसके ग़ुलाम नहीं हैं?'' इतना कहकर उसने अपनी वर्दी उतारकर शेख़ अब्बास के सामने फेंक दी। दूसरे नौकरों ने भी वैसा ही किया और कहा, ''अब हम इस ख़ूनी आदमी की नौकरी नहीं कर सकते।''

पादरी इलियास ने जब यह हालत देखी तो वह समझ गया कि झूठी ताकत का जादू टूट चुका है। इसलिए वह उस घड़ी को कोसता हुआ मकान से बाहर चला गया, जब ख़लील उस गांव में आया था।

इसी समय एक आदमी आगे बढ़ा और उसने ख़लील की मुश्कें खोल दीं और शेख़ अब्बास को देखकर, जो कुर्सी पर पत्थर की तरह चुपचाप बैठा था, बोला, ''इस नवयुवक ने हमारे अंधेरे दिलों को रोशन कर दिया है और इस बेवा ने हम पर ऐसा राज़ ज़ाहिर कर दिया है, जो पांच साल से छिपा हुआ था। हम तुम्हे तुम्हारे हाल पर छोड़ते हैं। क़ुदरत ख़ुद तुमसे बदला लेगी।''

अचानक स्त्रियों और पुरुषों की यह आवाज़ उस बड़े मकान में गूंज उठी—''आओ, हम इस मकान से भाग चलें, जिसकी दीवारो पर पाप और बुराइयां लिखी हुई हैं।''

एक ने कहा, ''हमें वही करना चाहिए जो ख़लील हमें बताये, क्योंकि वह हमारी ज़रूरतों को-जानता है और हमारे दिलों को समझता है।''

दूसरे ने कहा, ''हम सुल्तान से प्रार्थना करें कि वह ख़लील को शेख़ अब्बास की जगह गांव का सरदार बना दे!''

जब हर तरफ़ से अलग-अलग आवाज़ें आने लगीं तो ख़लील ने अपना हाथ उठाकर लोगों को चुप कराया और कहा, ''भाइयो! जल्दी न करो। मैं प्रेम के नाम पर तुमसे यह चाहता हूं कि तुम सुल्तान के पास न जाओ, क्योंकि वह इंसाफ़ नहीं करेगा और न इस बात की उम्मीद रखो कि मैं इस गांव का सरदार बनूंगा, क्योंकि ईमानदार सेवक कभी नहीं चाहता कि वह एक क्षण के लिए भी बदमाश सरदार बने। अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हारे बीच रहकर तुम्हारे सुख-दु:ख का साझीदार बनूं और तुम्हें खेतों के सुधार और सुखों का रास्ता दिखाऊं।''

यह कहकर ख़लील उस मकान से निकला। सब लोग उसके पीछे-पीछे हो लिये। जब वे गिरजा के पास पहुंचे तो ख़लील एक पैग़म्बर की तरह वहा ठहर गया और लोगों से बोला, ''भाइयो, आज रात हम अब्बास के घर पर इसलिए इकट्ठे हुए थे कि सुबह की रोशनी को देखें यह रोशनी हमें दिखाई दी है

अब जाओ और अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर सो जाओ!'' फिर ख़लील राहील और मरियम के पीछे-पीछे उनके मकान चला गया। लोग अपने-अपने घर चले गए।

□□

दो महीने बीत गये। ख़लील हर रोज़ गांव वालों को उनके अधिकार और कर्तव्य समझाता रहता। गांव वाले उसकी बातें सुनकर सुख अनुभव करते और खुशी-खुशी अपनी खेती-बाड़ी का काम करते। इधर शेख़ अब्बास कुछ पागल सा हो गया। वह अपने मकान में इस तरह घूमता फिरता था, जैसे पिंजरे के अंदर चीता।

आख़िर एक दिन वह मर गया।

किसानों में उसकी मृत्यु के कारणों के संबंध में मतभेद था। कुछ कहते थे कि उसका दिमाग फिर गया था। कुछ का खयाल था कि उसने ज़िंदगी से मायूस और दु:खो होकर ज़हर खा लिया, मगर जो स्त्रियां उसकी पत्नी को सांत्वना देने के लिए जाती थीं, वे वापस आकर बताती थीं कि शेख़ डर के मारे मर गया; क्योंकि राहील का मृत पति समआन आधी रात के समय ख़ून मे सने हुए कपड़ों में उसे दिखाई देता था।

ख़लील और मरियम के बीच जो मुहब्बत पैदा हो गई थी, उसकी जानकारी जब गांव वालों को हुई तो उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई और उन्होने उनकी शादी बड़ी धूमधाम से कर दी। अब ख़लील सचमुच उन्हीं में से एक बन गया था।

जब फ़सल की कटाई के दिन आये तो किसानों ने खेतों में जाकर अनाज इकट्ठा किया। चूंकि अब शेख अब्बास नहीं था, इसलिए किसानों ने अपने कोठे गेहू, ज्वार और जैतून से भर लिये। उन दिनों से लेकर आज तक उस गांव का हर आदमी सुख के साथ खेती-बाड़ी करता है और आनंद से अपनी मेहनत से पैदा किये बाग़ के फलों को जमा करता है। ज़मीन का मालिक वही है, जो उसमें खेती करता है।

आज इन घटनाओं को हुए आधी सदी बीत चुकी है। जब कोई बटोही उस रास्ते से गुजरता है तो वह उस गांव के लोगों की ख़ूबिया देखकर दंग रह जाता है। वह देखता है कि मामूली झोंपड़ो की जगह सुंदर मकान बन गए हैं और उनके आसपास हरे-भरे खेत और लहलहाते बाग बहुत शोभा देते हैं।

अगर शेख़ अब्बास का इतिहास पूछें तो गांव का आदमी टूटे हुए एक पत्थर के पास ले जायेगा, जिसके आसपास की दीवारें गिर चुकी हैं, और कहेगा, ''यह है शेख़ अब्बास का आलीशान महल और यही है उसका इतिहास!'' और अगर पूछें कि ख़लील का इतिहास क्या है तो वह अपना हाथ आकाश की ओर उठाकर कहेगा, ''हमारा प्यारा ख़लील वहां रहता है, मगर उसकी कहानी हमारे पुरखों ने हमारे दिलों के पन्नों पर लिख रखी है, जिसे समय नहीं मिटा सकता।''

□□

10 विद्रोही आत्माएं

उस इंसान की तबाही का अंदाजा करो जो किसी कुमारी के प्रेम में फंस जाये और उसे अपने जीवन की साथिन बना ले। अपने गाढ़े पसीने की कमाई और अपने कलेजे का ख़ून उसके पांवों पर निछावर कर दे। अपनी मेहनत का नतीजा अपनी कोशिशों का इनाम अपने हाथ से निकल जाने दे। फिर उसे अचानक यह मालूम हो जाये कि उस औरत ने, जिसे उसने दिनों की मेहनत तथा रातों के जागरण से पाया था, अपना दिल किसी दूसरे आदमी को दे दिया है ताकि वह उसके पैसे और जायदाद से फ़ायदा उठाये और उसके प्रेम की दुनिया को आबाद करे।

फिर उस औरत की बर्बादी को भी देखो, जिसने जवानी के नशे में अचानक होश में आकर अपने आपको एक मर्द के हवाले कर दिया हो। उसके माल और दौलत से गुलछर्रे उड़ाये हों। उसकी मुहब्बत तथा खातिरदारी से फायदा उठाया हो, लेकिन उसके अपने दिल को मुहब्बत की चिंगारी ने छुआ तक न हो और वह अपनी आत्मा को उस रूहानी मदिरा से तृप्त न कर सकती हो, जो आदमी की आखों से निकलकर औरत के दिल में टपकती है।

मैं रशीद बेग नामान को एक अर्से से जानता था। वह लेबनान का निवासी था और उसका जन्म बेरूत में हुआ था। वह एक बहुत पुराने अमीर घराने से संबंध रखता था, जिसमें रहन-सहन का पुराना तरीक़ा अब तक मौजूद था। वह पुरखों की उन बातों को बयान करने में गर्व का अनुभव करता था, जिनसे ख़ानदान की सज्जनता तथा गौरव दिखाई दे। वह रहने के ढंग और पुराने विश्वासों में अपने पुरखों के पीछे चला करता था। हां, आदतों और पोशाक में उसने तब्दीली की थी और वह पच्छिमी ढंग की पोशाक का शौकीन था। उसके ख़ानदान की औरतें पच्छिमी पोशाक में ऐसी मालूम होती थीं, जैसे हवा में उड़ने वाले पंछियों के झुंड।

रशीद बेग बड़ा नेकदिल और सुशील आदमी था। ज़्यादातर शामी लोग चीजों को सिर्फ़ ऊपरी निगाह से देखते हैं और उनके भीतरी तत्वों का विचार बिलकुल नहीं करते वे गीत के तत्वों को पहचानने की कोशिश नहीं करते बल्कि उन

आवाज़ों से आनंद हासिल करके रह जाते हैं, जो गीत को घेरे रहती हैं। वह अपना ध्यान उन बाहरी बातों पर जमाया करते हैं, जो जीवन के भेदों से दिव्य चक्षुओं को भी अंधा कर देती हैं; और चीजों के गुप्त रहस्यों को जानने के बजाय अपने आपको अस्थायी सुखों के लिये न्योछावर कर देते हैं। रशीद बेग उन आदमियों में से था, जो प्रेम को प्रकट करने या चीज़ों और इंसानों के संबंध में अंदाज़ा लगाने में जल्दबाजी कर बैठते हैं और उसके बाद अपनी जल्दबाजी पर शर्माते और पछताते हैं। लेकिन यह अनुभव उन्हें तब होता है जबकि समय हाथ से निकल जाता है और लज्जा एक वरदान के बजाय उपहास और तिरस्कार का कारण बन जाती है।

ये वे गुण और आदतें थीं, जिन्होंने रशीद बेग को गुलबदन के प्रेम में फंसा दिया। उसने गुलबदन से उस वक्त से पहले शादी कर ली, जबकि दोनों के दिल मिल जाते और उस वास्तविक प्रेम का प्रारंभ हो जाता, जो घर गृहस्थी के जीवन को स्वर्ग बना देता है।

मैं कुछ साल बेरूत से बाहर रहा और जब वापस आया तो रशीद बेग से मिलने गया। मैंने देखा कि रशीद का शरीर दुबला हो गया है, रंग बदल गया है और उसके चेहरे से दुःख और शोक के चिह्न दिखाई देते हैं। उसकी चिंता से भरी आंखें और उदास निगाह उसके दिल की बर्बादी और हृदय के अंधेरे का हाल खामोश जबान में बयान कर रही है। चूंकि बाहर से मुझे उसकी तकलीफ के कोई कारण दिखाई न देते थे, इसलिए मैंने सवाल किया, "ऐ भले आदमी, तुम्हें क्या तकलीफ है? और उस खुशी का क्या हुआ, जो तुम्हारे चेहरे से किरणों की तरह निकलती थी? और वह आनंद कहां गया, जो तुम्हारी जवानी के साथ जुड़ा हुआ था? क्या मौत ने तुम्हारे किसी प्यारे दोस्त के और तुम्हारे बीच फ़ासला पैदा कर दिया है या अंधेरी रातों ने तुम्हारी संपत्ति छीन ली, जो तुमने ख़ुशहाली के दिनों में जमा की थी? अपनी दोस्ती के ख़ातिर बताओ तो सही कि कौन-सी मुसीबत तुम पर आ पड़ी है?"

रशीद ने दर्द-भरी निगाहों से मेरी तरफ़ देखा और वह उन शब्दों पर विचार करने लगा, जो मैंने उसके अच्छे दिनों के बारे में कहे थे। फिर उसने आंखें बंद कर लीं और निराशा तथा क्लेश से भरी हुई आवाज में बोला, "अगर तुम्हारा कोई मुरब्बी मर जाए और तुम अपने आसपास देखो कि कई दूसरे दोस्त मौजूद हैं तो तुम सब्र करोगे और तुम्हारा माली नुकसान हो जाए और तुम ऐसा विचार करो कि जिस तरह यह दौलत आई थी, उसी तरह और भी आ जाएगी तो तुम उस अमीरी के आनंद में नुक़सान को भूल जाओगे। लेकिन अगर इंसान के दिल की शांति नष्ट हो जाए तो वह उसे कहां पा सकता है? और उसका बदला उसे कहां मिल सकता है? मौत अपना हाथ बढ़ाएगी और तुम्हें अपने बेरहम पंजों से दबाएगी, लेकिन तुम मर नहीं सकोगे, यहां तक कि हंसती ज़िंदगी की उंगलियां तुम्हें छूकर तुम्हारे चेहरे पर

ख़ुशी और मुस्कराहट के चिह्न पैदा कर देंगी। फिर बेसुधी के क्षणों में काल अपनी भयावनी आंखें तुम्हारी आंखों में डालकर तुम्हें गरदन से पकड़ेगा और बड़ी बेरहमी से तुम्हे ज़मीन पर पछाड़कर अपने फ़ौलादी पांवों से तुम्हें कुचल डालेगा और तुम पर हंसता हुआ चला जाएगा। कुछ अर्से के बाद वह शर्मिंदा होकर वापस आएगा, अपने मुलायम हाथों से तुम्हें उठाएगा और आशा के गीत गाकर तुम्हे व्याकुल कर देगा। रात की कल्पनाओं के साथ अनगिनत विपदाएं और तकलीफ़े तुम्हारे सामने आएंगी और सुबह होने तक तुम्हें उदास रखेंगी। तुम अपने विश्वास और दृढ़ निश्चय से परिचित हो और आशाओं में उलझे रहोगे।

''लेकिन अगर तुम्हारे नसीब में यह लिखा हो कि तुम्हारे अस्तित्व के कारण वह चीज़ उड़ जाए, जिसे तुम प्यार करते हो और जिसे खाने के लिए अपने दिल का टुकड़ा और पीने के लिए आंखों का नूर देते रहे हो, जिसे तुमने अपने दिल मे बिठा रखा हो और जिसकी खुराक तुम्हारा कलेजा हो तो तुम्हारा क्या हाल होगा? जब तुम यह देखो कि तुम्हारी चिड़िया तुम्हारे हाथ से निकलकर उड़ गई है और बादलों तक जा पहुंची है, फिर नीचे उतरी है और किसी दूसरे पिंजड़े में जा ठहरी है और उसकी वापसी की कोई उम्मीद नहीं है, तो फिर क्या करोगे? भगवान के लिए बताओ कि फिर तुम क्या कर सकोगे? तुम्हें धीरज और चैन कैसे मिलेगा? और तुम्हारी उम्मीदें कैसे ज़िंदा रह सकेंगी?''

रशीद बेग ने आख़िरी वाक्य इस तरह कहा, मानो उसका दम घुट रहा हो। वह अचानक अपने पैरों पर खड़ा हो गया और इस तरह कांपने लगा, जिस तरह हवा के झोंके से घास की सूखी पत्ती थरथराती है। उसने अपने हाथ सामने की ओर इस तरह फैलाए, मानो वह अपनी टेढ़ी उंगलियों से किसी चीज़ को पकड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहता हो। उसकी आंखों में ख़ून उतर रहा था और उसके चेहरे का रंग ग़ुस्से से लाल हो रहा था। उसकी आंखें बाहर निकली जा रही थीं और होंठ फड़क रहे थे। उसने एक चक्कर लगाया; जैसे वह अपने सामने एक अजगर को देख रहा हो, जो उसे निगल जाना चाहता हो। इसके बाद उसने मेरी तरफ़ देखा और उसके चेहरे का रंग पहले की तरह हो गया। उसका जोश और ग़ुस्सा दर्द तथा दु:ख में बदल गया। उसने रोते हुए कहा, ''वह औरत है! हां, वह औरत है, जिसे मैंने ग़रीबी और गुलामी के गड्ढे से निकालकर उसके सामने ख़ज़ाने डाल दिए और उसे इस लायक बनाया कि उसके शानदार कपड़े, सुंदर रूप और नौकर-चाकर देखकर दूसरी औरतें उससे ईर्ष्या करें।

''वह औरत, जिसे मेरा दिल प्यार करता था और जिसके क़दमों पर मैंने अपनी मुहब्बत और मेहरबानी निछावर कर दी और जिसे अपनी उदारता और कृपा से मैंने ऊपर उठाया, वह औरत, जिसका मैं सच्चा साथी, सच्चा दोस्त और ईमानदार पति था, वह बेईमान और बदमाश साबित हुई। अब वह ग़रीबी की

बेइज़्ज़त जिंदगी बसर करने के लिए एक दूसरे आदमी के पास चली गई है। वह औरत, जिसका मैं आशिक था; वह ख़ूबसूरत चिड़िया, जिसे मैंने अपने हृदय की धड़कनें दीं, आंखों की पुतलियों का तेज पिलाया, अपनी छाती को उसका पिंजड़ा बनाया और अपने जिगर का टुकड़ा खाने को दिया, वह चिड़िया मेरे हाथो से निकल गई है। इतना ही नहीं, बल्कि वह उड़कर एक ऐसे पिंजड़े में चली गई है, जो झड़बेरी की तीलियों का बना हुआ है, जिसमें खाने के लिए कांटे और कीड़े-मकोड़े तथा पीने के लिए जहर और कड़वा पानी है। उस पवित्र देवता ने, जिसने मेरे प्रेम का बागीचा आबाद किया था, भयंकर शैतान का रूप बनाया और अंधेरे मे जा फंसा, ताकि उसके पाप और उसकी काली करतूतें मुझे क्लेश दें।''

मैं अपनी जगह से उठा। मेरी आंखे भरी हुई थीं और हमदर्दी की भावना से मेरा हृदय भर गया था। फिर भी मैं चुपचाप इस तरह विदा हुआ मानो उसकी बाते बेसूद थीं। उसका घायल हृदय शोक मे डूबा हुआ था और प्रकृति को मंजूर न था कि कोई चिंगारी उसके हृदय के अंधेरे को प्रकाशित करे।

कुछ दिनो बाद मैं एक छोटे-से मकान में गुलबदन से मिला, जो पेड़ों और फूलों से घिरा हुआ था। जब गुलबदन रशीद बेग नामान के घर थी, तब उसने मेरा नाम सुन रखा था।

जब मैंने गुलबदन की सुंदर आंखें देखीं और उसकी मीठी आवाज़ का गीत सुना तो मैंने अपने दिल में कहा, 'क्या ऐसा हो सकता है कि यह औरत बदमाश हो? और क्या यह मुमकिन है कि यह साफ़-सुथरा चेहरा एक पापी दिल पर पर्दा डाल रहा हो?'

लेकिन मैंने इन विचारों को छोड़कर अपने हृदय से कहा, 'जिस चीज ने उस बदनसीब आदमी को तबाह किया है, क्या वह यही खूबसूरत चेहरा नहीं हो सकता? और क्या हमने देखा-सुना नहीं कि बाहरी सुंदरता भीतरी विनाशों और गहरे दु:खों का कारण बन जाती है? क्या वही चांद जो कवियों की सूक्ष्म कल्पनाओं मे प्रकट होता है, समुद्र में ज्वार-भाटा पैदा करके तूफ़ान का कारण नहीं बन जाता?''

हम दोनों बैठ गए और गुलबदन ने इस तरह कि मानो उसे मेरी चिंता का ज्ञान हो, यह नहीं चाहा कि मेरी हैरानियों और मेरी शंकाओं के बीच जो कशमकश जारी थी, वह ज़्यादा देर तक चलती रहे। इसलिए उसने अपने सुंदर सिर को अपने गोरे हाथ से सहारा दे दिया और संगीत जैसे मधुर स्वर में बोली, ''ऐ भले आदमी! मैं अब से पहले कभी तुमसे नहीं मिली हूं, लेकिन तुम्हारे विचार लोगों के मुंह से सुन चुकी हूं। मैं जानती हूं कि तुम मुसीबतजदा जमात की औरतों पर कृपा की निगाह रखते हो, उनकी कमजोरियों से तुम्हारी हमदर्दी है और उनके दु:ख का तुम्हें ठीक-ठीक ज्ञान है इसलिए मैं चाहती हू कि अपने दिल का हाल तुम्हें सुनाऊ और अपना

दिल खोलकर तुम्हारे सामने रख दूं ताकि मेरी मुसीबतों को देख सको और लोगों को बता सको कि गुलबदन बेईमान और बदमाश औरत नहीं है।

"मेरी उम्र अठारह साल की थी कि वक़्त और क़ुदरत ने मेरी क़िस्मत को रशीद बेगम नामान से बांध दिया। उसकी उम्र उस समय कोई चालीस साल की थी। उसने मुहब्बत की पेंगें बढ़ाईं और आख़िर में मुझे अपनी बीवी और अपने शानदार घर की मालकिन बना लिया। मेरे आसपास नौकरों-चाकरों की बहुत बड़ी तादाद थी। रशीद बेग ने मुझे क़ीमती कपड़े पहनाए। मेरे सिर, बांहों और गरदन को जवाहरात से सजाया और मुझे एक तोहफ़े के तौर पर अपने यार-दोस्तों के मकानों पर लिए-फिरा। उसके होंठों पर बहादुरी तथा जीत की मुस्कराहट नाच रही थी। वह कुतूहल और ललचाई निगाह से मेरी तरफ़ देखता था और जब औरतें मेरी खूबसूरती और फैशन की तारीफ़ करतीं तो उसका सिर गर्व से ऊंचा हो जाता। लेकिन शायद वह औरतों की उन कानाफूंसियों को नहीं सुनता था, जो वे अक्सर करती थीं। एक कहती, 'यह रशीद बेग की औरत है या बेटी?' दूसरी कहती, 'अगर रशीद बेग अपनी जवानी के दिनों में शादी करता तो उसकी बेटी की उम्र गुलबदन से ज़्यादा होती'।

"यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जबकि मैं ज़िंदगी के रहस्य से परिचित नहीं हुई थी। मेरे हृदय में मुहब्बत की पवित्र चिंगारी नहीं चमकी थी और मेरे भीतर सुख-दुःख का बीज नहीं बोया गया था। हां, यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जबकि मैं सुंदर कपड़ों और क़ीमती गहनों को ही, जिन्हें मैं पहने रहती थी, सच्चा शील समझती थी और जबकि मैं नींद से नहीं जागी थी। लेकिन जब मैं जाग गई और रोशनी ने मेरे दिल के सूनेपन को भर दिया और पाक आग ने मेरे दिल में एक जलन-सी पैदा कर दी तो मेरी आत्मा तक़लीफ़ों को महसूस करने लगी। जब मैं जागी तो मैंने देखा कि मेरे पर दाएं-बाएं हिल रहे हैं और मुझे उड़ाकर मुहब्बत के आकाश की ओर ले जाना चाहते हैं। लेकिन जब मैंने अपने आपको धर्मशास्त्र की उन कड़ियों में जकड़ा पाया, जिन्होंने मेरे जिस्म को उन बंधनों तथा उस धर्मशास्त्र को समझने से पहले ही जकड़ दिया था तो मैं कांप उठी। जब मैं जागी और इन बातों से परिचित हुई तो मुझे मालूम हुआ कि स्त्री का शील आदमी की कुलीनता, श्रेष्ठता, सहनशीलता और कृपा पर आधार नहीं रखता, बल्कि वह उस प्रेम में है, जो उसकी आत्मा को पुरुष की आत्मा में मिला देता है और उसकी प्रीति को पुरुष के हृदय से बांधकर दोनों को 'दो शरीर एक प्राण' कर देता है। जब यह दुःखदायी चीज़ मेरे सामने उजागर हुई तो मैंने देखा कि मैं रशीद बेग नामान के घर में एक चोर की तरह हूं। मैं उसकी रोटी खाती हूं और रात के अंधेरे में छिप जाती हूं। मैंने समझ लिया कि मैं जो हर दिन उसके सहवास में बिताती हूं, वह ऐसा झूठ है, जो मेरे माथे पर धोखेबाज़ी के जलते हुए अक्षरों में लिखा जा रहा है और आकाश और धरती

उसे देख रहे हैं और यह कि मैं उसकी नेकी और कृपा के बदले में उससे दिली-मुहब्बत नहीं कर सकती और न उसकी भलाई तथा प्रेम के बदले में अपना प्रेम दे सकती हूं। मेरे मन में विचार आया— और वह था— कि मैं उससे प्रेम करना सीखूं। लेकिन मैं उससे प्रेम करना न सीख सकी, क्योंकि प्रेम एक ताक़त है, जिसे हृदय पा नहीं सकते, बल्कि जो हृदयों को जीत लेती है। मैंने भगवान से प्रार्थना की और उसके सामने मैं बहुत रोई-धोई और रात की ख़ामोशी में आसमान के आगे बेकार गिड़गिड़ाई कि 'हे आसमान! मेरी आत्मा को उस पुरुष की आत्मा से मिला दे, जिसे मैंने अपनी ज़िंदगी का साथी बनाया है।' लेकिन आसमान ने ऐसा न किया, क्योंकि प्रेम हमारी आत्माओं में भगवान की ओर से जन्म लेता है, मांगने से नहीं मिलता।

''इस तरह मैं उस आदमी के घर पूरे दो साल तक रोती-बिलखती रही। मैं परिंदों की आज़ादी से ईर्ष्या करती थी और मुझे देखने वाली औरतें मेरे क़ैदख़ाने पर ईर्ष्या करती थीं। मैं रात-दिन विलाप करती रहती थी और हर रोज़ की भूख और प्यास से मरी जाती थी। आख़िर उन अंधेरे दिनों में एक रोज मुझे अंधेरे के पीछे रोशनी की मनोहर किरण दिखाई दी, जो मेरी आंख से निकल रही थी। मैंने देखा कि एक नौजवान ज़िंदगी के बहाव में अकेला बहा जा रहा है और उस मकान में किताबों और काग़ज़ों के ढेर में तनहा ज़िंदगी बिता रहा है। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं ताकि मैं उस किरण को न देख सकूं। मैंने अपने आपसे कहा 'तुम्हारी क़िस्मत में क़ब्र का अंधेरा लिखा है, तो तुम रोशनी का लालच किसलिए करती हो?' उसके बाद मैंने स्वर्ग के देवदूतों का एक गीत सुना, जिसकी लय ने मुझे तड़पा दिया। मैंने अपने कान बंद कर लिए और अपने आपसे कहा, 'तुम्हारे नसीब में रोना-पीटना ही लिखा हुआ है तो तुम गीत की उम्मीद किसलिए करती हो?' मैंने अपने कानों को बंद कर लिया ताकि मैं उस गीत को न सुन सकूं। लेकिन मेरी आंखें उस किरण को देखती रहीं, हालांकि वे बंद थीं। मैं डर से घबरा उठी। एक फ़क़ीर एक अमीर के महल के पास एक हीरे की तरह पड़ा था, लेकिन मुझमें न यह हिम्मत थी कि उसे उठा लूं और न उसे छोड़ ही सकती थी। मैंने रोना शुरू किया। मैं मुसीबतों से घिरी हुई थी। आख़िर मैं इंतज़ार और बेचैनी की चोट से ज़मीन पर गिर पड़ी।''

यहां गुलबदन एक क्षण के लिए रुक गई और उसने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें बंद कर लीं, मानो भूतकाल का वह नज़ारा उसकी आंखों के सामने फिर रहा था। वह मेरी आंखों से आंखें मिलाने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। उसके बाद उसने आंखें खोलीं और कहा, ''वह इंसान जो कभी न मिटने वाले जगत से आते हैं और असली जीवन से परिचित होने के पहले ही वापस चले जाते हैं, वे उस औरत के दुःख से परिचित नहीं हो सकते जिसके एक तरफ वह आदमी हो जिसका प्रेम

उसे भगवान की ओर से दिया गया हो और दूसरी तरफ़ वह आदमी हो, जिसके साथ वह दुनिया के धर्म-बंधनों से बंधी हुई है। यह एक दु:खभरी कहानी है, जो औरत, ख़ून और आंसुओं से लिखी जाती है और जिसे पढ़कर आदमी हंसते हैं, क्योंकि वे उसे समझ नहीं सकते और अगर समझ भी जाते हैं तो उनकी हंसी निर्दयता और व्यभिचार में बदल जाती है और वह क्रोध की आग के जोश में औरत के सिर पर बरस पड़ते हैं और उसके कानों को धिक्कार और भर्त्सना से भर देते हैं।

"यह एक दर्दनाक दास्तान है, जिसका नाटक रात के अंधेरे में उस हर औरत के दिल में चलता है, जिसका शरीर इससे पहले कि वह विवाह की असलियत को समझकर किसी आदमी की गृहस्थी के अहाते में बंद हो जाए, वह अपनी आत्मा को किसी दूसरे आदमी के लिए तड़पती हुई पाती है, जिससे वह सच्चे अर्थों में प्रेम करती है। यह एक भयंकर लड़ाई है, जिसकी शुरुआत औरत की कमज़ोरी ज़ाहिर होने से होती है और आख़िर उस समय तक नहीं होता, जब तक कि कमज़ोरी को मज़बूती की ग़ुलामी से छुटकारा न मिल जाए। मनुष्यों के सड़ियल धर्मशास्त्र और हृदय की पवित्र भावनाओं के बीच यह एक प्राणघातक युद्ध है—हां, उन्हीं पवित्र भावनाओं के बीच, जिनके कारण मैं कल तक जमीन पर पड़ी मौत की इच्छा कर रही थी और ख़ून के आंसू रो रही थी।

"लेकिन मैं उठी और मैंने अपने आपको दूसरी औरतों की मूर्खता से छुड़ा लिया, अपने पैरों को कमज़ोरी और ग़ुलामी के फंदों से अलग कर लिया और प्रेम और स्वतंत्रता के वायुमंडल में उड़ने लगी। अब मैं भाग्यवान हूं, क्योंकि मुझे उस पुरुष का सहवास हासिल है, जिसके हृदय से प्रेम की लपट मेरी तरफ़ लपकी। अब इस दुनिया में कोई शक्ति इतनी प्रबल नहीं है, जो मेरे इस सौभाग्य को मुझसे छीन सके, क्योंकि हमारी आत्माएं समझदारी और प्रीति के धागे में गुंथ चुकी हैं।"

गुलबदन ने मेरी ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा, मानो वह यह चाहती थी कि अपनी आंखों से मेरे हृदय के अंदर की स्थिति को देखकर यह मालूम कर ले कि मेरे मन पर उसकी बातों का क्या असर हुआ है। फिर वह मेरे भीतर से कोई आवाज़ सुनना चाहती थी। लेकिन मैं चुप रहा। इसलिए कि शायद मेरे बोलने से उसकी बातों के सिलसिले में कहीं रुकावट न पैदा हो जाए। गुलबदन ने अपनी बातों को जारी रखा। उसका स्वर बड़ा लुभावना था और उसमें पवित्रता तथा स्वतंत्रता की मिठास थी। उसने कहा, "लोग आपसे कहेंगे कि गुलबदन बेईमान और बेवफ़ा औरत है, जिसने अपने मन की काम-वासना की ग़ुलामी स्वीकार की और जो उस आदमी को छोड़कर चली गई, जिसने उसकी इज़्ज़त को बढ़ाकर उसे अपने घर की स्वामिनी बनाया। लोग आपसे कहेंगे कि गुलबदन बदचलन है, जो विवाह के पवित्र और धार्मिक विधान को तोडकर एक ऐसे पिंजरे में चली गई, जो नरक के कांटों से बना हुआ है उसने अपने शरीर की पोशाक उतार फेंकी है और पाप और

बेहयाई के कपड़े पहनकर वह धर्महीन बन गई है। वे आपसे कहेंगे कि गुलबदन ने लज्जा का बुर्का तार-तार कर दिया है। लेकिन ये लोग उन खाली गुफाओं की तरह हैं, जो आवाज़ों को लौटा देते हैं, मगर उनके मायने नहीं समझते। वे न तो दुनिया के जीवों के ईश्वरी धर्मशास्त्र से परिचित हैं और न धर्म के वास्तविक लाभ को ही समझते हैं। वे नहीं जानते कि अपराधी कौन है और निरपराध कौन है। वे अपनी अदूरदर्शिता मे सिर्फ़ बाहरी आचरणों को देखते हैं और उनके भीतरी भेदो पर निगाह नहीं डालते। वे मूर्खता के साथ फ़ैसले करते हैं और सबके लिए एक-सा ही फ़तवा देते हैं। उनके सामने अपराधी, सदाचारी और बदमाश सब बराबर हें।

"मैं अगर बदचलन और बेईमान थी तो रशीद बेग नामान के घर में थो, जिसने इससे पहले कि कुदरत मुझे आत्मा तथा प्रेम के संबधन मे कोई ढंग सिखाती, रीति-रिवाजों तथा अंधानुकरणों के दबाव से मुझे अपनी स्त्री बनाया। वहां मैं अपनी और भगवान की भी निगाह में नीच और पापिन थी, क्योंकि मैं भीख का टुकड़ा खाती थी और अपने शरीर से उसकी काम-वासना को पूरा करती थी। लेकिन अब मैं पवित्र हूं, क्योंकि प्रीति के शील ने मुझे स्वतंत्र कर दिया है। अब मैं पवित्र और ईमानदार हूं क्योंकि अपने शरीर को रोटी के बदले और जीवन को कपडों के बदले बेच डालना मैंने छोड़ दिया है। मैं तो उस वक्त बदचलन और पापी थी, किंतु तब लोग मुझे इज़्ज़तदार औरत समझते थे। आज मैं शीलवती और पवित्र हूं, लेकिन लोग मुझे तुच्छ और नीच समझते हैं, क्योंकि वे लोगों के व्यक्तित्व के विषय में उनके शरीरों पर से मत बनाते हैं और आत्मा का अनुमान जड़ वस्तुओ के पैमाने से करते हैं।"

गुलबदन खिड़की के क़रीब हो गई और उसने अपनी दाई ओर शहर की तरफ़ इशारा किया। उसकी आवाज़ पहले से ज़्यादा ऊंची हो गई और उसने ऐसी नफ़रत और हिकारत की आवाज में बोलना शुरू किया, मानो उसे रास्तों में, छतों पर और खिड़कियों में पतन और विकृति के निशान दिखाई दे रहे थे। उसने कहा, "देखो। उस शानदार और बड़े महल की दीवारों पर के कसीदाकारी के रेशमी पर्दे बेईमानी तथा झूठ का सबूत दे रहे हैं। उनकी छतें सुनहरे बेलबूटों से सजी हुई हैं, लेकिन उनके नीचे बनावटीपन के पहलू में झूठ भरा हुआ है। उन लड़कियों को देखो, जिनसे ऊपरी तौर पर सज्जनता और सुशीलता टपकती है, लेकिन दरअसल उनके अंदर पाप, बदमाशी और विनाश छिपा हुआ है। ये कलसदार क़ब्रें हैं, जिनमें आंखों के सुरमे और होंठों की लाली की तह में औरतों का कपट और फ़रेब छिपा हुआ है, उनके कानों में आदमियों का ग़रूर और पशुता, सोने और चांदी की चमक-दमक बनकर जगमगाती है। उस आलीशान महल की दीवारें गर्व तथा बड़प्पन से आकाश तक पहुंच रही हैं- लेकिन अगर उन्हें उस धोखेबाज़ी और झूठ का पता चल जाए, जो उन पर छाए हुए हैं तो वे फट जाए और टुकड़े टुकड़े होकर ज़मीन पर ढह

पड़ें। ये वे मकान हैं, जिनकी ओर एक देहाती ललचाई आंखों से देखता है, लेकिन अगर उसे मालूम हो जाए कि इन मकानों में रहने वालों में उस असली मुहब्बत का एक क़तरा भी मौजूद नहीं है, जिससे उसकी घरवाली का दिल भरा हुआ है तो उसे उनकी हालत पर तरस आ जाए।''

गुलबदन मेरा हाथ पकड़कर मुझे खिड़की के पास ले गई, जहां से महल नजर आ रहे थे और बोली, ''आओ, मैं तुम्हें उन लोगों के राज़ बताऊं, जिनका नमूना बनना तुम हरगिज पसंद न करोगे। उस महल की तरफ़ देखो, जिसके खंभे संगमरमर के बने हुए हैं, जिसके छज्जे पीतल के हैं और जिसकी खिड़कियां बिल्लौरी हैं। उस महल में एक अमीर आदमी रहता है, जिसने धन-दौलत को अपने कंजूस बाप से विरासत में पाया है। दो साल हुए, उसने एक ऐसी औरत से शादी की थी, जिसके बारे में इससे ज़्यादा कुछ मालूम न था कि उसका बाप ऊंचे खानदान का था और उसका रुतबा शहर के नामी-गिरामी लोगों में बहुत ऊंचा था। शादी के बाद अभी एक महीना भी पूरा न हुआ था कि उसने अपनी औरत को तड़पने के लिए छोड़ दिया और ख़ुद वासनाओं से भरी लड़कियों के साथ मौज उडाने लगा। उसने उस बेचारी को इस महल में इस तरह छोड़ दिया, जैसे कोई शराबी शराब की खाली सुराही को छोड़कर चला जाता है। औरत रोती-पीटती रही और ग़म और ग़ुस्से के दम घोंटने वाले दुःख में फंसी रही। लेकिन जब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसने सब्र किया। वह जान गई कि उसके आसू उन आसुओं से ज़्यादा क़ीमती हैं, जो उसके शौहर जैसे आदमी के लिए बहाए जाएं। अब वह औरत एक सुंदर नवयुवक के प्रेम में पड़ी है। उसकी प्रीति से उसका हृदय सुखी है और वह अपने पति की जायदाद से, जो उसके चारो तरफ़ बिखरी पड़ी है, अपने प्रेमी की जेबें भरती रहती है।

''अब उस मकान की तरफ़ देखो, जिसके आसपास बगीचा है। उसमे एक ऐसा आदमी रहता है, जिसका ख़ानदान पुराने जमाने मे राज़ करता था, लेकिन आजकल पैसे और दौलत की कमी तथा घराने के लोगों की मूर्खता के कारण वह घराना अपनी ऊची जगह से गिर गया है। कुछ साल हुए, इस आदमी ने एक बदसूरत, लेकिन अमीर औरत से शादी की और उसकी संपत्ति खींच लेने के बाद उसे भुला दिया और एक सुदरी के साथ संबंध स्थापित करके अपनी औरत को शर्म से अपनी उंगलियां काटने के लिए छोड़ दिया। अब वह अपने बालों को संवारने, आंखों मे सुरमा लगाने, होंठों और गालों पर लाली-पाउडर लगाने तथा अपने शरीर को रेशमी कपड़ों से सजाने के लिए घंटों ख़र्च कर देती है, ताकि कोई आदमी उस पर मोहित हो जाए, लेकिन बेचारी को उसमें कामयाबी नहीं मिलती।

''अब उस बडे मकान की तरफ़ देखो, जो बेलबूटों और तस्वीरों से सजा हुआ है यह एक सुदर लेकिन औरत का घर है उसका पहला ख़ाविंद

मर चुका है, जो बेहिसाब दौलत छोड़ गया है। इस औरत ने लोगो के उंगली उठाने से बचने के लिए एक मरियल जिस्म और कमज़ोर दिमाग़ वाले आदमी से शादी कर ली और अब वह शहद की मक्खी की तरह रहती है, जो फूलों से रस खींचती फिरती है।

"और उस मकान की तरफ़ देखो, जिसके कमरे बड़े-बड़े और मेहराबें सुदर हैं। यह एक ऐसे आदमी का घर है, जो बड़ा लंपट और लालची है। उसकी औरत के शरीर में सुंदरता के सारे गुण और दिल में मिठास का हर पहलू मौजूद है। उसके व्यक्तित्व में शारीरिक और आत्मिक गुणों का संयोग इस तरह है, जैसे अच्छी कविता में छंद के संगीत और अर्थ की विशेषता का संयोग होता है। वह ऐसी स्त्री थी, जो प्रेम में ही जीवन बिताती थी और प्रेम में ही मरती थी, लेकिन ज्यादातर लोगो की तरह उसके पिता ने भी उसके सयाने होने से पहले ही उसकी गरदन में अनुचित और भद्दे ब्याह का फदा डाल दिया। अब उसका शरीर दुबला-पतला है और कैद की गर्मी से वह मोमबत्ती की तरह पिघल रही है। वह धीरे- धीरे इस तरह उदास हो रही है। जैसे तूफ़ान के सामने भीनी ख़ुश्बू। वह किसी ऐसी चीज़ से प्रेम करने की इच्छा रखती है, जिसे वह अच्छी तरह जानती हो, लेकिन उसे कोई नजर नहीं आता। अपने इस रूखे जीवन से वह छुटकारा पाने और ऐसे आदमी की गुलामी से आज़ाद होने के लिए, जिसके दिन और राते रुपया जमा करने में खर्च होती हैं, मौत को गले लगाने की इच्छा रखती है। उसका पति उस घड़ी दात पीसता है, जबकि उसने एक ऐसी औरत से ब्याह किया, जिससे कोई लड़का नहीं होता जो उसके पैसों और जायदाद का वारिस बने।

"अब उस अकेले मकान की ओर देखो, जो बाग़ों के अंदर बसा हुआ है। यह मकान एक प्रतिभावान कवि का है, जिसका धर्म आध्यात्मिकता है। उसकी पत्नी मूर्ख एवं कठोर है। वह उसकी कविताओं पर हंसती है, क्योंकि वह उन्हें नहीं समझ सकती। वह उसकी रचनाओं की खिल्ली उड़ाती है और कहती है कि ये बड़ी अजीब हैं। इसलिए वह कवि अब एक विवाहिता औरत के प्रेम में फंसा है। उसको कवि का बहुत ध्यान रहता है और वह अपनी मुस्कराहट और नज़र से अपने विचारों को कवि के हृदय तक पहुंचाती है।"

गुलबदन कुछ देर तक चुप रही और खिड़की के पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गई, मानो वह उन राज़ भरे घरों के झूठ और कपट को देख-देखकर थक गई थी। इसके बाद वह फिर बोली, "यही वे महल हैं, जिनमें रहने को मैं कभी राजी नहीं हो सकती। यही वे कब्रें हैं, जिनमे मैं अपनी ज़िंदगी को दफनाना नहीं चाहती। यही वे लोग हैं, जिनके पजे से मैंने छुटकारा पाया है और उनके समाज से निजात हासिल कर ली है। यही वे लोग हैं, जो औरतों के शरीर से विवाह करते हैं, लेकिन उनकी आत्माओं से नफ़रत करते रहते हैं। मैं उन पर कोई दोष नहीं लगाती बल्कि

उनसे माफ़ी मांगती हुई उनको इस बात से घृणा करती हूं कि वे झूठ, धोखेबाज़ी और गंदगी के ग़ुलाम बन जाते हैं। मैं तुम्हारे सामने उनके दिलों के भेद और उनके समाज की व्यवस्था के भेद इसलिए नहीं खोल रही हूं कि मैं छिपाव और लुका-छिपी पसंद नहीं करती, बल्कि मैंने यह सब इसलिए कहा है कि मैं तुम्हें उस जाति की असली हालत बताऊं, जिसकी तरह कल तक मैं स्वयं थी और तुम पर उन लोगो की स्थिति को प्रकट करूं, जो मेरे संबंध में हर क़िस्म की बुरी बातें किया करते हैं और कहते हैं कि मैंने अपने जिस्म की प्यास बुझाने के लिए उनका साथ छोड दिया। मैं उनके कपटजाल से निकल गई और मेरी आखें इन्साफ़, सच्चाई और शील की रोशनी देखने लगीं। उन्होने अब मुझे अपनी बिरादरी से निकाल बाहर कर दिया है और मैं ख़ुश हू, क्योंकि घृणा उसी से की जाती है, जिसकी आत्मा ज़ुल्म और अत्याचार के ख़िलाफ विद्रोह करती है।

''मैं कल तक एक शिष्टाचारयुक्त दस्तरख्वान[1] की तरह थी और रशीद बेग उसी वक्त मेरे पास आता था, जब उसको भूख लगती थी। लेकिन हम दोनों की आत्माएं तुच्छ नौकरों की तरह एक-दूसरे से दूर थीं। जब मुझ पर सच्चाई उजागर हुइ तो मैंने ग़ुलामी से इन्कार कर दिया। मैंने अनुभव किया कि मैं अपनी सारी उम्र एक भयानक मूर्ति के सामने सिर झुकाकर नहीं बिता सकती। इसलिए मैंने धर्मशास्त्र को छोड़ दिया और अपने बंधन तोड़ डाले। लेकिन मैंने यह उस समय तक नही किया, जब तक कि प्रीति की पुकार मेरे कानों में न पहुंची। मैं रशीद बेग के मकान से इस तरह निकली, जिस तरह एक कैदी क़ैदखाने से भाग निकलता है। मैंने शान-शौकत, नौकर-चाकर, दौलत और इज़्ज़त को छोड़ दिया और अपने प्रीतम के उस घर में आ गई, जिसमें कोई दिखावटी शिष्टाचार नहीं है। मैं जानती थी कि मैं जो कुछ कर रही हूं, वह सच और मुनासिब है, क्योकि भगवान की इच्छा यह नहीं हो सकती कि मैं अपने हाथों से अपने पंख काट दूं और घुटनों पर सिर रखकर धूल में तडपती रहू, और यह कहती रहूं कि मेरा नसीब ऐसा ही था। भगवान की भी यह इच्छा नहीं हो सकती कि मैं रोने-धोने में सारी उम्र गुज़ारूं और रात भर दुःख से छटपटाकर यह कहती रहूं कि सुबह कब होगी और जब सुबह हो जाए तो यह कहूं कि दिन कब बीतेगा? कुदरत की यह इच्छा कभी नहीं हो सकती कि इंसान की बरबादी हो जाए, क्योंकि क़ुदरत ने इंसान के दिल की गहराइयों में नेकी की इच्छा छिपाकर रखी है और इंसान की भलाई में भगवान की रोशनी छिपी हुई है।

''यही है मेरी कहानी, ओ भले आदमी! और आसमान तथा ज़मीन के सामने मेरी यही फ़रियाद है। मैं पुकार-पुकार कर कहती हूं, लेकिन लोग अपने कान बंद कर लेते हैं और मेरी बात नहीं सुनते। वे अपनी आत्मा की पुकार की भी परवाह

---

1 वह चादर, जिस पर खाना रखा जाता है

नहीं करते, क्योंकि वे इस बात से डरते हैं कि कहीं समाज की बुनियादें न हिल जाएं। मैं इन्हीं मुसीबतों में फंसी रही। आख़िरकार मुझे नेकी की झलक नज़र आई। अब अगर मुझे इसी वक़्त मौत आ जाए तो मेरी आत्मा आकाश के सामने बिना किसी डर और आशंका के जा खड़ी होगी और वह ख़ुशी और उम्मीद से भरी हुई होगी। मैंने अपने विवेक के परदों को बड़े-बड़े धर्मज्ञों के सामने खोलकर रखा है और कठोरता से यह कह दिया है कि मैं कोई काम ऐसा नहीं करूंगी, जिसे मेरा दिल न चाहे। इंसान का मन भगवान के व्यक्तित्व का एक जादू है। मैं अपने दिल की आवाज़ और देवदूतों की पुकार के सिवाय किसी दूसरी आवाज़ की ताबेदारी नहीं करूंगी।

"यही है मेरी कहानी, जिसे बेरूत के लोग जीवन के लिए एक अभिशाप और समाजरूपी शरीर के लिए एक गंदा फोड़ा समझते हैं। लेकिन वे उस समय लज्जित होंगे, जबकि मुहब्बत की असलियत को जानेंगे— उस प्रेम को जो उनकी अंधेरी रूह में मौजूद है। उनके दिलों में यह सच्चाई उसी तरह उगेगी, जिस तरह मरे हुए इंसानों से भरी हुई ज़मीन से सूरज फूलों को पैदा करता है। उस समय वे मेरी क़ब्र के पास से गुज़रेंगे तो वहीं ठहर जाएंगे और कहेंगे कि यहीं वह गुलबदन सोती है, जिसने इसानी ज़रूरत के सड़े-गले बंधनों से अपने आपको आज़ाद किया और यह इसलिए किया कि वह असली मुहब्बत की इज़्ज़त को बनाए रखे।"

गुलबदन की बातें अभी ख़त्म नहीं हुई थीं कि इतने में दरवाज़ा खुला और एक सुंदर और सुडौल शरीर का नौजवान अंदर आया। उसकी आंखों से जादू की किरणें निकल रही थीं और उसके होंठों पर मुस्कराहट थी। गुलबदन खड़ी हो गई और बड़े प्रेम से उसका हाथ पकड़कर उसे मेरे पास ले आई। उसने उस नौजवान को मेरा नाम बड़े आदर से और उसका नाम मुझे बड़ी सादगी से बताया। मैं तुरंत समझ गया कि यह वही नौजवान है, जिसके लिए गुलबदन ने दुनिया को झुठलाया और उसके विधानों तथा रूढ़ियों का विरोध किया।

हम तीनों बैठ गए। वहां इतनी ख़ामोशी छा गई कि ऐसा मालूम होता था, मानो हमारी आत्माएं देवदूतों की ओर उड़ी जा रही हैं। मैंने उन पर निगाह डाली। वे दोनों एक-दूसरे के पहलू में बैठे थे और ऐसा मालूम होता था, जैसे दोनों के बीच में कोई फासला नहीं है। मैं गुलबदन की कहानी का मतलब फ़ौरन समझ गया और जान गया कि उस समाज के खिलाफ, जो विद्रोही आत्माओं से नफ़रत करता है— उसकी शिकायत का क्या मतलब है। मैंने देखा कि मेरे सामने दो शरीर हैं, लेकिन उनमें एक ही स्वर्गीय आत्मा बस रही है। दोनों यौवन और एकता की मूर्तियां हैं। उनके हृदयों में सच्चा प्रेम निवास करता रहता है और वे लोगों के भले-बुरे कहने की परवाह नहीं करते। दोनों में दिली एकता मौजूद है और दोनों के साफ तथा पाक चेहरों में और पवित्रता की झलक दिखाई देती है मैंने अपने जीवन

है जिन्हें धर्म ने नीच ठहराया है और जिन्हे समाज ने अपने मे से निकाल बाहर कर दिया है।

थोडी देर तक मैं बैठा रहा लेकिन इसके बाद किसी तरह की बातचीत किए बिना वहां से विदा हुआ और उस छोटे-से मकान से, जो प्रेम और नीति का मंदिर था, बाहर निकला। मैं उन गलियों और महलों के बीच से गया, जिनके रहस्य गुलबदन ने मुझे बताए थे। मैं उसकी बातों और उनके आरंभ और अंत पर विचार करता जा रहा था, लेकिन अभी मैं उस बस्ती से निकला न था कि मुझे रशीद बेग नामान की याद आई। मैंने अपने मन में कहा, 'वह मुसीबतज़दा आदमी बरबाद हो गया है। लेकिन क्या आसमान उसकी बात को सुनेगा, जबकि उसके सामने गुलबदन भी अपने ऊपर किए गए अत्याचारों की शिकायत पेश करेगी? क्या वह स्त्री अपराधी है, जिसने उसे छोड़ दिया और अपनी स्वतंत्र इच्छा का हुक्म माना? या वह आदमी दोषी है, जिसने उसके साथ उस समय गृहस्थी का संबंध जोड़ा, जबकि उसकी आत्मा मुहब्बत को पहचानती न थी? दोनों में अत्याचारी कौन है और अत्याचार-पीड़ित कौन? दोनों में अपराधी कौन है और निरपराध कौन है?'

इसके बाद मैं अपने मन में सोचने लगा कि दुनिया में ऐसी स्त्रियां बहुत हैं, जो अपने निर्धन पतियों को छोड़कर धनवान लोगों से संबंध क़ायम कर लेती हैं, क्योंकि उनकी अंदरूनी इच्छा यह होती है कि 'हम क़ीमती कपड़े पहनें और भोग-विलास की ज़िंदगी बिताएं।' यह इच्छा उन्हें अंधा कर देती है और वे अपमानित तथा लांछित जीवन-बिताने को तैयार हो जाती हैं। लेकिन क्या गुलबदन की भी यही लालसा थी, जो एक धनी आदमी के शानदार महल से निकलकर एक ग़रीब आदमी की झोंपड़ी में चली गई है और ऐसी झोंपड़ी में पहुंच गई है, जहां पुरानी किताबों के ढेर के सिवाय और कुछ नहीं है? बहुत-सी स्त्रियां ऐसी हैं, जो नारी के स्वाभाविक शील तथा लज्जा को मार देती हैं और कामवासना को जीवित रखती हैं। वे अपने पतियों को अपनी शारीरिक वासनाओं की तृप्ति के लिए रोते-चिल्लाते छोड़ देती हैं और दूसरे लोगों के पास चली जाती हैं। क्या गुलबदन ने अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए ही ऐसा किया है और अपने आपको अपने दिलपसंद नौजवान के हवाले कर दिया है? और क्या वह ऐसा नहीं कर सकती थी कि अपनी कामवासनाओं को अपने पति के घर पर रहकर ही पूरा कर लेती और उन लोगों से छिपे तौर से संबंध रखती, जो उसकी सुंदरता के उपासक और उसकी प्रीति पर मर मिटने वाले थे? गुलबदन एक पामाल औरत थी। वह नेकी की इच्छुक थी और नेकी उसे मिल गई। यही वह सच्चाई है, जिसके कारण समाज उसे हिकारत की निगाह से देखता है और धर्मशास्त्र कहता है कि उसकी गरदन उड़ा देनी चाहिए

इसके बाद मुझे विचार आया कि क्या स्त्री के लिए यह मुनासिब है कि वह अपनी नेकी को अपने पति के विनाश की क़ीमत देकर खरीदे? इसका उत्तर मेरे विवेक ने यह दिया कि क्या पुरुष के लिए यह उचित है कि वह अपनी नेकी के लिए अपनी औरत की इच्छाओं को ग़ुलाम बना ले?

मैं चलता जा रहा था और गुलबदन की आवाज़ मेरे कानों मे गूंज रही थी। अंत में मैं शहर के पास पहुंच गया। सूरज डूब रहा था। बाग़-बगीचे शांति तथा तनहाई की चादर में छिप जाना चाहते थे और पक्षी शाम के गीत गा रहे थे। मैं ठहर गया। मैंने अपने आपसे कहा, 'आज़ादी के स्वर्ग के सामने ये पेड सुगंधित हवा के झोंकों का आनंद ले रहे हैं और सूरज और चांद की किरणों से आनंदित हो रहे हैं। ये पक्षी आज़ादी की हवा में विहार कर रहे हैं। ये फूल आजादी के वातावरण में महक फैला रहे हैं। उनकी आंखों के सामने आने वाले प्रभात का सौंदर्य प्रकाश फैलाता है। इस धरती पर जो भी चीज़ है, वह अपनी इच्छा के अनुसार ज़िंदगी बसर करती है और अपनी आज़ादी पर फ़ख्र करती है। लेकिन इंसान अब वैभव से वंचित है, क्योंकि उनकी पाक रूहें दुनिया के तंग विधानों की गुलाम हैं। उनकी रूहों और जिस्मों के लिए एक ही ढांचे में ढला हुआ क़ानून बनाया गया है और उनकी इच्छाओं तथा ख़्वाहिशों को एक छिपे हुए और तंग क़ैदख़ाने में बंद कर दिया गया है। उनके दिमाग़ के लिए एक गहरी और अंधेरी क़ब्र खोदी गई है। अगर कोई उसमें से उठे और उनके समाज और उसके कारनामों से अलग हो जाए तो वे कहते हैं कि यह आदमी विद्रोही और बदमाश है। यह बिरादरी से ख़ारिज है और मार डालने लायक़ है! लेकिन क्या इंसान को क़यामत तक इस सड़ियल समाज की ग़ुलामी में ज़िंदगी बिताते रहना चाहिए या उसे अपनी आत्मा को इन बंधनों से मुक्त करा लेना चाहिए? क्या आदमी को मिट्टी में पड़े रहना चाहिए या अपनी आखों को सूर्य बना लेना चाहिए, ताकि उसके शरीर की छाया कूड़े-करकट पर पड़ती हुई नज़र न आए?

❑❑

6. तूफ़ान

यूसुफ-अल-फाख़री की उम्र उस समय तीस वर्ष की थी, जब उन्होंने संसार त्याग दिया और उत्तरी लेबनान में कदेसा की घाटी के समीप एक एकान्त आश्रम में रहने लगे। आसपास के देहातों में यूसुफ़ के बारे में तरह-तरह की किवदन्तियां सुनने में आती थीं। कुछ का कहना था कि वह धनी-मानी परिवार के थे और किसी स्त्री से प्रेम करने लगे थे, जिसने उनके साथ विश्वासघात किया। अतः जीवन से निराश होकर उन्होंने एकान्तवास ग्रहण कर लिया। कुछ लोगों का कथन था कि वह एक कवि थे और कोलाहलपूर्ण नगर को त्यागकर इस आश्रम में इसलिए रहने लगे, जिससे एकान्त में अपने विचारों को संकलित कर सकें और अपनी ईश्वरीय प्रेरणाओं को छन्दोबद्ध कर सकें। परन्तु कुछ का विश्वास था कि वह एक रहस्यमय व्यक्ति थे और उन्हें अध्यात्म में ही सन्तोष मिलता था, यद्यपि अधिकांश लोगों का मत था कि वे पागल थे।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है, इस मनुष्य के बारे में मैं किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पाया, क्योंकि मैं जानता था कि उसके हृदय में कोई गहरा रहस्य छिपा है, जिसका ज्ञान कल्पना-मात्र से प्राप्त नहीं किया जा सकता। एक अरसे से मैं इस अनोखे मनुष्य से भेंट करने की सोच रहा था। मैंने अनेक प्रकार से इनसे मित्रता स्थापित करने का प्रयास किया, इसलिए कि मैं इनकी वास्तविकता का पता लगा सकूं और यह पूछकर कि इनके जीवन का क्या ध्येय है, इनकी कहानी को जान लूं। किन्तु मेरे सभी प्रयास विफल रहे। जब मैं प्रथम बार उनसे मिलने गया तो वे लेबनान के पवित्र देवदारों के जंगल में घूम रहे थे। मैंने उनका चुने हुए शब्दों की सुन्दरतम भाषा में अभिवादन किया, किन्तु उन्होंने उत्तर में ज़रा-सा सिर झुकाया और लम्बे डग भरते हुए आगे निकल गए।

दूसरी बार मैंने उन्हें आश्रम के एक छोटे-से अंगूरों के बग़ीचे मे खड़े देखा। मैं फिर उनके निकट गया और उनसे पूछा, "देहात के लोग कहा करते हैं कि इस आश्रम का निर्माण चौदहवीं शताब्दी में सीरिया-निवासियों के एक सम्प्रदाय ने किया था क्या आप इसके इतिहास के बारे में कुछ जानते हैं ?

उन्होंने उदासीन भाव में उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि उस आश्रम को किसने बनवाया और न मुझे यह जानने की परवाह है।" उन्होंने मेरी ओर पीठ फेर ली और बोले, "तुम अपने बाप-दादों से क्यों नहीं पूछते, जो मुझसे अधिक बूढ़े हैं और इन घाटियों के इतिहास से मुझसे कहीं अधिक परिचित हैं?"

अपने प्रयास को बिल्कुल ही व्यर्थ समझकर मैं लौट आया।

इस प्रकार दो वर्ष बीत गए। उस निराले मनुष्य की झक्की ज़िन्दगी ने मेरे मस्तिष्क में घर कर लिया और वह बार-बार मेरे सपनों में आ-आकर मुझे तग करने लगी।

□□

शरद ऋतु में एक दिन जब मैं यूसुफ-अल-फ़ाखरी के आश्रम के पास की पहाडियों तथा घाटियों में घूमता फिर रहा था, अचानक एक प्रचंड आंधी और मूसलाधार वर्षा ने मुझे घेर लिया और तूफ़ान मुझे एक ऐसी नाव की भांति इधर-से-उधर भटकाने लगा, जिसकी पतवार टूट गई हो और जिसका मस्तूल सागर की तूफानी लहरों से छिन्न-भिन्न हो गया हो। बड़ी कठिनाई से मैंने अपने पैरों को यूसुफ साहब के आश्रम की ओर बढ़ाया और मन-ही-मन सोचने लगा, 'बड़े दिनों की प्रतीक्षा के बाद यह एक अवसर हाथ लगा है। मेरे वहां घुसने के लिए तूफ़ान एक बहाना बन जाएगा और अपने भीगे हुए वस्त्रों के कारण मैं वहां काफी समय तक टिक सकूगा।'

जब मैं आश्रम में पहुचा तो मेरी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। मैंने आश्रम के द्वार को खटखटाया तो जिनकी खोज में मैं था, उन्होंने ही द्वार खोला। अपने एक हाथ में वह एक ऐसे मरणासन्न पक्षी को लिए हुए थे, जिसके सिर में चोट आई थी और उसके पंख कट गए थे। मैंने यह कहकर उनकी अभ्यर्थना की, "कृपया मेरे इस बिना आज्ञा के प्रवेश और कष्ट के लिए क्षमा करें। अपने घर से बहुत दूर इस बढ़ते हुए तूफ़ान में मैं बुरी तरह फंस गया था।"

त्यौरी चढ़ाकर उन्होंने कहा, "इस निर्जन वन में अनेक गुफाएं हैं, जहां तुम शरण ले सकते थे।"

जो हो, उन्होंने द्वार बंद नहीं किया। मेरे हृदय की धड़कन पहले से ही बढ़ने लगी; क्योंकि शीघ्र ही मेरी बड़ी तमन्ना पूरी होने जा रही थी। उन्होने पक्षी के सिर को बड़ी सावधानी से सहलाना शुरू किया और इस प्रकार वे अपने एक ऐसे गुण को प्रकट करने लगे, जो मुझे अति प्रिय था। इस मनुष्य के दो प्रकार के परस्पर-विरोधी गुणों—दया और निष्ठुरता—को एक साथ देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा था। लगा, हम गहरी निस्तब्धता के बीच खड़े हैं। उन्हें मेरी उपस्थिति पर क्रोध आ रहा था लेकिन मैं वहां ठहरे रहना चाहता था।

प्रतीत होता है कि उन्होने मेरे विचारों को भाप लिया क्योंकि उन्होंने ऊपर

आकाश की ओर देखा और कहा, "तूफ़ान साफ है और वह खट्टा (बुरे मनुष्य का) मांस खाना नहीं चाहता। तुम इससे बचना क्यों चाहते हो?"

कुछ व्यंग्य से मैंने कहा, "हो सकता है, तूफान खट्टी और नमकीन वस्तुए न खाना चाहता हो, किन्तु प्रत्येक पदार्थ को वह ठण्डा और शक्तिहीन बना देने पर तुला है। निस्संदेह यह मुझे फिर से पकड लेगा तो खाए बिना नहीं छोड़ेगा।"

उनके चेहरे का भाव यह कहते-कहते अत्यन्त कठोर हो गया, "यदि तूफ़ान ने तुम्हें निगल लिया होता तो तुम्हारा बड़ा सम्मान किया होता, जिसके तुम योग्य भी नहीं हो।"

मैंने स्वीकार करते हुए कहा, "हां, श्रीमन्! में इसीलिए तूफान से छिप गया कि कहीं ऐसा सम्मान न पा जाऊं, जिसके योग्य नहीं हूं।"

इस चेष्टा में कि वह अपने चेहरे की मुस्कान मुझसे छिपा सकें, उन्होंने अपना मुह फेर लिया। वह अगीठी के पास रखी हुई एक लकड़ी की बेंच की ओर बढ़े और मुझसे कहा कि मैं विश्राम करूं और अपने कपड़ों को सुखा लूं। मैं अपने उल्लास को बड़ी कठिनाई से छिपा सका।

मैंने उन्हें धन्यवाद किया और स्थान ग्रहण किया। वह भी मेरे सामने ही एक बेंच पर, जो पत्थर को काटकर बनाई गई थी, बैठ गएं। वह अपनी उंगलियों को एक मिट्टी के बर्तन मे जिसमें एक प्रकार का तेल रखा हुआ था, बार-बार डुबोने लगे और उस पक्षी के सिर तथा पंखों पर मलने लगे।

बिना ऊपर को देखे ही वह बोले, "शक्तिशाली वायु ने इस पक्षी को जीवन और मृत्यु के बीच पत्थरों पर दे मारा था।"

तुलना-सी करते हुए मैंने उत्तर दिया, "और भयानक तूफ़ान ने, इससे पहले कि मेरा सिर चकनाचूर हो जाए और मेरे पर टूट जाएं, मुझे भटकाकर आपके द्वार पर भेज दिया है।"

उन्होंने गंभीरतापूर्वक मेरी ओर देखा और बोले, "मेरी तो यही चाह है कि मनुष्य पक्षियों का स्वभाव अपनाए और तूफ़ान मनुष्य के पर तोड़ डाले, क्योकि मनुष्य का झुकाव भय और कायरता की ओर है और जैसे ही वह अनुभव करता है कि तूफान जाग गया है, वह रेंगते-रेंगते गुफाओं और खाइयों में घुस जाता है और अपने को छिपा लेता है।"

मेरा उद्देश्य था कि उनके स्वत: स्वीकृत एकान्तवास की कहानी जान लूं, इसीलिए मैंने उन्हें यह कहकर उत्तेजित किया, "हां, पक्षी के पास एक ऐसा सम्मान और साहस है, जो मनुष्य के पास नहीं है। मनुष्य विधान तथा सामाजिक आचारो के साये में विश्वास करता है, जो उसने अपने लिए स्वयं बनाए हैं। किन्तु पक्षी उसी स्वतंत्र-शाश्वत् विधान के अधीन रहते हैं, जिसके कारण पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपने रास्ते पर निरन्तर घूमती रहती है

उनकी आंखें और चेहरा चमक उठा, मानो मुझमें उन्होंने एक समझदार शिष्य को पा लिया हो। बोले, "बहुत सुन्दर! यदि तुम्हें स्वयं अपने शब्दों पर विश्वास है तो तुम्हें सभ्यता और उसके दूषित विधान और अति प्राचीन परम्पराओ को तुरन्त ही त्याग देना चाहिए और पक्षियों की तरह ऐसे शून्य स्थान में रहना चाहिए, जहा आकाश और पृथ्वी के महान विधान के अतिरिक्त कुछ भी न हो।"

"विश्वास रखना एक सुन्दर बात है", मैंने कहा, "किन्तु उस विश्वास को प्रयोग में लाना साहस का काम है। अनेक मनुष्य ऐसे हैं, जो सागर की गर्जन के समान चीखते रहते हैं, लेकिन उनका जीवन खोखला और प्रवाहहीन होता है जैसे सड़ता हुआ दलदल। और अनेक लोग ऐसे भी हैं, जो अपने सिरों को पर्वत की चोटी से भी ऊपर उठाये चलते हैं, किन्तु उनकी आत्माएं कन्दराओं के अन्धकार में सोई पड़ी रहती हैं।"

वह कांपते हुए अपनी जगह से उठे और पक्षी को खिड़की के ऊपर एक तह किए हुए कपड़े पर रख आए। फिर उन्होने कुछ सूखी लकडियां अगीठी में डाल दीं और बोले, "अपने जूतों को उतार दो और अपने पैरो को सेंक लो, क्योंकि भीगे रहना आदमी की सेहत के लिए हानिकारक है। अपने कपड़ों को ठीक से सुखा लो और आराम से बैठो।"

यूसुफ साहब के इस मधुर आतिथ्य ने मेरी आशाओं को उभार दिया। मैं आग के और पास खिसक गया और मेरे भीगे कुरते से पानी भाप बनकर उडने लगा। जब वह भूरे आकाश को निहारते हुए ड्योढ़ी पर खड़े थे, मेरा मस्तिष्क उनके आन्तरिक रहस्यों को खोजता दौड़ रहा था। मैंने एक अनजान की तरह उनसे पूछा, "क्या आप बहुत दिनों से यहां रह रहे हैं?"

मेरी ओर देखे बिना ही उन्होंने शान्त स्वर में कहा, "मैं इस स्थान पर उस समय आया था, जब यह पृथ्वी निराकार तथा शून्य थी, जब इसके रहस्यों पर अन्धकार छाया हुआ था, और ईश्वर की आत्मा पानी की सतह पर तैरती रहती थी।"

यह सुनकर मैं अवाक् रह गया। उद्वेलित और अस्त-व्यस्त ज्ञान को समेटने का संघर्ष करते हुए मन-ही-मन बोला, 'कितने अजीब व्यक्ति हैं ये, और कितना कठिन है इनकी वास्तविकता को जान पाना! किन्तु मुझे सावधानी के साथ, धीरे-धीरे और संतोष रखकर, तब तक चोट-पर-चोट करनी होगी जब तक कि इनकी मूकता मुखर न हो जाए और इनकी विचित्रता समझ में न आ जाए।'

□□

रात्रि अन्धकार की अपनी चादर उन घाटियों पर फैला रही थी। मतवाला तूफान चिघाड़ रहा था और वर्षा बढती ही जा रही थी। मैं सोचने लगा कि बाइबल वाली बात चैतन्य को नष्ट करने और ईश्वर की धरती पर से मनुष्य की गदगी को धोने के लिए फिर से आ रही है

जान पडा, मानो तत्वों की क्रान्ति ने यूसुफ़ साहब के हृदय में एक ऐसी शान्ति उत्पन्न की है, जो प्राय: स्वभाव पर अपना असर छोड़ जाती है और एकान्तता को प्रसन्नता मे प्रतिबिम्बित कर जाती है। उन्होंने दो मोमबत्तिया जलाई और तब मेरे सम्मुख शराब की सुराही और एक बडी तश्तरी में रोटी, मक्खन, फल, मधु और कुछ सूखे मेवे लाकर रखे। वह मेरे पास बैठ गए और खाने की थोडी मात्रा के लिए— उसकी सादगी के लिए नही— क्षमा माग कर, उन्होंने मुझसे भोजन करने को कहा।

हम उस समझी-बूझी निस्तब्धता मे हवा के विलाप तथा वर्षा के चीत्कार को सुनते हुए साथ-साथ भोजन करने लगे। साथ ही मैं उनके चेहरे को घूरता रहा और उनके हृदय के रहस्यों को कुरेद-कुरेदकर निकालने का प्रयास करता रहा। उनके असाधारण अस्तित्व के सम्भव कारण पर भी सोचता रहा।

भोजन समाप्त करके उन्होंने अंगीठी पर से एक पीतल की केतली उठाई और उसमें से शुद्ध सुगन्धित कॉफी दो प्यालो मे उडेल दी। फिर उन्होंने एक छोटे-से लकडी के बक्स को खोला और, 'भाई' शब्द से सम्बोधित कर, उसमें से एक सिगरेट भेंट की। कॉफी पीते हुए मैंने सिगरेट ले ली, किन्तु जो कुछ भी मेरी आखे देख रही थी, उस पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।

उन्होंने मेरी ओर मुस्कराते हुए देखा और अपनी सिगरेट का एक लम्बा कश खींचकर तथा कॉफी की एक चुस्की लेकर कहा, "तुम जरूर ही मदिरा, कॉफी और सिगरेट यहा पाकर सोच मे पड़ गए हो तथा मेरे खान-पान, ऐश-आराम पर भी आश्चर्य कर रहे हो। तुम्हारी व्यग्रता सभी प्रकार से न्यायोचित है, क्योंकि तुम भी उन्हीं लोगों मे से एक हो, जो इन बातो में विश्वास करते हैं कि लोगो से दूर रहने पर मनुष्य जीवन से भी दूर हो जाता है और ऐसे मनुष्य को उस जीवन के सभी सुखों से वचित रहना चाहिए।"

मैंने तुरन्त स्वीकार कर लिया, "हां, ज्ञानियों का यही कहना है कि जो केवल ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए संसार को त्याग देता है, वह जीवन के समस्त सुख और आनन्द को अपने पीछे छोड आता है, केवल ईश्वर द्वारा निर्मित वस्तुओं पर सन्तोष करता है तथा पानी और पौधो पर ही जीवित रहता है।"

जरा रुककर गहन विचारो में निमग्न हो वह बोले, "मैं ईश्वर की भक्ति तो उसके जीवों के बीच रहकर भी कर सकता था, क्योकि भक्ति के लिए एकान्त नही चाहिए। मैंने ससार को इसलिए नहीं छोड़ा कि मुझे ईश्वर को पाना था, क्योकि उसे तो मैं हमेशा से अपने माता-पिता के घर पर भी देखता आया हू। मैने मनुष्यों का त्याग केवल इसलिए किया कि उनका और मेरा स्वभाव नही मिलता था और उनकी कल्पना मेरी कल्पनाओ से मेल नहीं खाती थी मैंने आदमी को इसलिए छोडा क्योंकि मैंने देखा कि मेरी आत्मा के पहिए एक दिशा में घूम रहे थे और

दूसरी दिशा में घूमते हुए दूसरी आत्माओं के पहियों से जोर से टकरा रहे हैं। मैंने मानव-सभ्यता को छोड दिया, क्योंकि मैने देखा कि वह एक ऐसा पेड़ है, जो अत्यन्त पुराना और भ्रष्ट हो चुका है, किन्तु है शक्तिशाली और भयानक। उसकी जड़े पृथ्वी के अन्धकार मे बन्द हैं और उसकी शाखाएं बादलों में खो गई हैं, किन्तु उसके फूल लोभ, अधर्म और पाप से बने हैं और फल दु:ख, असन्तोष और भय से। धार्मिक मनुष्यों ने यह बीड़ा उठाया है कि जो अच्छा है, उसे उस सभ्यता में भर देगे और उसके स्वभाव को बदल देंगे, किन्तु वे सफल नहीं हो पाए है। वे निराश और दु:खी होकर मृत्यु को प्राप्त हुए।''

यूसुफ़ साहब अंगीठी की ओर थोडा-सा झुके, मानो अपने शब्दों की प्रतिक्रिया जानने की प्रतीक्षा मे हों। मैंने सोचा कि श्रोता ही बने रहना सबसे अच्छा है। वह कहने लगे, ''नहीं, मैंने एकान्तवास इसलिए नहीं अपनाया कि मैं एक सन्यासी की भाति जीवन बिताऊ, क्योकि प्रार्थना, जो हृदय का गीत है, चाहे सहस्रों की चीख-पुकार की आवाज से भी घिरी हो, ईश्वर के कानो तक अवश्य पहुच जाएगी।

''एक वैरागी का जीवन बिताना तो शरीर और आत्मा को कष्ट देना है तथा इच्छाओ का गला घोटना है। यह एक ऐसा अस्तित्व है, जिसके मै नितान्त विरुद्ध हूं, क्योकि ईश्वर ने आत्माओ के मन्दिर के रूप मे ही शरीर का निर्माण किया है और हमारा यह कर्तव्य है कि उस विश्वास को, जो परमात्मा ने हमे प्रदान किया है, योग्यतापूर्वक बनाए रखें।

''नहीं, मेरे भाई! मैंने परमार्थ के लिए एकान्तवास नहीं अपनाया। अपनाया तो केवल इसलिए कि आदमी और उसके विधान से, उसके विचारों और उसकी शिकायतों से, उसके दु:ख और विलापों से दूर रहूं।

''मैंने एकान्तवास इसलिए अपनाया कि उन मनुष्यों के चेहरे न देख सकूं, जो अपना विक्रय करते हैं और उसी मूल्य से ऐसी वस्तुएं खरीदते हैं, जो आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही रूप में उनसे भी घटिया हैं।

''मैंने एकान्तवास इसलिए ग्रहण किया कि कहीं उन स्त्रियों से मेरी भेट न हो जाए, जो अपने होंठो पर भांति-भांति की मुस्कान फैलाए गर्व से घूमती रहती है, जबकि उनके सहस्रो हृदयों की गहराइयो में बस एक ही उद्देश्य विद्यमान है।

''मैंने एकान्तवास इसलिए ग्रहण किया कि मैं उन आत्मसन्तुष्ट व्यक्तियों से बच सकू, जो अपने सपनो में ही ज्ञान की झलक पाकर यह विश्वास कर लेते हैं कि उन्होने अपना लक्ष्य पा लिया।

''मैं समाज से इसलिए भागा कि उन लोगो से दूर रह सकू, जो अपनी जागृति के समय मे सत्य का आभास-मात्र पाकर संसार भर मे चिल्लाते फिरते हैं कि उन्होने सत्य को पूर्णत प्राप्त कर लिया है

''मैंने ससार का त्याग किया और एकान्तवास को अपनाया, क्योंकि मैं ऐसे लोगों के साथ भद्रता बरतते थक गया था, जो नम्रता को एक प्रकार की कमज़ोरी, दया को एक प्रकार की कायरता तथा क्रूरता को एक प्रकार की शक्ति समझते हैं।

''मैंने एकान्तवास अपनाया, क्योकि मेरी आत्मा उन लोगो के समागम से थक चुकी थी, जो वास्तव में इस बात पर विश्वास करते हैं कि सूर्य, चांद और तारे उनके खजानों से ही उदय होते हैं और उनके बगीचों के अतिरिक्त कहीं अस्त नही होते।

''मैं उन पदलोलुपो के पास से भागा, जो लोगों की आंखों में सुनहरी धूल झोंककर और उनके कानों को अर्थ-विहीन आवाजो से भरकर, उनके मासारिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर देते है।

''मैंने एकान्तवास ग्रहण किया, क्योंकि मुझे तब तक कभी किसी से दया न मिली, जब तक मैंने जी-जान से उसका पूरा-पूरा मूल्य न चुका दिया।

''मै उन धर्म-गुरुओं से अलग हुआ जो अपने धर्मोपदेशों के अनुकूल स्वय जीवन नही बिताते। किन्तु अन्य लोगों से ऐसे आचरण की माग करते हैं, जिसे वे स्वय नहीं अपनाते।

''मैंने एकान्तवास अपनाया, क्योंकि उस महान और विकट सस्था से ही मै विमुख था, जिसे लोग सभ्यता कहते हैं और जो मनुष्य-जाति की अविच्छिन्न दुर्गति पर एक सुरूप दानवता के रूप मे छाई हुई है।

''मैं एकान्तवासी इसलिए बना कि इसी मे, आत्मा के लिए, हृदय के लिए और शरीर के लिए पूर्ण जीवन है। अपने इस एकान्तवास में मैंने वह मनोहर देश ढूढ निकाला है, जहां सूर्य का प्रकाश विश्राम करता है, जहां पुष्प अपनी सुगन्ध को अपने मुक्त श्वासों द्वारा शून्य में बिखेरते रहते हैं और जहा सरिताएं गाती हुई सागर को जाती हैं। मैंने ऐसे पहाडों को खोज निकाला है, जहां स्वच्छ वसन्त को जागते हुए देखता हूं और ग्रीष्म की रंगीन अभिलाषाओं, शरद के वैभवपूर्ण गीतो और शीत सुन्दर के रहस्यो को पाता हूं। ईश्वर के राज्य के इस दूर कोने में इसलिए आया हू, क्योंकि विश्व के रहस्यों को जानने और प्रभु के सिंहासन के निकट पहुचने के लिए भी तो मैं भूखा हूं।''

□□

यूसुफ साहब ने एक लम्बी सास ली, मानो किसी भारी बोझ से अब मुक्ति पा गए हों। उनके नेत्र अनोखी और जादू भरी किरणों से चमक उठे। उज्ज्वल चेहरे पर गर्व, सकल्प तथा सन्तोष झलकने लगा।

कुछ क्षण ऐसे ही गुजर गए। मैं उन्हे ध्यान से देखता रहा और जो मेरे लिए अभी तक अज्ञात था. उस पर से आवरण हटता गया। मैंने उनसे कहा ''निस्सन्देह आपन जा कुछ कहा उसम अधिकाश सही है किन्तु लक्षणा को देखकर

रोगों का सही अनुमान लगाने से यह प्रमाणित हो गया है कि आप एक अच्छे चिकित्सक हैं। मैं समझता हूं कि रोगी समाज को आप जैसे चिकित्सक की बड़ी आवश्यकता है, जो उसे रोग से मुक्त करे अथवा मृत्यु प्रदान करे। यह पीड़ित संसार आपसे दया की भीख चाहता है। क्या यह दयापूर्ण और न्यायोचित होगा कि आप एक पीड़ित रोगी को छोड़ जाएं और उसे अपने उपकार से वंचित रहने दें?''

वह कुछ सोचते हुए मेरी ओर एकटक देखने लगे और फिर निराश स्वर में बोले, ''चिकित्सक सृष्टि के आरम्भ से ही मानव को उनकी अव्यवस्थाओं से मुक्त कराने की चेष्टाएं करते आ रहे हैं। कुछ चिकित्सकों ने चीरफाड़ का प्रयोग किया और कुछ ने औषधियों का, किन्तु महामारी बुरी तरह फैलती गई। मेरा तो यही विचार है कि अगर रोगी अपनी मैली-कुचैली शय्या पर ही पड़े रहने में सन्तुष्ट रहता और अपनी चिरकालीन व्याधि पर मनन-मात्र करता तो अच्छा होता! लेकिन इसके बदले होता क्या है? जो भी रोगी मिलने आता है, अपने ऊपरी लबादे के नीचे से हाथ निकालकर वह रोगी उस आदमी को गरदन से पकड़कर ऐसा धर दबाता है कि वह दम तोड़ देता है। हाय, यह कैसा अभाग्य है। दुष्ट रोगी अपने चिकित्सक को ही मार डालता है। और फिर अपने नेत्र बन्द करके मन-ही-मन कहता है, 'वह एक बड़ा चिकित्सक था।' न, भाई न, संसार में कोई भी इस मनुष्यता को लाभ नहीं पहुंचा सकता। बीज बोने वाला कितना भी प्रवीण और बुद्धिमान् क्यों न हो, शीतकाल में कुछ भी नहीं उगा सकता।''

किन्तु मैंने युक्ति दी, ''मनुष्यों का शीत कभी तो समाप्त होगा ही, फिर सुन्दर वसन्त आएगा और तब अवश्य ही खेतों में फूल खिलेंगे और फिर से घाटियों में झरने बह निकलेंगे।''

उनकी भृकुटी तन गई और कड़वे स्वर में उन्होंने कहा, ''काश! ईश्वर ने मनुष्य का जीवन, जो उसकी परिपूर्ण वृत्ति है, वर्ष की भांति ऋतुओं में बांट दिया होता! क्या मनुष्यों का कोई भी गिरोह, जो ईश्वर के सत्य और उसकी आत्मा पर विश्वास रखकर जीवित है, इस भू-खण्ड पर फिर से जन्म लेना चाहेगा? क्या कभी ऐसा समय आएगा, जब मनुष्य स्थिर होकर दिव्य चेतना की दाईं ओर टिक सकेगा, जहां दिन के उजाले की उज्ज्वलता तथा रात्रि की शांत निस्तब्धता में वह खुश रह सके? क्या मेरा यह सपना कभी सत्य हो पाएगा? अथवा क्या यह सपना तभी सच्चा होगा, जब यह धरती मनुष्य के मांस से ढक चुकी होगी और उसके रक्त में भीग चुकी होगी?''

यूसुफ साहब खड़े हो गए और उन्होंने आकाश की ओर ऐसे हाथ उठाया, मानो किसी दूसरे संसार की ओर इशारा कर रहे हों और बोले, ''यह नहीं हो सकता। इस संसार के लिए यह केवल एक सपना है, किन्तु मैं अपने लिए इसकी खोज कर रहा हूं और जो मैं यहां खोज रहा हूं, वही मेरे हृदय के कोने-कोने में इन घाटियों में और इन पहाड़ों में व्याप्त है

उन्होने अपने उत्तेजित स्वर को और भी ऊंचा करके कहा, ''वास्तव में मैं जा जानता हू, वह मेरे अन्त:करण की चीत्कार है। मैं यहा रह रहा हूं, किन्तु मेरे अस्तित्व की गहराइयो मे भूख और प्यास भरी हुई है और अपने हाथों द्वारा बनाए और सजाए पात्रो में ही जीवन की मदिरा तथा रोटी लेकर खाने मे मुझे आनन्द मिलता है। इसीलिए मैं मनुष्यो के निवास-स्थान को छोड़कर आया हूं और अन्त तक यहीं रहूगा।''

वह उस कमरे मे व्याकुलता से आगे-पीछे घूमते रहे और मैं उनके कथन पर विचार करता रहा तथा समाज के गहरे घावों की व्याख्या का अध्ययन करता रहा।

तब मैंने यह कहकर ढंग से एक और चोट की, ''मैं आपके विचारों और आपकी इच्छाओं का पूर्णत: आदर करता हूं और आपके एकान्तवास पर मै श्रद्धा भी करता हू और ईर्ष्या भी; किन्तु आपको अपने से अलग करके अभागे राष्ट्र ने काफी नुकसान उठाया है, क्योंकि उसे एक ऐसे समझदार सुधारक की आवश्यकता है, जो कठिनाइयो में उसकी सहायता कर सके और उसकी सुप्त चेतना को जगा सके।''

उन्होंने धीमे से अपना सिर हिलाकर कहा, ''यह राष्ट्र भी दूसरे राष्ट्रो की तरह ही है, और यहां के लोग भी उन्ही तत्वो से बने हैं, जिनसे शेष मानव का निर्माण हुआ है। अन्तर है तो मात्र बाह्य आकृतियों का, सो कोई अर्थ ही नही रखता। हमारे पूर्वीय राष्ट्रो की वेदना सम्पूर्ण संसार की वेदना है और जिसे तुम पाश्चात्य सभ्यता कहते हो, वह और कुछ नहीं, उन अनेक दुखान्त भ्रामक आभासो का एक और रूप है।

''पाखण्ड तो सदैव ही पाखण्ड रहेगा, चाहे उसकी उगलियों को रंग दिया जाए तथा चमकदार बना दिया जाए। वञ्चना कभी नहीं बदलेगी, चाहे उसका स्पर्श कितना भी कोमल और मधुर क्यों न हो जाए। असत्यता कभी भी सत्यता मे परिणत नहीं की जा सकती, चाहे तुम उसे रेशमी कपड़े पहनाकर महलों मे ही क्यो न बिठा दो, और लालसा कभी सन्तोष नहीं बन सकती। रही अनन्त गुलामी, चाहे वह सिद्धान्तों की हो, रीति-रिवाजों की हो या इतिहास की हो, सदैव गुलामी ही रहेगी, कितना ही वह अपने चेहरे को रंग ले और अपनी आवाज को बदल ले। गुलामी अपने डरावने रूप मे गुलामी ही रहेगी, तुम चाहे उसे आजादी ही कहो।

''नही, मेरे भाई। पश्चिम न तो पूर्व से जरा भी ऊंचा है और न जरा भी नीचा। दोनों में जो अतर है, वह शेर और शेर-बबर के अंतर से अधिक नहीं है। समाज में बाह्य रूप के परे मैंने एक सर्वोचित और सम्पूर्ण विधान खोज निकाला है, जो सुख-दु:ख और अज्ञान सभी को एक समान बना देता है। वह विधान न एक जाति को दूसरी से बढ़कर मानता है और न एक को उभारने के लिए दूसरे को गिराने का प्रयत्न करता है।''

मैंने विस्मय से कहा, ''तब मनुष्यता का अभिमान झूठा है और उसमें जो कुछ भी है वह सभी निस्सार है

उन्होंने जल्दी से उत्तर दिया, ''हां, मनुष्यता एक मिथ्या अभिमान है और उसमे जो कुछ भी है, वह सभी मिथ्या है। आविष्कार और खोज तो मनुष्य अपने समय के मनोरजन तथा आराम के लिए करता है, जब वह पूर्णतया थक गया हो। देशीय दूरी को जीतना और समुद्रों पर विजय पाना एक ऐसा नश्वर फल है, जो न तो आत्मा को सतुष्ट कर सकता है न हृदय का पोषण और उसका विकास ही कर सकता है, क्योंकि वह विजय नितान्त अप्राकृतिक है। जिन रचनाओं और सिद्धान्तो को मनुष्य कला तथा ज्ञान कहकर पुकारता है, वे बंधन की उन कडियो और सुनहरी ज़जीरो के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं, जिन्हें मनुष्य अपने साथ घसीटता चलता है और जिनके चमचमाते प्रतिबन्धो तथा झनझनाहट से वह प्रसन्न होता रहता है। वास्तव में वे मज़बूत पिंजरे हैं, जिन्हें मनुष्य ने शताब्दियो पहले बनाना आरभ किया था, किन्तु तब यह नहीं जानता था कि उन्हें वह अन्दर की तरफ से बना रहा है और शीघ्र ही वह स्वयं बन्दी बन जाएगा— हमेशा-हमेशा के लिए। हां-हा, मनुष्य के कर्म निष्फल हैं और उसके उद्देश्य निरर्थक हैं और इस पृथ्वी पर सभी कुछ निस्सार है।''

वह जरा-से रुके और फिर धीरे-से बोलते गए, ''और जीवन की इन समस्त निस्सारताओं में केवल एक ही वस्तु है, जिससे आत्मा प्रेम करती है और जिसे वह चाहती है। एक और अकेली ददीप्यमान वस्तु!''

मैंने कंपित स्वर में पूछा, ''वह क्या है?''

निमिष-भर उन्होंने मुझे देखा और तब अपनी आंखे बंद कर लीं। अपने हाथ छाती पर रखे। उनका चेहरा तमतमाने लगा और विश्वसनीय तथा गम्भीर आवाज मे बोले, ''वह है आत्मा की जागृति, वह है हृदय की आन्तरिक गहराइयों का उद्‌बोधन। वह सब पर छा जाने वाली एक महाप्रतापी शक्ति है, जो मनुष्य-चेतना में जब कभी भी प्रबुद्ध होती है उसकी आंखें खोल देती है। जब उस महान संगीत की उज्ज्वल धारा के बीच, जिसे अनंत प्रकाश घेरे रहता है, वह जीवन दिखाई पडता है, जिससे लगा हुआ मनुष्य सुन्दरता के स्तम्भ के समान आकाश और पृथ्वी के बीच खड़ा रहता है।

''वह एक ऐसी ज्वाला है, जो आत्मा में अचानक सुलग उठती है और हृदय को तपाकर पवित्र बना देती है, पृथ्वी पर उतर आती है और विस्तृत आकाश मे चक्कर लगाने लगती है।

''वह एक दया है, जो मनुष्य के हृदय को आ घेरती है, ताकि उसकी प्रेरणा से मनुष्य उन सबको अवाक् बनाकर अमान्य कर दे, जो उसका विरोध करते हैं और जो उसके महान अर्थ समझने में असमर्थ रहते हैं, उनके विरुद्ध वह शक्ति विद्रोह करती है।

वह एक हाथ है जिसने मेरे नेत्रों के को तभी हटा दिया

जब मैं समाज का सदस्य बना हुआ अपने परिवार, मित्रो और हितैषियो के बीच रहा करता था।

"कई बार मैं विस्मित हुआ और मन-ही-मन कहता रहा, 'क्या है यह सृष्टि और क्यों मैं उन लोगों से भिन्न हूं, जो मुझे देखते हैं? मैं उन्हें कैसे जानता हूं, उन्हे मैं कहा मिला और क्यों मैं उनके बीच रह रहा हूं? क्या मैं उन लोगों में एक अजनबी हू अथवा वे ही इस संसार के लिए अपरिचित हैं—ऐसे संसार के लिए, जो दिव्य चेतना से निर्मित है और जिसका मुझ पर पूर्ण विश्वास है?"

अचानक वह चुप हो गए, जैसे कोई भूली बात स्मरण कर रहे हों, जिसे वह प्रकट नहीं करना चाहते। तब उन्होंने अपनी बाहें फैला दीं और फुसफुसाए, "आज से चार वर्ष पूर्व, जब मैने संसार का त्याग किया, मेरे साथ यही तो हुआ था। इस निर्जन स्थान मे मैं इसलिए आया कि जागृत चेतना में रह सकूं और समस्वर और सौम्य नीरवता के आनंद को भोग सकूं।"

गहन अन्धकार की ओर घूरते हुए वह द्वार की ओर बढ़े, मानो तूफान से कुछ कहना चाहते हों। फिर प्रकम्पित स्वर में बोले, "यह आत्मा के भीतर की जागृति है। जो इसे जानता है, वह इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता और जो नहीं जानता, वह अस्तित्व के विवश करने वाले किन्तु सुन्दर रहस्यों के बारे में कभी नहीं सोच सकेगा।"

□□

एक घण्टा बीत गया, यूसुफ-अल-फ़ाख़री कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक लम्बे डग भरते घूम रहे थे। वह कभी-कभी रुककर तूफ़ान के कारण अत्यधिक भूरे आकाश को देखने लगते थे। मैं ख़ामोश ही बना रहा और उनके एकान्तवासी जीवन की दुःख-सुख की मिली-जुली तान पर सोचता रहा।

कुछ देर बाद रात्रि होने पर वह मेरे पास आए और देर तक मेरे चेहरे को घूरते रहे, मानो उस मनुष्य के चित्र को अपने मानस-पटल पर अंकित कर लेना चाहते हो, जिसके सम्मुख उन्होंने अपने जीवन के गूढ रहस्यों को उद्घाटित कर दिया हो। विचारों की व्याकुलता से मेरा मन भारी हो गया था और तूफ़ान के धुन्ध के कारण मेरी आंखे बोझिल हो चली थीं।

तब उन्होंने शान्तिपूर्वक कहा, "मैं अब रात-भर तूफ़ान में घूमने जा रहा हू, ताकि प्रकृति के भावाभिव्यंजन की समीपता का आभास पा सकूं। यह मेरा अभ्यास है, जिसका आनन्द अधिकतर शरद और शीत में लेता हूं। लो, यह थोड़ी मदिरा है और यह तम्बाकू। कृपा करके आज रात भर के लिए मेरा घर अपना ही समझो।"

उन्होने अपने आपको एक काले लबादे से ढंक लिया और मुस्कराकर बोले, "मैं तुमसे प्रार्थना करता हू कि सुबह जब तुम जाओ तो बिना आज्ञा के प्रवेश करने वालों के लिए मेरे द्वार बन्द करते जाना, क्योंकि मेरा कार्यक्रम है कि मैं सारा दिन पवित्र देवदारो के वन में घूमते बिताऊंगा

वह द्वार की ओर बढ़े और एक लम्बी छडी साथ लेकर बोले, ''यदि तूफान फिर कभी तुम्हे अचानक इस जगह के आसपास घूमते हुए आ घेरे, तो इस आश्रम मे आश्रय लेने मे सकोच न करना। मुझे आशा है कि अब तुम तूफान से प्रेम करना सीखोगे, भयभीत होना नही। सलाम, मेरे भाई।''

उन्होने द्वार खोला और अन्धकार में अपने सिर को ऊपर उठाए बाहर निकल गए। यह देखने के लिए कि वे किस रास्ते गए हैं, मैं दहलीज़ पर ही खड़ा रहा, किन्तु शीघ्र ही वह मेरी आंखों से ओझल हो गए। कुछ मिनटों तक मैं घाटी के कंकड़-पत्थरों पर उनकी पदचाप सुनता रहा।

□□

गहन विचारों की उस रात्रि के पश्चात् जब सुबह हुई, तब तूफान गुज़र चुका था और आसमान निर्मल हो गया था। सूर्य की गर्म किरणों से मैदान और घाटियां तमतमा रही थीं। नगर को लौटते समय मै उस आत्मिक जागृति के सम्बन्ध मे सोचता जाता था, जिसके लिए यूसुफ़-अल-फाखरी ने इतना कुछ कहा था। यह जागृति मेरे अग-अंग में व्याप रही थी। मैने सोचा कि मेरा यह स्फुरण अवश्य ही प्रकट होना चाहिए। जब मै कुछ शान्त हुआ तो मैने देखा कि मेरे चारो ओर पूर्णता और सुन्दरता बसी हुई है।

जैसे ही मैं उन चीखते-पुकारते नगर के लोगो के पास पहुचा, मैंने उनकी आवाज़ों को सुना और उनके कार्यो को देखा, तो मैं रुक गया और अपने अन्तःकरण से बोला, 'हां, आत्मबोध मनुष्य के जीवन में अति आवश्यक है और यह मानव-जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। क्या स्वयं सभ्यता अपने समस्त दुःखपूर्ण बहिरंग में आत्मिक जागृति के लिए एक महान ध्येय नही है ? तब हम किस प्रकार ऐसे पदार्थ के अस्तित्व से इन्कार कर सकते हैं, जिसका अस्तित्व ही अभीप्सित योग्यता की समानता का पक्का प्रमाण है। वर्तमान सभ्यता चाहे नाशकार प्रयोजन ही रखती हो, किन्तु ईश्वरीय विधान ने उस प्रयोजन के लिए एक ऐसी सीढी प्रदान की है, जो स्वतन्त्र अस्तित्व की ओर ले जाती है।'

□□

मैंने फिर कभी यूसुफ-अल-फाखरी को नहीं देखा, क्योंकि मैंने अपने प्रयत्नो के कारण, जिनके द्वारा मै सभ्यता की बुराइयों को दूर करना चाहता था, उसी शरद ऋतु के अन्त मे मुझे उत्तरी लेबनान से देश-निकाला दे दिया गया और एक ऐसे दूर-देश मे प्रवासी का जीवन बिताना पडा, जहां के 'तूफान' बहुत कमजोर है, और उस देश में एक आश्रमवासी का-सा जीवन बिताना एक अच्छा-खासा पागलपन है क्योंकि यहा का समाज भी बीमार हैं।

□□

7. पागल जॉन

गर्मियों के दिनो में जॉन हर रोज़ तारो की छांव में बैलो और बछड़ों को लिए, कधों पर हल रखे, कोयल की कूक और हवा की लहरों से खेलते हुए पत्तों की सरसराहट पर कान लगाए खेत की ओर जाता। दोपहर को उन हरे-भरे खेतों की निचली ओर बहते हुए झरने के किनारे बैठकर भगवान का दिया खाता और रोटी के बचे-खुचे टुकडे पछियों के लिए घास पर डाल देता। जब शाम होती और डूबता हुआ सूरज दुनिया को रोशनी भी अपने साथ ले जाता तो अपने छोटे-से घर की ओर लौटता, जो उत्तरी लेबनान मे खेतो और गांवों के पास बसा हुआ था। भोजन के बाद वह अपने बूढ़ मां-बाप के पास चुपचाप बैठकर उनकी बातें सुनता, जो आमतौर पर दुनिया की बीती हुई घटनाओं के बारे मे होतीं। आखिर में जब उसे आराम और नींद की जरूरत महसूस होती तो वह सो जाता।

जाडों मे हाथ तापने के लिए वह दीवार के सहारे आग के पास बैठ जाता और हवा का रोना-पीटना सुनता, ऋतुओ के बदलने पर विचार करता और छोटी-सी खिडकी में से बर्फ से ढकी हुई घाटियों एवं बिना पत्तियों के पेड़ों को देखता। वे पेड़ ऐसे मालूम होते थे, मानो वह फ़कीरों और दरिद्रों की एक जमात है, जो हवा के तेज और भयकर झोंकों और सर्दी के बर्फीले जबड़ों में फसी हुई सिसक रही है।

जाड़े की लबी रातों में जब तक जॉन के मां-बाप सो न जाते, तब तक वह जागता रहता और उनके सो जाने के बाद वह लकड़ी की एक मोटी-छोटी अलमारी मे से बाइबल निकालता और टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी में उसे छुपकर पढ़ता। उस पाक पुस्तक का पढ़ना पादरियों ने मना कर दिया था, इसलिए उसे पढ़ते समय जॉन बड़ी सावधानी बरतता। पादरियों ने वहां के सीधे-सादे देहातियो को उस पुस्तक का इस्तेमाल न करने की ताकीद कर दी थी; और यह धमकी दी थी कि अगर किसी के पास यह पुस्तक पाई गई तो उसे धर्म से बहिष्कृत कर दिया जाएगा।

इस प्रकार जॉन ने अपनी जवानी भगवान की उस सुदर भूमि, रोशनी और सच्चाई से भरी हुई बाइबल की पढाई में बिता दी। जॉन बडे शांत स्वभाव का

संतोषी युवक था। वह हमेशा अपने मां-बाप की बातें ध्यान से सुनता और बीच मे एक शब्द भी मुंह से न निकालता और न ही कोई सवाल उनसे पूछता। जब वह अपने संगी-साथियों या दोस्तों के साथ बैठा होता तब, वह चुपचाप क्षितिज की ओर देखता रहता और उसके विचार उसकी निगाह की तरह दूर-दूर तक पहुच जाते। जब-जब वह गिरजा में जाता तो हर बार मायूस होकर घर लौटता, क्योंकि वहां पादरी लोग जो बातें सुनाते, वे बाइबल में दी हुई सिखावन से बिलकुल जुदा होतीं और उन पादरियों की ज़िंदगी उतनी बढ़िया नहीं होती थी, जिसके बारे में ईसा मसीह ने कह रखा है।

□□

वसंत ऋतु आई और खेतों और घाटियों की बर्फ पिघल गई। उसका जो थोडा-बहुत हिस्सा पहाड़ों की चोटियो पर रह गया था, वह भी पिघल-पिघलकर छोटी-छोटी नहरों की शक्ल में घाटियों में पहुंच रहा था और मौजें मारते हुए भारी प्रवाह के रूप में अपनी गड़गड़ाहट से प्रकृति की जागृति का एलान कर रहा था। बादाम और सेब के पेड़ फूलों से लद गए, चिनार और बेद की शाखाओ में कोंपले फूटने लगीं और प्रकृति ने अपनी आनंददायी और रंग-बिरंगी पोशाक देहातों पर फैला दी।

जॉन आग के पास बैठकर दिन बिताने से ऊब गया था। वह जानता था कि उसके बैल चरागाहों में जाने के लिए बहुत बेचैन हैं, इसलिए उसने अपने ढोरों को बाडे से निकाला और उन्हें खेतों की ओर ले गया। उसने अपने चोगे के नीचे अपनी बाइबल को छिपा लिया था—इस डर से कि कहीं कोई देख न ले। चलते-चलते वह एक सुहावने चरागाह में पहुचा जो संत एलिजा मठ[1] के खेतों के पास था। यह मठ नजदीक की एक पहाड़ी पर शान से खड़ा था। जब ढोर घास चरने लगे तो जॉन एक चट्टान से कमर लगाकर बैठ गया और अपनी बाइबल की पोथी पढ़ने लगा। साथ ही इस दुनिया में रहने वाली प्रभु की औलाद के दुःखों और स्वर्ग की सुंदरता के विषय में सोचने लगा।

वह लेंट[2] का आख़िरी दिन था। उपवास के कारण गांव के लोगों को कई दिनो से गोश्त खाने का मौका नहीं मिला था। इसलिए वे बड़ी बेचैनी से ईस्टर की राह देख रहे थे। मगर दूसरे बहुत-से ग़रीब किसानों की तरह जॉन उपवास के दिनों और साल के दूसरे दिनों में कोई फ़र्क नहीं समझता था। उसके लिए उसकी सारी जिंदगी ही एक लंबा लेंट थी। उसके खाने में सिर्फ़ रूखी-सूखी रोटी होती थी, जो हृदय

---

1 यह धनी मठ उत्तरी लेबनान में है। इसके अपने कई खेत हैं। इस मठ मे अनेको पादरी रहते हैं, जिन्हे ऐलेपोन्स कहते हैं।

2 ईसाइयो मे ईस्टर से पहले चालीस दिन का उपवास जो ईसा के उपवास के उपलक्ष्य मे किया जाता है

की व्यथा एवं माथे के पसीने में गुंथी हुई होती थी; या फिर कुछ फल होते थे, जिन्हें वह अपने शरीर का ख़ून देकर खरीदता था। लेंट के दिनों में वह सिर्फ़ उस रूहानी खुराक की इच्छा करता था, जो उसके दिल में उस मानव पुत्र (ईसा) के दु:ख का और इस दुनिया में उसकी जिंदगी के खात्मे के बारे में हैरानी से भरे विचार लाती थी।

पंछी चहचहाते हुए जॉन के सिर पर मंडरा रहे थे। कबूतरों के झुंड आकाश मे उड़ रहे थे। फूल हवा की लहरों पर झूम रहे थे, मानो सूरज की चमकती रोशनी से खुश हो रहे हों।

बाइबल को पढने और उसके बारे में सोचने में जॉन मगन था। बीच-बीच में वह अपना सिर उठाकर आसपास के गांव में फैले हुए गिरजों के गुबदो को देखता और घंटियो की लय सुनता। कभी-कभी वह अपनी आंखें बंद कर लेता और सपनों के पंखों पर सवार होकर ईसा मसीह के बताए हुए रास्ते यरुशलम पहुंच जाता और भगवान ईसा के बारे मे उस शहर के रहने वालों से पूछताछ करता। इस पर वे लोग उससे कहते, ''यहां उसने (ईसा ने) लकवे के बीमार को ठीक किया था, अंधो को आखें दी थीं और वहां उन्होंने (लोगों ने) उसके लिए कांटों का ताज बनाकर उसके सिर पर रखा था: उस ड्योढी मे से उसने जनता को अच्छी-अच्छी मिसालें देकर उपदेश दिया था, उस महल में उन्होंने उसे संगमरमर के खम्भो से बाधकर कोडे लगाये थे; इस सडक पर उसने व्यभिचारिणी को उसके पापों के लिए क्षमा कर दिया था और उस जगह पर वह अपने सलीब के बोझ से दबकर ज़मीन पर गिर पडा था।''

□□

एक घटा बीत गया। भगवान के साथ जॉन जिस्मानी तकलीफ को महसूस कर रहा था और रूहानी निगाह से ऊंचा उठता जा रहा था। इतने में दोपहर हो गई। वह अपनी जगह से उठा। उसने चारों ओर देखा, पर उसे अपने बैल कहीं दिखाई नही दिए। इसलिए वह उन्हें खोजने निकला। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वह उस रास्ते तक पहुचा, जो आसपास के खेतो में जाता था। वहां उसने देखा कि पास ही एक आदमी बगीचे मे खडा है। जब जॉन उसके पास पहुंचा तो उसने देखा कि वह आदमी मठ का पादरी है। इसलिए उसने बडे आदर के साथ उसके सामने सिर झुकाकर नमस्कार किया और उससे पूछा, ''क्या आपने मेरे बैलों को कहीं देखा है?''

पादरी के चेहरे से ऐसा लगता था कि वह अपने गुस्से को रोके हुए है। उसने कहा, ''हा, मैंने देखा है। मेरे पीछे-पीछे आ, मैं तुझे उन्हें दिखा दूं।''

जब वे दोनों मठ मे पहुंच गए तो वहां जॉन ने देखा कि एक अहाते में उसके बैल रस्सी से बधे हुए हैं और एक पादरी उनकी निगरानी कर रहा है उस पादरी के हाथ म एक मोटा सा डडा था और जैसे ही कोई जानवर इधर उधर हिलता

वह उसकी पीठ पर डंडा जमा देता। यह देखकर उन बेबस जानवरों को छुड़ाने के लिए जॉन आगे बढा। मगर पादरी ने उसका चोगा पकड़ लिया और मठ की तरफ मुह करके वह जोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, ''यह रहा गुनहगार चरवाहा! मैंने उसे पकड़ लिया है।''

यह सुनते ही मठ के छोटे-बडे पादरी वहा दौडते हुए पहुंचे और उन्होंने जॉन को घेर लिया। सबसे आगे लाट पादरी था। वह नजारा देखकर जॉन हक्का-बक्का रह गया। उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो उसे गिरफ़्तार कर लिया गया है।

उसने लाट पादरी से कहा, ''मैंने ऐसा कोई क़सूर नहीं किया है, जिससे मेरे साथ गुनहगार का सा बर्ताव किया जाए।''

इस पर लाट पादरी ने गुस्से मे कहा, ''तेरे बैलों ने हमारे खेतों को बरबाद कर दिया है और अंगूर के बागों को नुकसान पहुचाया है। इस नुकसान के लिए तू जिम्मेदार है, इसलिए जब तक तू हमारे नुकसान का एवज़ नहीं देगा, तब तक हम तेरे बैलो को नहीं छोडेंगे।''

जॉन ने कहा, ''मैं गरीब हू। मेरे पास कानी कौड़ी भी नहीं है। मेरे जानवरो को मेहरबानी करके छोड़ दीजिए। मैं वादा करता हूं कि मैं आइदा कभी उन्हें इन खेतों की ओर नहीं लाऊंगा।''

लाट पादरी एक कदम आगे बढ़ा और आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर कहने लगा, ''प्रभु ने हमें सत एलिजा की इस ज़मीन का रखवाला तैनात किया है, और हमारा यह फर्ज़ है कि अपनी पूरी ताकत के साथ हम इसकी हिफ़ाजत करें; क्योंकि यह जमीन पाक है और आग की तरह वह उसे जलाकर ख़ाक कर देगी, जो इसमे जबरदस्ती आएगा। तूने प्रभु का जो जुर्म किया है उसकी भरपाई अगर तू नहीं करेगा तो तेरे बैलो ने जो घास खाई है, वह उनके पेट में ज़हर बन जाएगी और उनका नाश कर देगी।''

इतना कहकर लाट पादरी वापस जाने के लिए तैयार हुआ; पर जॉन ने उसका पल्ला पकड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, ''भगवान यीशु और सारे संतों के नाम पर मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे और मेरे जानवरों को रिहा कर दें। मुझ पर कृपा कीजिए, क्योंकि मैं गरीब हू और मठ की तिजोरिया सोने-चांदी से भरी हुई हैं। मेरे ग़रीब और बूढ़े मां-बाप पर दया कीजिए, जिनकी ज़िंदगी मुझ पर मुनहसिर है। अगर मैंने आपका कोई नुक़सान किया हो तो भगवान मुझे माफ कर देंगे।''

लाट पादरी ने जॉन की तरफ़ निष्ठुरता से देखा और कहा, ''तू गरीब है या अमीर, इससे मठ को कुछ लेना-देना नहीं है। यह मठ तुझे माफ़ नहीं कर सकता। अगर तू अपने बैलों को छुड़ा ले जाना चाहता है, तो तुझे मठ को तीन दीनार देने पडेगे

जॉन ने कहा, "मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है। एक ग़रीब चरवाहे पर मेहरबानी कीजिए।"

इस पर लाट पादरी कडककर बोला, "तो फिर तुझे अपनी जायदाद का कुछ हिस्सा बेचकर तीन दीनार लाने होंगे, क्योंकि संत एलिजा के गुस्से का शिकार बनकर नरक में जाने की बनिस्बत ज़मीन-जायदाद से महरूम होकर स्वर्ग मे जाना ज्यादा अच्छा है।"

इस पर दूसरे पादरियों ने सिर हिलाकर हामी भरी। थोड़ी देर की स्तब्धता के बाद जॉन का चेहरा चमकने लगा। उसकी आंखों की ओर देखने से ऐसा लगने लगा, मानो अब उसके हृदय में और लाचारी बिलकुल नहीं रही है। उसने अपना सिर ऊपर उठाया और निडरता के साथ लाट पादरी की ओर देखता हुआ वह बोला, "क्या कमज़ोर गरीब लोग मठ की जायदाद में और ज़्यादा सोना बढ़ाने के लिए अपनी उन छोटी-मोटी चीज़ों को बेच दें, जिनसे वे अपना पेट किसी तरह पाल सकते हैं? क्या यही इन्साफ है कि सत एलिजा से बैलों को उनकी मासूमियत की माफी दिलवाने के लिए ग़रीबों को कुचल दिया जाए और उन्हें ज्यादा गरीब बनाया जाए?"

लाट पादरी ने सिर उठाकर आकाश की ओर देखा और कहा, "प्रभु की पुस्तक मे लिखा है कि जिसके पास बहुत हो, उसे और ज़्यादा दिया जाए और जिसके पास कुछ न हो, उससे छीन लिया जाए!"

ये शब्द सुनते ही जॉन आपे से बाहर हो गया और जिस तरह दुश्मन के ख़िलाफ़ कोई सिपाही म्यान में से तलवार निकालता है, उसी तरह उसने अपनी जेब से बाइबल निकाली और ललकार कर कहा, "ऐ पाखंडियो। भगवान ईसा मसीह की सिखावन को तुम लोग इसी तरह तोड़ते-मरोड़ते हो; और इसी तरह अपनी बुराइयों को फैलाने के लिए तुम लोग ज़िंदगी की पाक परंपराओं को ख़राब करते हो...। लानत है तुम पर! जब वह मानवपुत्र फिर से आएगा, तो तुम्हारे मठ को मिट्टी में मिलाकर उसका मलबा वादी में फेंक देगा और तुम्हारे मंदिरों और वेदियों को जलाकर ख़ाक कर देगा। धिक्कार है तुम पर! जब ईसा मसीह का कोप तुम पर होगा तो तुम नरक की गहराइयों में फेंक दिए जाओगे। लानत है तुम पर, ओ अपनी वासना के बुतों को पूजने वालो। जो अपने काले कपड़ों के अंदर अपने दिल की कुरूपताओं को छिपाते हो। धिक्कार है तुम पर, ऐ ईसा के दुश्मनो! तुम अपने होंठ प्रार्थना के लिए हिलाते हो। लेकिन उसी समय तुम्हारे दिल लालसाओं से भरे होते हैं। लानत है तुम पर, जो वेदियों के सामने अपने जिस्मों को तो झुकाते हो, पर उसी के साथ तुम्हारी आत्माएं प्रभु के खिलाफ बग़ावत करती हैं। मैंने और मेरे पुरखों ने जो ज़मीन तुम्हें दी थी, उसमें पैर रखने के जुर्म मे तुमने मुझे जो सज़ा दी है उस पाप से ख़ुद तुम्हीं ख़राब हो गए हो जब मैंने ईसा के नाम पर दया की

माग की तो तुमने मेरा मज़ाक उड़ाया। यह किताब ले लो और हंसने वाले अपने इन पादरियों को बता दो कि उस प्रभु के पुत्र ने माफ़ करने से कब इन्कार किया था ? लो पढ़ो, यह स्वर्ग की त्रासदी और इन्हें बतला दो कि ईसा मसीह ने कब यह कहा था कि दूसरों पर दया या मेहरबानी मत करो—फिर भले ही वह पहाड़ी पर दिया हुआ प्रवचन हो या मंदिर में की हुई तक़रीर! क्या उसने उस व्यभिचारिणी को उसके पापो के लिए माफ़ नहीं किया था? क्या इंसानियत को गले लगाने के लिए उसने सलीब पर अपनी बांहें नहीं फैलाई थीं?

"गर्दिश के मारे हमारे घरों को देखो, जहां बीमार लोग सख्त बिस्तरो पर कराहते रहते हैं . । जेलों के सीख़चों के पीछे झांको, जहां बेक़सूर इंसान नाइसाफी और जुल्मों का शिकार बना हुआ है...। उन भिखारियों को देखो, जो भीख मागने के लिए हाथ फैलाए हुए है, जो अपने दिलों में जलील हुए हैं और जिनके जिस्म टूटे हुए हैं. । अपने गुलाम अनुयायियों के बारे में ज़रा सोचो तो सही कि उधर वे भूख से तड़प रहे हैं और इधर तुम लापरवाही से ऐशो–इशरत की ज़िंदगी बसर कर रहे हो । उनके बागों के फल खाकर और अंगूरों की शराब पीकर तुम मौज उडा रहे हो! तुमने कभी किसी दु:खी से भेंट नही की, न किसी मायूस को ढांढस बधाया, न भूखे को खाना दिया। तुमने कभी किसी मुसाफिर को पनाह नहीं दी और न किमी अपाहिज के साथ हमदर्दी दिखाई। फिर भी हमारे बाप–दादाओं से तुमने जो कुछ हडप लिया है, उससे तुम्हें संतोष नहीं है। ज़हरीले नाग के फन की तरह तुम अपने हाथ फैलाते हो और नरक का डर दिखाकर उस बेवा का बचाया हुआ थोड़ा–सा पैसा छीन लेते हो, जो उसने खून–पसीना एक करके जमा किया होता है। इसी तरह ग़रीब किसान अपने बच्चों को जिंदा रखने के लिए अपना पेट काटकर जो कुछ बचाता है, उसे भी तुम धर्म के नाम पर चुरा लेते हो।"

जॉन ने एक गहरी सास ली। फिर अपनी आवाज़ को धीमा किया और शांति से बोला, "तुम लोग बहुत हो और मैं अकेला हूं। जो भी चाहो, तुम मेरे साथ कर सकते हो। रात के अंधेरे में भेड़िये मेमने को फाड़कर खा जाते हैं, मगर उसके ख़ून के धब्बे घाटी के पत्थरों पर दिन निकलने तक बाक़ी रहते हैं और सूरज सबको उस गुनाह की ख़बर कर देता है।"

जॉन की बातों मे एक जादू भरी ताक़त थी, जिसने पादरियों का ध्यान खींच लिया और उनके दिलों में भारी गुस्सा भर दिया। मारे ग़ुस्से के वे कांप रहे थे और दात पीस-पीसकर सिर्फ अपने अफ़सर के हुक्म की राह देख रहे थे कि हुक्म मिलते ही वे जॉन पर टूट पड़ें और उसे पीसकर रख दें। ज़रा–सी देर की ख़ामोशी ऐसी लग रह थी कि जैसे खेतो और बागो को बरबाद कर देने वाली आंधी के रुकने के बाद छाई हुई शांति हो। उसके बाद लाट पादरी ने चिल्लाकर हुक्म दिया, "इस बदमाश गुनहगार को पकड लो और इसके हाथ से यह किताब छीनकर इसे का न

कोठरी में डाल दो, क्योंकि जो कोई परमेश्वर के पाक नुमाइंदों को बुरा-भला कहता है, अल्लाह के प्यारों की बेअदबी करता है, उसे न तो इस दुनिया मं माफ़ किया जाएगा और न उस दुनिया में।''

यह सुनते ही सारे पादरी जॉन पर टूट पडे और मुश्कें कसकर उसे एक तग कोठरी में ले गए, जहां उन्होंने उसे बंद कर दिया।

जॉन ने जो हिम्मत दिखाई, उसकी कल्पना वे लोग नही कर सकते थे और न उसे समझ सकते हैं, जो 'शाम की दुलहिन' या 'बादशाह के मुकुट का मोनी' कहलाने वाले उस गुलाम देश (लेबनान) को अपने क़ब्ज़े में करने, उसे धोखा देने या उस पर जुल्म ढाने में अत्याचारियों के साथ शामिल होते हैं।

उस कोठरी में पड़े-पड़े जॉन उस दु:ख के बारे में सोचने लगा, जो उसके देशवासियों को भुगतना पड़ रहा था और जिसके विषय में उसे अभी-अभी बहुत-कुछ मालूम हो चुका था। वह हमदर्दी से मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट मे वेदना और कटुता मिली हुई थी। वह ऐसी मुस्कराहट थी, जो दिल को बेधकर पार हो जाती है, जो आत्मा को दम घोंटने वाली निरर्थकता तक पहुंचाती है, जो निराधार छोड़ी जाने पर आंखों में उतर आती है और असहाय बनकर गिर पड़ती है।

उसके बाद जॉन गर्व के साथ उठ खड़ा हुआ और उस छोटे-से झरोखे मे से झांकने लगा, जो सूर्य के प्रकाश से भरी हुई घाटी की ओर था। उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो एक प्रकार का आध्यात्मिक आनंद उसकी आत्मा से लिपट रहा है और उसका अंतर मधुर शांति से भरा हुआ है। उन लोगों ने उसके शरीर को बदी बना रखा था; परन्तु उसकी आत्मा आज़ाद थी, जो हवा की लहरों पर सवार होकर पहाड़ों की चोटियों तथा मैदानों में खुलकर संचार कर रही थी। ईसा मसीह के प्रति उसके प्रेम में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं आया और उन लोगों द्वारा दिये गए कष्टों से उसके हृदय की शांति में बाधा नहीं पड़ी; क्योंकि जो सच्चाई का पक्ष लेता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। उत्पीड़न उसे दबा नहीं सकता। क्या सुकरात ने गर्व के साथ जहर का प्याला नहीं पिया? क्या संत पॉल ने सच्चाई की ख़ातिर पत्थर नहीं खाए? असल में, जब हम अपनी अंतरात्मा की आवाज़ नहीं सुनते तो वह हमे तकलीफ देती है और जब हम उसके साथ दग़ाबाज़ी करते हैं, तो वह हमें मार डालती है।

□□

जॉन के कारावास और उसके जानवरों की ज़ब्ती की सूचना जब उसके मां-बाप को दी गई तो उसकी बूढ़ी मां लकड़ी के सहारे मठ तक पहुंच गई। लाट पादरी के सामने नमस्कार करके उसने उसके पैर चूमे और अपने इकलौते बेटे पर दया करने के लिए वह गिड़गिड़ाने लगी। तब लाट पादरी ने आदर से अपना मस्तक ऊपर उठाया और आकाश की ओर देखता हुआ वह बोला   हम तेरे बेटे को उसके

पागलपन के लिए माफ़ कर देंगे, पर संत एलिजा के संतों में जो गैर मुनासिब तरीके से घुसता है, उसे वह कभी माफ नहीं करेगा।''

जॉन की माता ने लाट पादरी की ओर आंसू भरी आंखों से देखा और अपने गले में से चांदी का लॉकेट निकालकर लाट पादरी को देते हुए कहा, ''यही मेरी सबसे ज़्यादा क़ीमती चीज़ है, जो मेरी मां ने मेरे विवाह के मौक़े पर भेंट में मुझे दी थी । क्या मेरे बेटे के पाप के प्रायश्चित के तौर पर आप इसे मंजूर करेंगे ?''

लाट पादरी ने वह लॉकेट ले लिया और अपनी जेब में रख दिया। तब जॉन की बूढ़ी मां ने उसके हाथो को चूमकर धन्यवाद दिया और अपना एहसान जाहिर किया। उसकी ओर देखकर लाट पादरी बोला, ''बुरा हो इस पापी जमाने का! तुम लोग धर्मग्रथ की उक्तियों को तोड़-मरोड़कर बच्चों के दिमाग़ ख़राब कर देते हो, जिसकी सजा मां-बाप को भुगतनी पड़ती है। बच्चे कच्चे फल खाते हैं और दात खट्टे होते हैं मा-बाप के। ओ भली औरत, तू चली जा और अपने पागल बेटे के लिए भगवान से प्रार्थना कर कि वह उसके दिमाग़ को ठीक कर दे।''

जॉन कैदखाने से बाहर निकला और अपने बैलों को हांकता हुआ अपनी मा के साथ चुपचाप चलने लगा। जब वे अपने टूटे-फूटे झोंपड़े मे पहुचे तो जॉन ने ढोरों को बाड़े में बद कर दिया और खुद खिडकी के पास बैठकर छिपते सूरज को देखते हुए सोच में डूब गया। थोड़ी देर बाद उसने सुना कि उसका बाप उसकी मां से धीरे- धीरे कह रहा था, ''सारा! मैंने कई मरतबा तुमसे कहा था कि जॉन पागल है, पर तुमने मेरी बात पर यक़ीन नहीं किया। अब तुमने जो कुछ देखा-सुना है, उसके कारण तुम मुझसे सहमत होगी; क्योंकि लाट पादरी ने आज तुमसे वही बात कही है, जो मैंने बरसो पहले कह रखी थी।''

जॉन सुदूर क्षितिज को ताकता रहा, जहां सूरज डूब रहा था।

□□

ईस्टर का त्योहार आ गया और ठीक उसी समय बशेरी नामक शहर में एक नया गिरजा खड़ा हो गया। वह उपासना--स्थान ऐसा शानदार था कि मालूम होता था, मानो गरीब प्रजा की झोंपड़ियों के बीच बादशाह का कोई महल खड़ा हो। शहर के लोग बडे पादरी के स्वागत की तैयारियों में लगे हुए थे, जो नए गिरजे के विधिवत उद्घाटन की धार्मिक क्रियाएं करने वाला था, उस धर्माध्यक्ष की राह देखते हुए हजारो लोग कतारें बांधे सड़कों पर खड़े थे। झांझों की आवाज़ में सुर मिलाकर पादरी मंत्र बोल रहे थे और सडक के किनारे खड़े हुए लोग भजन गा रहे थे। उनकी आवाज़ों से आकाश गूंज उठा था।

आखिरकार धर्माध्यक्ष आ पहुंचा। वह एक आलीशान घोड़े पर सवार था, जिसका जीन सोने से जडा हुआ था। जैसे ही वह घोडे से नीचे उतरा पादरियों और राजनेताओं ने बडे तपाक से उसका स्वागत किया और उसकी स्तुति में अच्छे

अच्छे भाषण दिए। उसके बाद उसे नए गिरजे की ओर ले जाया गया, जहां उसने खास उसी के लिए बनवाए गए रेशमी कपड़े पहने, जिन पर जरी का काम किया हुआ था और चमकदार रत्न जड़े हुए थे। फिर उसने सोने का मुकुट अपने सिर पर रख लिया और हाथ में जवाहरात से जड़ा डंडा पकड़ा। जब उसने वेदी की परिक्रमा शुरू की, तब उसके पीछे-पीछे कई पादरी और दूसरे लोग हो लिए, जो हाथों में जलती मोमबत्तिया पकड़े थे और धूप जलाते जाते थे।

उस समय दूसरे किसानों के साथ जॉन भी वह समारोह देखने के लिए द्वार-मडप में खड़ा था। उसकी आंखें दु:ख से भरी हुई थीं और वह ठंडी आहें भर रहा था, क्योंकि वह दृश्य देखकर उसकी आत्मा तड़प रही थी। वहां एक तरफ बहुत ही मूल्यवान कपड़े, कीमती मुकुट, रत्नों से जड़ा डंडा, सोने-चांदी के बर्तन और दूसरी गैर जरूरी फिजूलखर्ची की बातें थीं तो दूसरी तरफ़ आसपास के गांवों से वह समारोह देखने के लिए आए हुए गरीब किसान थे, जो ग़रीबी के शिकजे में फंसे हुए होने के कारण दु:खी थे। उनके फटे-पुराने कपड़े और उदास चेहरे उनकी दुर्दशाग्रस्त स्थिति को प्रकट कर रहे थे।

एक तरफ धनी पादरी बड़े-बड़े तमगे और फीते लगाकर अलग खड़े ज़ोर से प्रार्थना कर रहे थे वहीं दूसरी तरफ़ दु:खी गांव वाले एक ओर खड़े होकर सच्चे दिल से प्रार्थना कर रहे थे, जो उनके टूटे दिलों से निकल रही थी।

उन पादरियों और नेताओं का अधिकार हमेशा हरे-भरे रहने वाले चिनार के पत्तों की तरह बेरोक था और उन किसानों का जीवन उस किश्ती के समान था, जिसका मल्लाह मर चुका है, जिसकी पतवार टूट गई है, जिसके पालों को तेज़ हवा ने फाड दिया है और जो खतरनाक सागर में उठने वाली भयावनी लहरों और जोरदार आंधी में डांवांडोल हो रही है।

जुल्म और अंधी ग़ुलामी! अत्याचार और अज्ञान से भरी अधीनता ..। इनमें से कौन किसको जन्म देता है? क्या अत्याचार या अत्याचारी शासन वह मजबूत पेड़ है, जो निचली जमीन मे नहीं उगता? या अधीनता वह उजाड़ खेत है, जिसमें सिर्फ़ कांटे-ही-कांटे उगते हैं...? ऐसे-ऐसे विचार जॉन के मन में उठ रहे थे, जब वह समारोह चल रहा था। उसने अपने दोनों हाथों से अपनी छाती को दबा लिया, मानो उसे-डर लग रहा था कि विरोधी शक्तियों के उस दु:ख में लोगों की दुर्दशा देखकर उसकी छाती फट जाएगी।

कठोर मानवता के नष्ट होने वाले उन जीवों को उसने देखा, जिनके हृदय सूखे थे और जिनके बीज अब जमीन के पेट में सहारा खोज रहे थे, जैसे कि निराधार यात्री नए ससार के पुनर्जन्म की इच्छा रखते हैं।

अत में जब वह झूठी धूमधाम ख़त्म हुई और सब लोग अपने-अपने घर जाने की तैयारी करने लगे तो जॉन को ऐसा लगा एक अज्ञात शक्ति उन कुचले हुए

गरीबों की ओर से बोलने के लिए उसे विवश कर रही है। वह उस मैदान के एक छोर पर चला गया और उसने अपने हाथ ऊपर आसमान की ओर उठाए। थोड़ी ही देर में उसके चारों ओर लोग जमा हो गए। तब उसने अपना मुंह खोला और वह कहने लगा, ''ऐ प्यारे ईसा! प्रकाश-पुंज के बीच बैठे हुए ऐ मसीहा! मेरी बात ध्यान से सुन। नीले गुंबद के पीछे से इस दुनिया को देख और यह देख ले कि किस तरह कांटों ने उन फूलों के गले घोंट दिए हैं, जिन्हें तेरे सत्य ने उगाया था।

''ऐ नेक चरवाहे! भेड़ियों ने उन दुर्बल मेमनों को अपना शिकार बना दिया है, जिन्हें तूने अपनी गोद में उठाया था। तेरा शुद्ध लहू उस जमीन के पेट में बहा दिया गया है, जिसे तेरे चरणों ने पाक बनाया था। यह अच्छी दुनिया तेरे दुश्मनों द्वारा ऐसा युद्ध-क्षेत्र बनाई गई है, जहां बलवान निर्बलों को पीस डालता है। सिंहासनो पर बैठकर तेरा उपदेश प्रचारित करने वालों को अभागियों का आक्रोश और बेबसो का विलाप अब सुनाई नहीं दे रहा है। तूने जिन मेमनों को इस दुनिया मे भेज दिया था, वे अब भेड़िये बन गए हैं और उन मेमनों को खा रहे हैं, जिन्हे तूने अपने कंधो पर उठाया था और आशीर्वाद दिया था।

''वह प्रकाश-शब्द, जो तेरे अन्त:करण से निकला था, धर्मग्रथ से मिट गया है और उसकी जगह आत्मा को डराने वाला खाली और भयावना शोरगुल आ गया है।

''ऐ मसीहा! इन लोगों ने अपनी शोहरत के लिए ये गिरजाघर बनाए हैं और उन्हें रेशम और सोने के पत्तरों से सजाया है । तेरे प्यारे ग़रीबो के जिस्मों को उन्होंने जाड़े की रातों में फटे चीथड़ो में छोड दिया है ..। उन्होंने जलती मोमबत्तियो और धूप के धुएं से आकाश को भर दिया है और तेरे ईमानदार भक्तों के पेट ख़ाली हैं । उन्होंने तेरी स्मृतियो के स्वरों से सारा वायुमडल गुंजा दिया है; परन्तु विधवाओं और अनाथों के शोक-विलाप की ओर से उन्होंने अपने कानों को बिल्कुल बहरा बना लिया है।

''फिर से आ जा, ऐ चिरंजीवी ईसा! तू आ जा और अपने पवित्र मदिर से इन धर्म बेचने वालों को निकाल बाहर कर; क्योंकि उन्होंने उस मंदिर को एक अंधेरी गुफा बना दिया है, जिसमें ढोंग और झूठ के ज़हरीले सांप रेंग रहे हैं और भीड़ लगाए हुए हैं।''

जॉन के दृढ़ एवं सच्चे शब्द लोगों को अच्छे लगे और अपनी फुसफुसाहट से उन्होने अपनी स्वीकृति जतलाई। बड़े पादरियों की निकटता उसे दबा नहीं सकी। अपने पहले के अनुभव की स्मृतियों से अधिक शक्तिशाली बनकर वह ज्यादा हिम्मत के साथ आगे बोलता गया, ''आ जा ऐ मसीहा! आ जा और उन बदमाशों से अपना हिसाब चुकता करवा ले जिन्होंने कमज़ोरों से वह सब कुछ छीन लिया है जा कमज़ोरों का था और से वह सब कुछ छीन लिया है जो का

था। वह अगूर की बेल, जिसे तूने अपने दाहिने हाथ से लगाया था, लालच के कीड़ों ने खा डाली है और उसके गुच्छे नीचे गिरकर कुचल गए हैं। तेरे शांतिपुत्र अब अलग-अलग गुटो में बट गए हैं और ग़रीब आत्माओं को सर्दियों भरे खेतो में बदकिस्मती का शिकार बनाकर आपस में लड़-झगड़ रहे हैं। तेरी वेदी के सामने वे जोर-शोर से प्रार्थना करते हैं और कहते हैं, 'कीर्ति तो आकाश में रहने वाले परमेश्वर के लिए है और इस पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के लिए है शांति और सद्इच्छा!' आकाश मे रहने वाले हमारे पिता का नाम जब ख़ाली दिलों, पापी होठों और झूठी जबानों से निकलेगा तो क्या इससे उसकी कीर्ति बढ़ जाएगी! जब दुर्भाग्य के पुत्र बलवानो को खिलाने और जालिमों के पेट भरने के लिए खेतों में अपना पसीना बहा रहे हों तो क्या इस संसार मे शांति रह सकती है? क्या सचमुच कभी शाति आएगी और उन्हे निर्धनता तथा अभाव के चंगुलों से बचाएगी?

"शाति क्या है? क्या वह उन बच्चों की आंखो में है, जो सर्दी में ठिठुरने वाली झोपड़ियो मे अपनी भूखी माताओं के सूखे स्तनों से चिपटे हुए हैं? या वह उन भूखे लोगो के बदनसीब झोपड़ों मे है, जो पत्थरों के फर्श पर सोते हैं और उस अन्न के एक कौर के लिए लालायित होते रहते हैं, जो गिरजाघर के पादरी अपने मोटे-ताजे सूअरो के सामने डालते है?

"ऐ सुन्दरता के देवता ईसा! आनद क्या है? जब कोई अमीर मौत का डर दिखाकर या चादी के कुछ टुकडो के बदले मे पुरुषो की शक्तिशाली भुजाए और स्त्रियो की इज्ज़त खरीदता है, तब क्या यह आनंद प्रकट होता है? या उन लोगों की शरण मे जाकर अपने शरीर और आत्मा को उनका ग़ुलाम बनाने में आनंद है, जो अपने जगमगाते तमग़ों और सोने के मुकुटो से हमारी आंखो को चकाचौंध कर देते हैं? तेरी शक्ति के पुजारियों के विरुद्ध की जाने वाली हर शिकायत पर वे अपने तलवारो और भालों वाले सिपाहियों से हमारी स्त्रियों और बच्चों पर हमला करवाते हैं और हमारा खून चूसते हैं।

"प्रेम और दया से परिपूर्ण ऐ ईसा! अपने मज़बूत हाथों को आगे बढ़ाकर इन डाकुओ से तू हमें बचा ले, या फिर उस मौत को भेज दे, जो हमें इस हालत से बरी करके कब्र मे पहुचा दे, जहा हम तेरे सलीब की निगरानी में शांति के साथ विश्राम कर सकें। वहां हम तेरे लौटने की प्रतीक्षा करते रहेंगे। ऐ शक्तिशाली ईसा, यह जीवन गुलामी की एक कालकोठरी के सिवा कुछ नहीं है .। यह भूत-प्रेतो की एक क्रीडास्थली है। यह एक गड्ढा है, जिसमें मौत के भूत-पिशाच रहते हैं। हमारे दिन सिर्फ़ तेज तलवारें हैं, जो रात के भयावने अधेरे में हमारे बिस्तरों की फटी-पुरानी रजाई के नीचे छिपी हुई होती हैं। सुबह के वक्त ये हथियार दैत्यों की तरह हमारे सिरों पर उठते हैं और कोडों की मार से खेतों में कराई जाने वाली गुलामी की ओर हमें इशारा करते हैं

"ऐ ईसा! उन दबे हुए ग़रीबों पर दया कर, जो आज तेरे पुनर्जीवन का समारोह मनाने यहां आए थे... । उन पर तरस खा, क्योंकि वे दु:खी और दुर्बल हैं।"

जॉन की ये बातें एक समूह को पसंद आईं और दूसरे को बुरी लगीं। एक दल बोला, "यह सच्ची बात कह रहा है और हमारी तरफ से भगवान के सामने फरियाद कर रहा है।" दूसरा दल बोला, "इस पर किसी ने बुरा जादू कर दिया है, क्योंकि यह शैतान की तरह बोल रहा है।" तीसरा दल बोला, "हमने आज तक ऐसी बकवास कभी नहीं सुनी— अपने बाप-दादा से भी नहीं सुनी। हमें चाहिए कि हम इसे बंद करवा दें।" एक आदमी अपने पास वाले व्यक्ति के कानों में धीरे से बोला, "जब मैंने इसकी बातें सुनीं तो मुझे ऐसा लगा, मानो मुझमें एक नई आत्मा का सचार हुआ है।" इस पर वह पास वाला व्यक्ति बोला, "मगर इसकी बनिस्बत पादरी लोग हमारी ज़रूरतों को ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं। उनके प्रति अविश्वास करना पाप है।"

थोड़ी ही देर में सागर के गर्जन की तरह चारों ओर से आवाज़ें उठने लगीं। तब उनमें से एक पादरी आगे बढा। उसने जॉन को रोका और तुरंत सिपाहियों के हवाले कर दिया। तब उसे अधिकारी के महल में सुनवाई के लिए ले जाया गया।

ज़ब उससे पूछताछ की जाने लगी तो उसने मुंह से एक भी शब्द नहीं निकाला; क्योंकि वह जानता था कि ईसा मसीह ने अपने अत्याचारियों के सामने चुप्पी साध ली थी। अधिकारी ने जॉन को जेलख़ाने में डाल देने का हुक्म दिया। वहा उस रात को कारागार की दीवार के पत्थरों पर सिर रख कर वह शांति के साथ निर्मल अन्त:करण से सो गया।

दूसरे दिन जॉन का बाप अधिकारी के सामने हाजिर हुआ और दु:ख भरे स्वर मे बोला, "हुजूर, मेरा यह बेटा पागल है। यह कई बार अकेले में ही बातें करता रहता है। वह ऐसी अजीब बातें करता है, जो किसी की समझ में नहीं आ सकतीं और न वैसा कुछ किसी को दिखाई दे सकता है। कई बार रात की ख़ामोशी में बेकार शब्दों का प्रयोग करके वह बोलता रहता है। मैंने उसे कई मरतबा भूत-पिशाचो को बुलाते हुए सुना है, जैसे कि जादूगर बुलाता है। इस विषय में आप हमारे पड़ोसियों से भी पूछ सकते हैं। इससे बातें करने के बाद उनके मन में कोई शका नहीं रही है कि यह पागल है। जब कोई इससे बोलता है तो यह उसका कोई जवाब नहीं देता; और जब यह ख़ुद बोलता है, तो मुंह से ऐसे गूढ़ शब्द और वाक्य निकालता है, जो सुनने वाले की समझ मे नहीं आते और मूल बात से कोई ताल्लुक नहीं रखते। इसकी मां इसे अच्छी तरह जानती है। उसने इसे कई बार दूर क्षितिज की ओर टकटकी लगाए और झरनों, फूलों और सितारों के विषय में बच्चों की तरह जोश से बातें करते देखा है। उन पादरियों से पूछिए हुज़ूर, जिनके उपवास के दिनों मे इसने उनके उपदेशों की कडी आलोचना करके हसी उडाई थी सरकार यह

पागल तो है, मगर मुझ पर और अपनी मां पर बड़ी मेहरबानी की निगाह रखता है। हमारे बुढ़ापे के दिनों में यह हमारी बहुत मदद करता है। हमें भोजन और कपडे देकर ज़िंदा और गर्म रखने के लिए यह जी-जान से काम करता है। आप हम पर तरस खाइए और उस पर दया कीजिए।''

अधिकारी ने जॉन को रिहा कर दिया और उसके पागलपन की ख़बर सारे गांव में फैल गई। जब लोग जॉन के बारे में बोलते तो उसका उल्लेख मज़ाक़ और उपहास के साथ करते। कुंवारी लड़कियां उसे दु:खभरी आंखों से देखतीं और कहतीं, ''भगवान की लीला अपरम्पार है. .। इस युवक को देखो, कितना सुंदर है! मगर बेचारा पागल हो गया है। इसकी आंखें कैसी दयालु और तेजस्वी हैं, पर परमेश्वर ने उस तेज को उसकी अदृश्य आत्मा के अंधेरे के साथ जोड़ दिया है।''

□□

परमेश्वर के खेतों, हरे-भरे चरागाहों और हरी घास तथा सुंदर फूलों से सजी हुई पहाड़ियों की बग़ल में जॉन का भूत अकेला और बेचैन बैठा उन पशुओं को शांति के साथ चरते देख रहा है, जिन्हें मानव की ओर से कोई कष्ट नहीं पहुंच रहे हैं। उस घाटी के दोनों ओर फैले हुए गांवों को आंसू भरी आंखों से वह देखता है और गहरी आहें भरता हुआ कहता है, ''तुम लोग बहुत हो और मैं अकेला हूं। रात के अंधेरे में भेड़िये मेमनों पर झपट पड़ते हैं, मगर घाटी के पत्थरों पर पड़े हुए ख़ून के धब्बे सुबह तक बने रहते हैं और उसकी ख़बर सूरज सारी दुनिया पर प्रकट कर देता है।''

□□

पिता इस्मान को लोग धार्मिक तथा आध्यात्मिक बातों के लिए अपना पथ-प्रदर्शक मानते थे, क्योंकि वे धर्म एवं अध्यात्मवाद के प्रकांड पंडित थे। कौन अपराध क्षम्य है अथवा कौन दंड देने योग्य— इसकी उन्हें पूरी जानकारी थी। स्वर्ग, नर्क और पाप-मोचन के रहस्यों से वे पूर्णत: परिचित थे।

उत्तरी लेबनान में पिता इस्मान का कार्य एक गांव से दूसरे गांव में घूम-घूमकर जन-साधारण को धार्मिक उपदेश देते हुए, उन्हें आध्यात्मिक रोगों से मुक्त कराना और शैतान के भयानक जाल से बचाना था।

पिता इस्मान शैतान से अनवरत युद्ध ठाने रहते थे। लोगों की इस पुजारी में श्रद्धा थी और वे इनका बड़ा आदर करते थे। इनके उपदेशों को सोने-चांदी से ख़रीदते थे। हर फ़सल में वे उन्हें अपने खेतों के सुन्दरतम फल भेंट किया करते थे।

शरद ऋतु की एक सन्ध्या को, जबकि पिता इस्मान एक एकान्त गांव की ओर घाटियों और पहाड़ियों को पार करते चले जा रहे थे, उन्होंने एक दर्दनाक चीत्कार सुनी, जो सड़क के किनारे की एक खाई में से आ रही थी। वे रुक गए और जिस ओर से आवाज़ आ रही थी, उधर देखने लगे।

उन्होंने देखा कि एक नंगा आदमी पृथ्वी पर पड़ा हुआ है और उसके सिर एव छाती के गहरे घावों से रक्त की धारा बह रही है। वह करुण स्वर में सहायता के लिए प्रार्थना कर रहा है और कह रहा है, ''मुझे बचाओ, मेरी सहायता करो, मुझ पर दया करो, मैं मर रहा हूं।''

पिता इस्मान व्यग्रता से उसे ताकने लगे और स्वयं अपने से बोले, 'यह मनुष्य अवश्य कोई चोर है। सम्भवत: इसने राह चलतों को लूटने का प्रयास किया है, किन्तु असफल रहा। किसी ने इसे घायल कर दिया है और मुझे डर है, यदि यह मर गया तो इसको मारने का अपराध मुझ पर ही थोप दिया जाएगा।'

इस प्रकार स्थिति पर सोच-विचार कर पिता इस्मान आगे बढ़ चले। किन्तु मरने वाले मनुष्य ने पुकार कर उन्हें फिर रोक लिया, "कृपया मुझे छोड़कर न जाओ। मैं मर रहा हू।"

इस पर पिता इस्मान ने फिर सोचा और यह सोचकर कि वे किसी की सहायता करने से इन्कार कर रहे हैं, उनका चेहरा पीला पड़ गया। उनके होंठ फडकने लगे, किन्तु वह मन-ही-मन बोले, 'जरूर ही यह उन पागलो में से एक है, जो कि निर्जन वन मे निरुद्देश्य घूमा करते हैं। इसके घावों को देखकर तो मेरा हृदय भी काप उठता है। मुझे क्या करना चाहिए? निस्सन्देह एक आध्यात्मिक चिकित्सक शारीरिक घावों की देख-रेख करने योग्य नहीं है।'

पिता इस्मान कुछ क़दम आगे बढे तो उस अधमरे व्यक्ति ने एक कष्टदायक आह भरी, जिससे पत्थर का हृदय भी पिघल जाता! वह हांफते-हाफते बोला, "मेरे पास आओ। आओ, क्योंकि एक अरसे से हम दोनों गहरे मित्र रहे हैं। तुम पिता इस्मान हो। अच्छे चरवाहे, और मैं न तो कोई चोर हूं और न पागल ही। पास आओ और मुझे इस एकान्त स्थान में न मरने दो। आओ तो, तब मैं बताऊंगा कि मैं कौन हूं।"

पिता इस्मान इस व्यक्ति के थोड़ा और पास आ गए और झुककर उसे देखने लगे, किन्तु उन्हें एक अजीब चेहरा दिखाई दिया, जिसकी आकृति नितान्त भिन्न थी। उन्हे उसमे बुद्धिमत्ता के साथ कपट, सुन्दता के साथ कुरूपता तथा नम्रता के साथ दुष्टता दिखाई दी। वे उलटे पैर तुरन्त लौट गए और पूछने लगे, "तुम कौन हो?"

क्षीण स्वर में मरने वाले मनुष्य ने कहा, "मुझसे डरो नहीं, ऐ पिता! क्योंकि बहुत समय से हम दोनों में मित्रता चली आयी है। मुझे खड़े होने में सहायता दो और पास के किसी झरने पर ले जाकर मेरे घावों को अपने कपड़े से धो दो।"

किन्तु पिता ने पूछा, "मुझे बताओ कि तुम कौन हो, क्योंकि मैं तुम्हें नहीं पहचानता और इतना भी याद नहीं कि तुम्हें कहीं देखा है!"

उस आदमी ने पीड़ित स्वर में उत्तर दिया, "तुम मुझे पहचानते हो, तुमने मुझे हजार बार देखा है और तुम मेरे बारे मे नित्य बातचीत करते हो। मै तुम्हें अपने जीवन से भी अधिक प्रिय हूं।"

पिता ने उसे झिड़क कर कहा, "तुम झूठे हो, पाखण्डी हो! एक मरने वाले मनुष्य को तो सत्य बोलना चाहिए। तुम्हारा पापी चेहरा मैंने अपने सारे जीवन में कभी नहीं देखा। मुझे बताओ कि तुम कौन हो, नहीं तो मैं तुम्हें यहीं तुम्हारे हाल पर छोड़ जाऊंगा।"

तब घायल आदमी जरा-सा हिला और उसने पुजारी की आंखों में झांका उसके होंठों पर एक शैतानी मुस्कान फैल गई। वह शान्त, गूढ़ तथा नम्र स्वर में

'मैं शैतान हू

इस भयानक शब्द को सुनते ही पिता इस्मान ने एक उत्कट चीत्कार किया, जो दूर घाटी के अन्त तक गूंज उठा। तब उन्होंने देखा और अनुभव किया कि मरने वाले व्यक्ति का शरीर अपनी विचित्र वक्रता के साथ उस शैतान से मिलता है, जिसकी छवि गांव के गिरजे की दीवार पर टंगे हुए एक धार्मिक चित्र में अंकित है।

वह भयभीत हो उठे और यह कहते हुए चिल्लाने लगे, ''ईश्वर ने मुझे तेरी नारकीय छवि दिखलाई है और वह भी ठीक तुझे घृणा करने के निमित्त ही। तेरा सदैव के लिए अन्त हो! चरवाहे को चाहिए कि वह मुर्दा भेड़ को अलग कर दे, जिससे वह दूसरी भेड़ों को रोगी न बना दे।''

शैतान ने उत्तर दिया, ''ऐ पिता! जल्दी न करो और भागते हुए समय को व्यर्थ की बातों में न गंवाओ। आओ और इससे पहले कि जीवन मेरे शरीर को त्याग दे, मेरे घावों को भर दो।''

पिता ने कड़े स्वर मे कहा, ''उन हाथों को, जो नित्य ईश्वर की अर्चना करते हैं, नरक के रहस्यों से गढ़े हुए एक शरीर को नहीं छूना चाहिए। तुझे युग-युग की जिह्वाओं और मानवता के होंठों ने अपराधी घोषित किया है। तुझे अवश्य मरना चाहिए; क्योंकि तू मनुष्यता का शत्रु है और सदाचार का अन्त करना ही तेरा स्पष्ट उद्देश्य है।''

शैतान बड़े कष्ट से थोड़ा हिला और एक कुहनी पर ऊपर उठकर बोला, ''तुम नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो। न तुम उस पाप को समझते हो, जो तुम स्वय अपने ऊपर कर रहे हो। छोड़ो इसे, क्योंकि अब मैं अपनी कहानी सुनाऊंगा।

''इस निर्जन घाटी में आज मैं अकेला घूम रहा था। जब मैं इस स्थान पर पहुचा तो देवताओं के एक गिरोह ने ऊपर से उतरकर मुझ पर आक्रमण किया और मुझे बड़ी बेरहमी से मारा। यदि उनमें वह एक देवता न होता, जिसके पास चमकती हुई तलवार थी तो मैं उन्हें खदेड़ देता; किन्तु उस चमचमाती तलवार के विरोध के लिए मुझमें शक्ति नहीं थी।''

ज़रा देर के लिए शैतान चुप हो गया और अपने कांपते हाथ से वह पहलू के एक घाव को दबाने लगा। फिर आगे बोला, ''हथियारों से लैस देवता जो शायद मीचेल[1] था, एक चतुर तलवार चलाने वाला था। यदि मैं पृथ्वी पर न गिर गया होता और अपने मरने का बहाना बनाकर न पड़ा रहता तो अवश्य ही उसने मुझे मौत के घाट उतार दिया होता।''

आकाश की ओर देखते हुए हर्षित होकर पिता बोले, ''मीचेल का भला हो, जिसने मनुष्यता को उसके सबसे बड़े शत्रु से मुक्त किया है।''

---

1 अरब का देवता

किन्तु शैतान ने विरोध किया, ''जितनी घृणा तुम अपने आपसे करते हो, उससे कम मैं मनुष्यता का तिरस्कार करता हूं। तुम मीचेल की पूजा कर रहे हो, जो तुम्हारे उद्धार के लिए भी नहीं आया।

''मेरी हार के समय तुम मेरी निन्दा कर रहे हो, यद्यपि मैं सदैव से और अभी भी तुम्हारी शान्ति और सुख का स्रोत हूं।

''तुम मुझे अपनी शुभकामनाएं नहीं देना चाहते और न मुझ पर दया ही करना चाहते हो; किन्तु तुम मेरे साये में ही जीवित रहते हो और फलते-फूलते हो।

''तुमने मेरे अस्तित्व को एक बहाना बनाया है और अपनी जीवन-वृत्ति के लिए एक अस्त्र, और अपने कर्मों को न्यायोचित बताने के लिए तुम लोगों से मेरा नाम लेते फिरते हो।

''क्या मेरे भूतकाल ने भविष्य में मेरी आवश्यकता को प्रमाणित नहीं कर दिया? क्या तुम समस्त आवश्यक धन संचित कर अपने लक्ष्य तक पहुंच चुके? क्या तुम्हें यह ज्ञात हो गया है कि मेरी सत्ता का भय दिखाकर तुम अपने अनुयायियों से और अधिक सोना-चांदी प्राप्त नहीं कर सकते?

''क्या तुम्हें यह पता नहीं है कि यदि मेरा अन्त हो गया तो तुम भी भूखे मर जाओगे? यदि आज तुम मुझे मर जाने दोगे तो कल को तुम क्या करोगे? अगर मेरा नाम ही दुनिया से उठ गया तो तुम्हारी जीविका का क्या होगा?

''देखो, वर्षों से तुम गांव-गांव घूमते फिरे हो और लोगों को चेतावनी देते आए हो कि वे मेरे जाल में न फंस जाएं। वे तुम्हारे उपदेशों को अपने ग़रीब पैसों और खेतों की फ़सल से मोल लेते रहे हैं। फिर कल, जब वे जान जाएंगे कि उनके दुष्ट शत्रु का अब कोई अस्तित्व नहीं है, तो वे तुमसे क्या मोल लेंगे? तुम्हारी जीविका का मेरे साथ ही अन्त हो जाएगा, क्योंकि लोग पाप करने से ही छुटकारा पा जाएंगे।

''एक पुजारी होकर क्या तुम यह नहीं सोच पाते कि केवल शैतान के अस्तित्व ने ही उसके शत्रु 'मंदिर' का निर्माण किया है? वह पुरातन विरोध ही एक ऐसा रहस्यमय हाथ है, जो कि निष्कपट लोगों की जेबों में से सोना-चांदी निकालकर उपदेशकों और महंतों की तिजोरियों में संचित करता है।

''तुम किस प्रकार मुझे यहां मरता हुआ छोड़ सकते हो, जबकि तुम जानते हो कि निश्चय ही ऐसी दशा में तुम अपनी प्रतिष्ठा, अपना मन्दिर, अपना घर और अपनी जीविका खो दोगे?''

शैतान ने कुछ देर के लिए मुंह बंद कर लिया और उसकी आर्द्रता अब पूर्ण स्वतन्त्रता में परिणत हो गई। फिर वह बोला, ''तुम गर्व मे चूर हो, किन्तु नासमझ भी हो। मैं तुम्हें 'विश्वास' का इतिहास सुनाऊंगा और उसमें तुम उस सत्य को पाओगे जो हम दोनों के अस्तित्व को संयुक्त करता है और मेरे अस्तित्व को तुम्हारे अन्त करण से बाध देता है

"समय के आरम्भ के पहले पहर में आदमी सूर्य के चेहरे के सामने खड़ा हो गया और उसने अपनी बांहें फैला दीं। तब पहली बार चिल्लाया, 'आकाश के पीछे एक महान, स्नेहमय और उदार ईश्वर वास करता है।'

"जब आदमी ने उस बडे वृत्त की ओर पीठ फेर ली तो उसे अपनी परछाई, पृथ्वी पर दिखाई दी। वह चिल्ला उठा, 'पृथ्वी की गहराइयों में एक शैतान रहता है, जो दुष्टता को प्यार करता है।'

"और वह आदमी अपने-आपसे कानाफूसी करता हुआ अपनी गुफा की ओर चल दिया, 'मैं दो बलशाली शक्तियों के बीच हू। एक वह, जिसकी मुझे शरण लेनी चाहिए और दूसरो वह, जिसके विरुद्ध मुझे युद्ध करना होगा।'

"और सदिया जुलूस बनाकर निकल गई, लेकिन मनुष्य दो शक्तियो के बीच डटा रहा—एक वह, जिसकी वह अर्चना करता था, क्योंकि इसी में उसकी उन्नति थी और दूसरी वह, जिसकी निन्दा करता था, क्योंकि वह उसे भयभीत करती थी।

"किन्तु उसे कभी यह नहीं मालूम हुआ कि अर्चना अथवा निन्दा का अर्थ क्या है? वह तो बस दोनों के मध्य में स्थित है, एक ऐसे वृक्ष के समान, जो ग्रीष्म के, जबकि वह खिलता है और शीत के, जबकि वह मुरझा जाता है, बीच खड़ा है।

"जब मनुष्य ने सभ्यता का उदय होते देखा, जैसा कि मनुष्य समझते हैं, परिवार एक इकाई के रूप मे अस्तित्व में आया। फिर वर्ग बने, फिर मज़दूरी योग्यता और प्रवृत्ति के अनुसार बांट दी गई। एक जाति खेती करने लगी, दूसरी मकान बनाने लगी, कुछ कपड़े बुनने या अन्न की पैदावार करने लगे।

"इसके बाद भविष्यवक्ता ने अपना रूप दिखाया और यह सर्वप्रथम जीविका थी, जो ऐसे लोगों ने अंगीकार की, जिनको दुनिया की किसी भी ज़रूरी चीज़ की आवश्यकता नहीं थी।"

फिर कुछ देर के लिए शैतान ख़ामोश हो गया। तब वह एक बारगी हंस पड़ा और उसके प्रमोद की गूंज निर्जन घाटी में दूर तक फैल गई; किन्तु उसकी हंसी ने उसे उसके ज़ख्मों की याद दिलाई और दर्द के कारण एक हाथ उसने अपने ज़ख्मों पर रख लिया। अब वह अपने को स्थिर कर बोला, "तो ज्योतिष की उत्पत्ति हुई और पृथ्वी पर इसकी उन्नति एक अनोखे ढंग से होने लगी।

"प्रथम जाति में एक ला-विस नाम का मनुष्य था। मैं नहीं जानता कि उसके नाम की उत्पत्ति कहां से हुई। वह बुद्धिमान था; किन्तु बहुत ही निरुद्योगी। खेत पर काम करने, झोपड़े बनाने, गाय-बैल पालने या ऐसे किसी कार्य से वह घृणा करता था, जिसमें कि शारीरिक परिश्रम की आवश्यकता पड़े। और चूंकि इन दिनों रोटी पाने के सिवा कडी मेहनत के कोई दूसरा उपाय नहीं था ला-विस को अनेक रातें ख़ाली पेट ही काटनी पडती थीं

''गर्मियो को एक रात को, जबकि जाति के सब लोग गिरोह के सरदार की झोपड़ी को चारों ओर से घेरे खड़े थे और दिन की कार्यवाही पर चर्चा कर रहे थे और सोने के समय की बाट जोह रहे थे, एक आदमी हठात् अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ और चंद्रमा की ओर इशारा करता हुआ चिल्लाया, 'रात्रिदेव की ओर देखो। इसके चेहरे पर अंधकार छा गया है और उसकी सुन्दरता समाप्त हो गई है। वह एक ऐसे काले पत्थर के रूप में बदल गया है, जो आकाश की छत से लटका हुआ है।'

''सभी लोगो ने चन्द्रमा की ओर देखा। वे चिल्ला पड़े और मारे डर के बेदम से हो गए, मानो अन्धकार के हाथों ने उनके हृदय को दबोच लिया हो, क्योंकि उन्होंने देखा कि रात्रिदेव काली गेंद के रूप में बदल गया है, जिसके कारण पृथ्वी की चमक मिट गई है और पहाड़ियां तथा घाटियां उनकी आंखों के सामने ही काले आवरण के पीछे अन्तर्धान हो गई हैं।

''इसी समय ला-विस जिसने इससे पहले चन्द्रग्रहण देखा था और उसके मामूली से कारण को समझा था, अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए आगे बढा।

''वह गिरोह के बीच खड़ा हो गया और अपने हाथों को आकाश की ओर उठाकर भरी हुई आवाज़ में बोला, 'नीचे झुक जाओ और प्रार्थना करो, क्योंकि अन्धकार के दुष्टदेव और उज्ज्वल रजनीदेव में युद्ध ठन गया है। यदि दुष्टदेव जीत गया तो हम सब लोग भी समाप्त हो जाएंगे; किन्तु यदि रजनी-देव की विजय हुई तो हम सब लोग जीवित रहेंगे। अब प्रार्थना करो। अपने चेहरों को मिट्टी से ढक लो। अपनी आंखें बन्द कर लो और अपने सिरों को आकाश की ओर न उठाओ, क्योंकि जो भी दोनों देवताओं के युद्ध को देखेगा, वह ज्योतिहीन तथा बुद्धिहीन हो जाएगा और जीवन पर्यन्त अन्धा तथा पागल बना रहेगा। अपने मस्तक नीचे झुकाओ और अपने हृदय की पूर्ण भक्ति से अपने उस शत्रु के विरोध में, जो कि हम सबका प्राणघातक शत्रु है, रात्रिदेव को सबल बनाओ।'

''और ला-विस इसी प्रकार की बातें करता रहा और अपने भाषण में उसने स्वयं अपने द्वारा ही रचित अनेक ऐसे गुप्त शब्दों का प्रयोग किया, जो उन लोगों ने कभी न सुने थे।

''इस धूर्तता के बाद, जब चन्द्रमा अपनी पूर्व उज्ज्वलता में परिणत हो गया तो ला-विस ने पहले से भी अधिक अपनी आवाज़ को ऊंचा किया और प्रभावशाली स्वर में बोला, 'अब ऊपर उठो और देखो कि रात्रि-देव ने अपने दुष्ट शत्रु पर विजय पा ली है। सितारों के बीच वह फिर अपनी यात्रा पर अग्रसर हुआ है। तुम्हें यह जानना चाहिए कि अपनी प्रार्थनाओं द्वारा तुमने उसे अंधकार के दैत्य को जीतने में दी है वह अब बहुत प्रसन्न है और सदैव से भी अधिक है

''सभी लोग उठ खड़े हुए और चन्द्रमा को देखने लगे, जो फिर पूर्ण रूप से प्रकाशित था। उनका भय समाप्त हो गया और उनकी व्याकुलता आनन्द में परिवर्तित हो गई। वे नाचने-गाने लगे और अपनी भारी छड़ी से लोहे की चादरों पर आघात करने लगे। इसी प्रकार उपत्यकाएं शोर-गुल से भर उठीं।

''उस रात को गिरोह के सरदार ने ला-विस को निमन्त्रित किया और कहा, 'तुमने ऐसा कार्य किया है, जिसे आज तक कोई नहीं कर पाया। तुमने एक गुप्त भेद की जानकारी का दर्शन किया है, जिसे हममें से कोई भी समझ पाने में असमर्थ है। जैसा कि मेरी प्रजा चाहती है, आज से तुम सारे गिरोह में, मेरे बाद, सबसे उच्च पदाधिकारी होगे। मैं सबसे अधिक बलवान हूं और तुम सबमें बुद्धिमान तथा बहुत ही शिक्षित पुरुष हो। तुम हमारे और देवताओं के बीच मध्यस्थ हो। उन देवों की इच्छाओं और उनके कार्यो की व्याख्या तुम्हें करनी होगी और तुम हम लोगो को ऐसी बातें सिखाओगे, जो उनकी शुभकामनाएं तथा स्नेह पाने के लिए आवश्यक हैं।'

''और ला-विस ने चतुराई से विश्वास दिलाया, 'मनुष्य का ईश्वर जो कुछ भी मेरे दिव्य सपनों में मुझसे कहेगा, वह सभी जाग्रत अवस्था में तुम्हें बता दिया जाएगा, और तुम विश्वास रखो कि मैं तुम्हारे और ईश्वर के बीच में प्रत्यक्ष रूप से कार्य करूंगा।'

''सरदार को विश्वास हुआ और ला-विस को दो घोड़े, सात गायें, सत्तर भेडे और सत्तर मेमने भेंट किए। फिर वह ला-विस से इस प्रकार बोला, 'गिरोह के आदमी तुम्हारे लिए एक मज़बूत मकान बना देंगे और हर फ़सल के समय अन्न का एक भाग तुम्हें भेंट किया करेंगे, जिससे कि तुम सम्मानित और माननीय गुरु की भांति रह सको।'

''ला-विस खड़ा हो गया और जाने को तैयार ही था कि सरदार ने रोक लिया और कहा, 'वह कौन है और कहां है, जिसे तुम मनुष्य का ईश्वर कहते हो? और यह साहसी देव कौन है, जो कि उज्ज्वल रात्रि के देवता से युद्ध करता है? पहले तो कभी हमने उसके बारे में नहीं सुना था।'

''ला-विस ने अपने माथे को खुजाया और उत्तर दिया, 'मेरे माननीय सरदार! प्राचीन समय मे, मनुष्य के जन्म से पहले, सभी देवता एक साथ शान्तिपूर्वक, सितारों की विस्तीर्णता के पीछे, ऊपर के ससार में वास करते थे। देवताओं के देवता प्रभु उनके पिता थे। प्रभु उन बातों को जानते थे, जिसे देवता नहीं जानते थे। प्रभु ऐसे कार्य करते थे, जो देवता लोग करने में असमर्थ थे। उन्होंने ऐसे दिव्य रहस्य, जो नित्य के विधान के बाहर के थे, केवल अपने पास तक सीमित रखे थे। बारहवें युग के सातवें वर्ष में बाहतार[1] की आत्मा ने, जो महान ईश्वर से घृणा

1 अरब का वह देवता जो बाद में शैतान बना

करता था, विद्रोह कर दिया और अपने पिता के सम्मुख खड़े होकर बोला, सभी जीवधारियों पर आप स्वयं अपनी ही महान सत्ता का अधिकार क्यों जमाए रखते हैं और हमसे सृष्टि के विधान को क्यों छिपाए हुए है? क्या हम आपके वे बच्चे नही, जो केवल आपमें ही विश्वास रखते हैं और आपके अनन्त ज्ञान और महान सत्ता के भागीदार हैं?'

"देवताओं के देवता इस पर क्रुद्ध हो गए और बोले, 'प्रारम्भिक अधिकार और महान सत्ता तथा आवश्यक रहस्य तो मैं अपने पास सुरक्षित रखूंगा ही, क्योंकि मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूं।'

"और बाहतार ने उत्तर मे कहा, 'जब तक आप मुझे अपनी सत्ता और अधिकार में भागीदार नही बनाएंगे, मै, मेरे बच्चे और मेरे बच्चो के बच्चे आपके विरुद्ध विद्रोह करेंगे।'

"तब देवताओं के देवता अनन्त आकाश में अपने सिहासन पर खड़े हो गए। उन्होंने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली तथा सूर्य को ढाल के रूप में हाथ में थाम लिया। एक ऐसी आवाज़ में, जिसने सृष्टि के समस्त कोनो को हिला दिया, वह बोले, 'नीचे गिर, दुष्ट विद्रोही, उस नीचे के शोकयुक्त संसार में, जहा अन्धकार और दुर्भाग्य का राज्य है, वहां तू अकेला रहेगा और निरुद्देश्य घूमता फिरेगा, जब नक सूर्य राख के ढेर में और सितारे छितरी हुई किरणो में परिवर्तित न हो जाएंगे।'

"उसी क्षण बाहतार ऊपरी ससार से गिरकर नीचे की दुनिया मे जा पड़ा, जहां कि समस्त अधर्मी आत्माएं लड़ती-झगड़ती रहती हैं।

"तब बाहतार ने जीवन के रहस्यों की शपथ ली, कि वह अपने पिता और भाइयों से युद्ध करेगा और प्रत्येक आत्मा को, जो उससे प्रेम करेगी, अपने फन्दे मे फसाएगा।

"जैसे ही सरदार ने यह सुना उसके माथे पर सिलवट पड़ गई और उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया। उसने कठिनाई से पूछा, 'तो पापी देवता का नाम बाहतार है।'

"ला-विस ने उत्तर दिया, 'हा, उसका नाम बाहतार था, पहले वह ऊपर के समार में था; किन्तु जब वह नीचे की दुनिया में आ गया तो उसने बडी सफलता से अगने भिन्न-भिन्न नाम रखे— बालज़ाबूल, शैतानेल, बलिआल, जमील, आहरीमान, मारा, अबदौन, डैविल और अन्त में शैतान जो कि बहुत विख्यात है।'

"सरदार ने 'शैतान' शब्द को कंपित स्वर में कई बार दोहराया। उसके मुख से एक ऐसी आवाज़ निकल रही थी, जो तेज़ हवा के चलने पर सूखी टहनियों की खड़खड़ाहट से उत्पन्न होती है। तब उसने कहा, 'शैतान आदमी से भी उतनी ही घृणा क्यों करता है, जितनी कि ईश्वर से।'

"और ला-विस ने शीघ्रता से उत्तर दिया 'वह मनुष्य से इसलिए घृणा करता ह क्योकि वे भी शैतान के भाई बहनों की सन्तान ही हैं

''सरदार ने प्रश्न किया, 'तब शैतान मनुष्य का चाचा है?'

''ला-विस ने उत्तर दिया, 'हां! माननीय सरदार! किन्तु वह उनका सबसे बडा शत्रु है, जो उनके दिनों में दु:ख एवं रात्रियों को भयानक स्वप्नों से भर देता है। यह वह शक्ति है, जो कि तूफ़ान को उन मनुष्यों के घरों की ओर भेजती है और उनके खेतों पर दुर्भिक्ष लाती है तथा उनको और उनके जानवरों को रोग-ग्रस्त बनाती है। वह एक अधर्मी, किन्तु शक्तिशाली देव है। वह बड़ा ही दुष्ट है। जब हम दु:खी होते हैं, वह हंसता है और यदि हम प्रसन्न होते हैं तो वह दु:ख मनाता है। तुम सबको मेरी योग्यता की सहायता से उसकी ठीक से जाच-पड़ताल करनी चाहिए ताकि तुम लोग उसके जाल में न फंस पाओ और उसके दुष्ट कर्मो से दूर रह सको।'

''सरदार ने अपना सिर मोटी छड़ी पर झुका दिया और फुसफुसाया, 'उस अद्‌भुत शक्ति का रहस्य आज मुझे ज्ञात हुआ है, जो तूफान को हमारे घरों की ओर भेजती है तथा हम पर और हमारे जानवरों पर महामारी फैलाती है। सब लोगों को यह समझ लेना चाहिए, जो मै अब समझा हूं, और हमें ला-विस को धन्यवाद देना चाहिए तथा उसका आदर-सत्कार करना चाहिए। क्योंकि उसने हमारे सबसे बड़े शत्रु के गुप्त रहस्यों को हम पर प्रकट किया है और इस प्रकार हमें अधर्म की राह पर चलने से बचाया है।'

''और ला-विस गिरोह के सरदार को वहीं छोड़कर अपने झोंपड़े में चला गया। उसे अपनी समझ-बूझ पर गर्व था और ख़ुशी की तरंग में वह झूम रहा था। प्रथम बार उस दिन ला-विस के सिवा सरदार और सारे गिरोह ने वह रात विकराल देवों से घिरे अपनी शय्याओं पर, भयानक दृश्यों और व्याकुल कर देने वाले सपनों को देख-देखकर ऊंघते हुए काटी।''

□□

थोड़ी देर के लिए शैतान चुप हो गया तब पिता इस्मान ने व्यग्रभाव से उसकी ओर देखा। पिता के होंठों पर मौत जैसी रूखी मुस्कान फैल गई थी।

शैतान फिर बोला, ''इस प्रकार पृथ्वी पर भविष्यवाणी का जन्म हुआ। अतएव मेरा अस्तित्व ही उसके जन्म का कारण बना।

''ला-विस प्रथम मनुष्य था, जिसने मेरी पैशाचिकता को एक व्यवसाय बनाया। ला-विस की मृत्यु के उपरान्त यह वृत्ति उसके बच्चों ने अपनाई और इस व्यवसाय की वृद्धि निरन्तर होती गई, यहां तक कि यह एक पूर्ण एवं पवित्र धन्धा बन गया और उन लोगों ने इसे अपनाया, जिनके मस्तिष्क में ज्ञान का भण्डार है तथा जिनकी आत्माएं श्रेष्ठ, हृदय स्वच्छ एवं कल्पनाशक्ति अनन्त है।

''बेबीलोन (बाबुल) में लोग एक पुजारी की पूजा सात बार झुक कर करते

* जो मेरे साथ अपने भजनों द्वारा युद्ध ठाने हुए हैं

''नाइनेवेह (नेनवा) मे वे एक मनुष्य को, जिसका कहना है कि उसने मेरे आन्तरिक रहस्यों को जान लिया है, ईश्वर और मेरे बीच एक सुनहरी कड़ी मानते है।

''तिब्बत में वे एक मनुष्य को, जो मेरे साथ एक बार अपनी शक्ति आजमा चुका है, सूर्य और चन्द्रमा के पुत्र के नाम से पुकारते हैं।

''बाइबल्स में ईफेसस और एंटियोक ने अपने बच्चों का जीवन मेरे विरोधी पर बलिदान कर दिया।

''और यरुशलम तथा रोम में लोगो ने अपने जीवन को उनके हाथों सौंप दिया, जो मुझसे घृणा करते है और अपनी सम्पूर्ण शक्ति द्वारा मुझसे युद्ध मे लगे हुए हे।

''सूर्य के साये के नीचे प्रत्येक नगर में मेरा नाम धार्मिक शिक्षा, कला और दर्शन का केन्द्र है। यदि मैं न होता तो मन्दिर न बनाए जाते, मीनारों और विशाल धार्मिक भवनों का निर्माण न हुआ होता।

''मैं वह साहस हूं, जो मनुष्य में दृढ़ निष्ठा पैदा करता है।

''मैं वह स्रोत हूं, जो भावनाओ की अपूर्वता को उकसाता है।

''मैं एक ऐसा हाथ हूं, जो आदमी के हाथों मे गति लाता है।

''मैं शैतान हू, अजर-अमर! मै शैतान हूं, जिसके साथ लोग इसलिए युद्ध करते हैं कि जीवित रह सकें। यदि वे मुझसे युद्ध करना बंद कर दे तो आलस्य उनके मस्तिष्क, हृदय और आत्मा के स्पन्दन को बन्द कर देगा और इस प्रकार उनकी अत्यधिक शक्ति के बीच अद्‌भुत असुविधाएं आ खड़ी होंगी।

''मैं एक मूक और क्रुद्ध तूफान हूं, जो पुरुष के मस्तिष्क और नारी के हृदय को झकझोर डालता है। मुझसे भयभीत होकर वे मुझे दण्ड दिलाने हेतु मन्दिरों एव धर्म-मठों को भागे जाते हैं अथवा मेरी प्रसन्नता के लिए, बुरे स्थान में जाकर मेरी इच्छा के सम्मुख आत्म-समर्पण कर देते हैं।

''संन्यासी, जो रात्रि की नीरवता मे, मुझे अपनी शय्या से दूर रखने के लिए, ईश्वर से प्रार्थना करता है, एक ऐसी वेश्या के समान है, जो मुझे अपने शयन-कक्ष में निमंत्रित करती है।

''मैं शैतान हूं, अजर-अमर!

''भय की नींव पर खड़े धर्म-मठो का मैं ही निर्माता हूं। विषय-भोग तथा आनन्द की लालसा की नींव पर मैं ही मदिरालय एवं वेश्यालय का निर्माण करता हू।

''यदि मैं न रहूं तो विश्व में भय और आनन्द का अन्त हो जाएगा और इनके लोप हो जाने से मनुष्य के हृदय में आशाए एव आकांक्षाएं भी न रहेंगी। तब जीवन नीरस, ठण्डा और खोखला हो जाएगा, मानो टूटे हुए तारों का सितार हो।

मैं अमर शैतान हू

''झूठ, अपयश, विश्वासघात, विडम्बना और वंचना के लिए मैं प्रोत्साहन हू और यदि इन तत्वों का विश्व से बहिष्कार कर दिया जाए तो मानव-समाज एक निर्जन क्षेत्र-मात्र रह जाएगा, जिसमें धर्म के कांटों के अतिरिक्त कुछ भी पनप न सकेगा।

''मैं अमर शैतान हू।

''मैं पाप का जन्मदाता हू और यदि पाप ही न रहेगा तो उसके साथ ही पाप से युद्ध करने वाले योद्धा अपने सम्पूर्ण गृह तथा परिवार सहित समाप्त हो जाएंगे।

''मैं पाप का हृदय हूं। क्या तुम यह इच्छा कर सकोगे कि मेरे हृदय के स्पन्दन को थामकर तुम मनुष्य-मात्र की गति को रोक दो?

''क्या तुम मूल को नष्ट करके उस परिणाम को स्वीकार कर पाओगे? मैं ही तो मूल हूं।

''क्या तुम अब भी इस निर्जन वन मे मुझे इसी प्रकार मर जाने दोगे? क्या तुम आज उसी बन्धन को तोड़ फेंकना चाहते हो, जो मेरे और तुम्हारे बीच दृढ़ है? जवाब दो, ऐ पुजारी!''

यह कहकर शैतान ने अपनी बांहें फैला दीं और सिर झुका लिया। तब वह जोर-जोर से हाफने लगा। उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह मिस्र की उन मूर्तियों-जैसा दीखने लगा, जो नील नदी के किनारे समय द्वारा ठुकराई पडी है।

तब उसने अपनी बुझती आंखों को पिता इस्मान के चेहरे पर गड़ा दिया और लड़खडाती आवाज में बोला, ''मैं थक गया हूं और बहुत दुर्बल हो गया हूं। अपनी मिटती आवाज़ में वे ही बाते बताकर, जिन्हें तुम स्वयं जानते हो, मैंने गलती की है। अब जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसा कर सकते हो। तुम मुझे अपने घर ले जाकर मेरे घावो की चिकित्सा कर सकते हो अथवा मेरे हाल पर मुझे यहीं मरने को छोड़ सकते हो।''

पिता इस्मान व्याकुल हो उठे और कांपते हुए अपने हाथों को मलने लगे।

तब अपने स्वर में क्षमा-याचना भरकर वे बोले, ''एक घण्टा पूर्व, जो मैं नहीं जानता था, वह अब मुझे मालूम हुआ है। मेरी भूल को क्षमा करो। मैं अब जान गया हू कि तुम्हारा अस्तित्व संसार मे प्रलोभन का जन्मदाता है और प्रलोभन ही एक ऐसी वस्तु है, जिसके द्वारा ईश्वर मनुष्यता का मूल्य आंकता है। यह एक माप-दण्ड है, जिससे सर्वशक्तिमान ईश्वर आत्माओं को तोलता है।

''मुझे विश्वास हो गया है कि यदि तुम्हारी मृत्यु हो गई तो प्रलोभन का भी अन्त हो जाएगा और इसके अन्त से मृत्यु, उस आदर्श शक्ति को नष्ट कर देगी, जो मनुष्य को उन्नत एवं चौकस बनाती है!

''तुम्हें जीवित रहना होगा। यदि तुम मर गए और यह बात लोगों को ज्ञात हो गई तो नरक के लिए उनके भय का अन्त हो जाएगा और वे पूजा-अर्चना करना छोड़ देंगे क्योंकि पाप का अस्तित्व ही तो न रहेगा।

''तुम्हे अवश्य जीवित रहना होगा, क्योंकि तुम्हारे जीवन के ही अपराध एवं पाप में मनुष्य की मुक्ति का द्वार है।

''जहा तक मेरा सम्बंध है, मैं, मनुष्यो के प्रति अपने प्रेम की स्मृति में, तुमसे जो घृणा करता हूं, उसका त्याग करूगा।''

इस पर शैतान ने एक विकट अट्टहास किया, जिसने पृथ्वी को हिला दिया और बोला, ''तुम कितने बुद्धिमान व्यक्ति हो, पिता! अध्यात्म-विद्या का कितना आश्चर्यमय ज्ञान तुम्हारे पास सचित है। अपने ज्ञान के द्वारा तुमने मेरे अस्तित्व का कारण ढूंढ निकाला है, जिसे मैं स्वयं कभी न समझ पाया और अब हमें एक- दूसरे की आवश्यकता का ज्ञान हुआ है।

''मेरे भाई। आओ, मेरे निकट आओ। पृथ्वी पर अन्धकार फैलता जा रहा है और मेरा आधा रक्त इस घाटी के उदर मे समा चुका है, मानो मुझमें अब कुछ रहा ही नहीं है। एक टूटे हुए शरीर के टुकडे भर हैं; जिन्हें, यदि तुम्हारी सहायता प्राप्त न हुई तो मृत्यु शीघ्र ही अपनाकर ले जाएगी।''

पिता इस्मान ने अपने कुरते की आस्तीनें ऊपर चढ़ा ली और और अपने घर की ओर चल पड़े।

उन घाटियों के बीच सन्नाटे मे घिरे और घोर अन्धकार के आवरण से सुशोभित पिता इस्मान अपने गाव की ओर चले जा रहे थे।

उनकी कमर उनके ऊपर के बोझ से झुकी जा रही थी और उनकी काली पोशाक तथा लम्बी दाढ़ी पर से रक्त की धारा बह रही थी, किन्तु उनके कदम सतत् आगे बढते जा रहे थे और उनके होंठ मृतप्राय शैतान के जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे।

9. गुलामी

मनुष्य जीवन के गुलाम हैं और यह गुलामी ही उनके दिनों को दु:ख और क्लेश से परिपूर्ण कर देती है तथा उनकी रात्रियों में आंसू और संताप की बाढ लाती है।

मेरे जन्मदिन को सात हजार वर्ष व्यतीत हो गए और उसी दिन से मैं जिन्दगी के गुलामों को अपनी भारी बेडियां घसीटते हुए देख रहा हूं।

मैं पृथ्वी के पूर्व और पश्चिम में घूमा हूं और जीवन के प्रकाश तथा छाया में भटकता फिरा हूं। मैंने मनुष्यता के जुलूसों को प्रकाश से अन्धकार में जाते देखा है जिनमें से हर एक जुलूस नीचे दबी गर्व-रहित आत्माओं द्वारा गुलामी के जुए के नरक में खींच लाया गया। बलवान बन्दी बनाकर गर्वच्युत कर दिए गए और भक्तगण घुटनों पर झुके मूर्ति-पूजा में लीन हैं।

मैंने बेबीलोन (बाबुल) से काहिरा तक और ऐंदौर से बगदाद तक मनुष्य का पीछा किया है और रेत पर उसकी बेडियों के चिह्नों को ध्यान से देखा है। मैंने चंचल समय की वेदनामय प्रतिध्वनियों को अनन्त मैदानों और घाटियों द्वारा दोहराए जाते सुना है।

मैंने मन्दिरों और वेदियों को देखा है, महलों में प्रवेश किया है और मैं राज्य-सिंहासनों के सम्मुख भी बैठा हूं।

मैंने शिष्यों को शिल्पकार की, शिल्पकार को स्वामी की, स्वामी को सैनिक की, सैनिक को राज्य-संचालक की, राज्य-संचालक को शासक की, शासक को पुजारी की और पुजारी को मूर्ति की गुलामी करते देखा है, और वह मूर्ति, कुछ भी नहीं, केवल शैतान द्वारा सजाई गई मिट्टी है, जो खोपड़ियों की पहाड़ी पर निर्मित है।

मैं धनिकों के महलों में गया हूं और निर्धन की झोंपडियों को भी देखा है। मैंने अपनी मां के स्तनों से गुलामी का दूध चूसते हुए बच्चों को और वर्णमाला द्वारा आज्ञानुकूलता का पाठ पढते हुए बालकों को देखा है।

नवयुवतियां मर्यादा और धर्मशीलता के वस्त्र पहनती हैं और पत्नियां शुश्रूषा तथा सामाजिक विधान से उत्पन्न संकोच की शय्या पर नयनों में नीर भरकर सोती रहती हैं

मैं कांगो के किनारे से इफरात के तट तक, नील के मुख से सीरिया के मैदानो तक, ऐथेन्स की रंगभूमि से रोम के गिरजों तक, कस्तुनतुनियां की गन्दी गलियों से सिकन्दरिया के महलों तक युग-प्रवाह के साथ रहा हूं, पर मैंने गुलामी को सभी जगह गर्वपूर्ण अज्ञानता के जुलूस में घुसते हुए पाया है।

मैंने देखा है कि लोग गुलामी को भगवान कहकर उसके चरणों पर युवक-युवतियों की बलि चढ़ाते हैं; महारानी कहकर उसके क़दमों पर मदिरा तथा इत्र बहाते हैं· पैगम्बर कहकर उसके सामने सुगन्धित धूप जलाते हैं; धर्म कहकर उसके सामने घुटने टेक भक्ति करते हैं, देशभक्ति कहकर उसके लिए युद्ध करते और प्राण त्यागते हैं, भूमि पर ईश्वर का प्रतिबिम्ब कहकर अपनी इच्छाओं को उस पर न्योछावर करते हैं; बन्धुत्व कहकर उसके लिए घरों और संस्थाओं को उजाड़ते और बर्बाद कर देते है, भाग्य और सुख कहकर उसके निमित्त संघर्ष, चोरी और परिश्रम करते हैं तथा समानता कहकर उसके हेतु हत्याएं करते हैं।

उसके भिन्न नाम हैं, परन्तु वास्तव में वह एक ही है। उसके विभिन्न आकार हैं, पर वह एक ही तत्व से बनी है। सच पूछिए तो वह एक अमर व्यथा है, जिसे हर एक पीढ़ी अपने उत्तराधिकारियों को वसीयत में दे जाती है।

मैंने अंधी ग़ुलामी को देखा, जो मनुष्यों के वर्तमान को उनके पुरखों के विगत-काल से संयुक्त करती है और ये नये शरीरों में पुरातन-काल की आत्माएं बसाकर उन्हे, उनकी परम्परागत प्रार्थनाओं को स्वीकार करने के लिए मजबूर करती है।

मैंने मूक गुलामी को देखा, जो एक मनुष्य के जीवन को उस पत्नी से बांधे रहती है, जिससे वह घृणा करता है और एक स्त्री के शरीर को एक घृणित पति की शय्या पर डाले रखती है, फलतः उससे दोनों के जीवन आध्यात्मिक रूप से नष्ट हो जाते हैं।

मैंने बहरी गुलामी को देखा, जो आत्मा और हृदय का गला घोंट देती है और मनुष्य को केवल ध्वनि की एक खोखली प्रतिध्वनि में तथा शरीर को एक दीन छाया में परिवर्तित कर देती है।

मैंने लंगड़ी गुलामी को देखा, जो मनुष्य की गरदन को निर्दय शासक के शासन के तले झुकाए रखती है और शक्तिशाली शरीरों तथा निर्बल मस्तिष्कों को लोभ के पुत्रों को सौंप देती है कि वे उनकी शक्ति के औज़ार बनकर प्रयोग में आएं।

मैंने कुरूप गुलामी को देखा, जो विस्तीर्ण आकाश से अभागे घरानों में शिशु आत्माओं के रूप में उतरती है, जहां पर आवश्यकता अज्ञानता के समीप रहती है, दीनता निराशा के निकट वास करती है और बच्चे दुखियों की तरह बढ़ते और अपराधियों की भांति जीवित रहते तथा तिरस्कृत और अस्वीकृत सत्ता की भांति मरते हैं
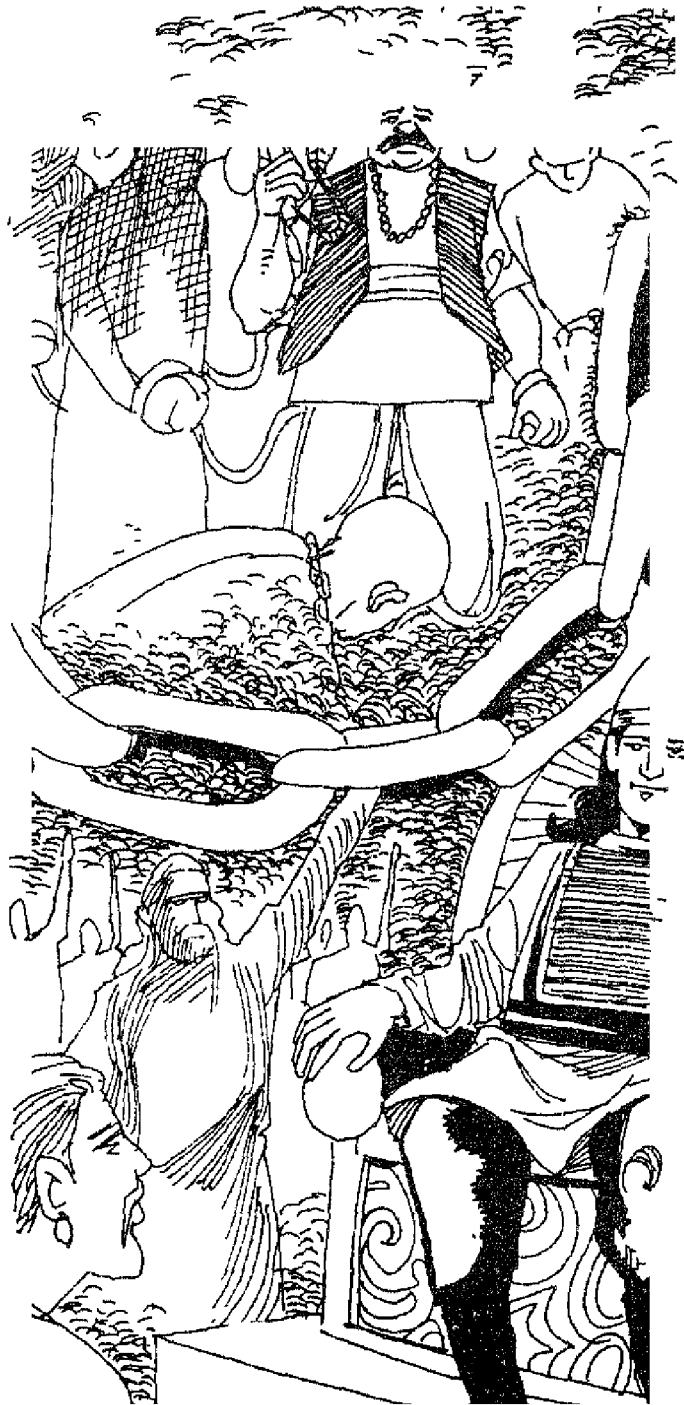
मैंने धूर्त ग़ुलामी को देखा, जो वस्तुओं को अवास्तिवक नामों से प्रसिद्ध करती है, जैसे चतुराई को प्रतिभा, थोथेपन को ज्ञान, निर्बलता को नम्रता एवं कायरता को ज़ोरदार अस्वीकृति कहकर!

मैंने जकड़ी हुई ग़ुलामी को देखा, जिसके कारण निर्बल की जिह्वाएं कांपती हुई बोलती हैं और अपने विचारों के प्रतिकूल बोलती हैं। वे अपने शोषण पर सोच भी नहीं सकते और केवल ख़ाली बोरे की भांति रह जाते हैं जिन्हें एक बच्चा भी उठाकर लटका सकता है।

मैंने झुकी हुई ग़ुलामी को देखा, जो एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के क़ानून और कायदों के मानने के लिए प्रवृत्त करती है, और यह झुकाव दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता है!

मैंने अनन्त ग़ुलामी को देखा, जो राजतन्त्र के पुत्रों को सम्राट का मुकुट पहनाती है और योग्यता पर ध्यान नहीं देती।

मैंने वीभत्स गुलामी को देखा, जो अपराधी के पुत्रों को सदा के लिए लज्जा और कलंक से दाग देती है और भावना की ग़ुलामी को भी देखा, जो दुष्ट शक्तियों के क्रम को तथा छुआ-छूत के रोगों को बनाए रखती है।

जब मैं दुराचारी युगों का पीछा करते थक गया और पाषाणमय मनुष्यों के जुलूस को देखते-देखते शिथिल पड़ गया तब जीवन की छाया की घाटी के एकान्त मे विचरता रहा, जहा विगत काल अपने को पाप में छिपाने का प्रयास करता और भविष्य की आत्मा अपने को तहकर अत्यधिक दूरी में आराम करती थी।

वहा रक्त की धारा में तथा आसुओं की नदी मे, जो विषैले सर्प की भांति रेंगती और अपराधी के स्वप्नों के समान ऐंठती थी, मैंने ग़ुलामी के प्रेतों की भयानक फुसफुसाहट सुनी तथा शून्य को एकटक देखा।

मध्य रात्रि में जब प्रेतात्माएं छिपे स्थानों से बाहर निकल आई तो मैंने एक निष्कपट नारी आत्मा को देखा। यह प्रेतात्मा अपने घुटनों पर झुकी हुई थी और चन्द्रमा की ओर टकटकी लगाए देख रही थी। मैं उसके पास पहुचकर बोला, ''तुम्हारा क्या नाम है?''

''मेरा नाम आजादी है,'' एक मृतक की डरावनी छाया बोली।

तब मैंने पूछा, ''तुम्हारे बच्चे कहां हैं?''

आसू भरकर क्षीण तथा हांफती हुई आजादी बोली, ''एक बच्चे की फांसी पर लटककर मृत्यु हो गई, दूसरा पागल होकर मर गया और तीसरा अभी तक उत्पन्न ही नहीं हुआ।''

मुझसे बचकर आगे बढ़ती हुई वह कुछ और भी बोली; परन्तु मेरी आंखो के धुन्ध और हृदय की चीत्कारों ने मुझे देखने या सुनने नहीं दिया।

□□

10. क़ब्रों का विलाप

अमीर इंसाफ की गद्दी पर बैठा। उसके दाएं-बाएं देश के विद्वान बैठे थे। उनके चढ़े हुए चेहरों पर किताबों की छाया खेल रही थी। आसपास सिपाही तलवारें थामे और नेज़े उठाए खड़े थे। सामने लोग यह देखने को खड़े थे कि किस अपराधी को क्या दंड मिलता है। सबकी गरदनें झुकी हुई थीं। आखों में बेबसी झलक रही थी और सांस रुकी हुई थी, मानो अमीर की आंखों में एक ऐसी ताकत थी जो उनके दिलों पर डर और रौब गालिब कर रही थी।

अमीर ने हाथ उठाया और चिल्लाकर कहा, "मुलजिमों को एक-एक करके मेरे सामने हाजिर करो और बताओ कि उनमें से किसने क्या कसूर किया है?"

कैदखाने का दरवाज़ा खोल दिया गया और काली दीवारें नजर आने लगीं।

जंजीरों की झंकार सुनाई देने लगी। उसके साथ कैदियों की आहें और रोना पीटना भी मिला हुआ था। लोग गरदनें उठा-उठाकर उनकी तरफ देखने लगे, मानो उस कब्र की गहराई से निकाली हुई उन मौत के शिकारों पर पहले नजर डालने में एक-दूसरे के आगे बढ़ जाना चाहते हों।

थोड़ी देर के बाद कैदखाने से दो सिपाही निकले, जिनके कब्ज़े में एक नौजवान था। इस नौजवान के हाथों में हथकड़ी थी और उसकी चढ़ी हुई त्योरी तथा निडर चेहरे से उसके स्वाभिमान और आत्मिक बल का पता चलता था। उसे सिपाहियों ने अदालत के बीच में खड़ा कर दिया और खुद थोड़ा-सा पीछे हटकर खड़े हो गए। अमीर ने एक क्षण उनकी तरफ़ घूरकर देखा, फिर सवाल किया "इस आदमी ने, जो हमारे सामने इस तरह सिर उठाए खड़ा है, जैसे अदालत की जकड़ में नहीं, बल्कि किसी ऊंची जगह खड़ा हो, क्या जुर्म किया है।"

अमीर के वजीरों में से एक ने जवाब दिया, "कल एक फौजी अफ़सर और चंद सिपाही देहात में काम पर गए थे। इस आदमी ने अफसर का कत्ल कर दिया। सिपाहियों ने इसे गिरफ्तार कर लिया और ख़ून में सनी हुई तलवार कब्ज़े में कर ली

अमीर गुस्से से कांपने लगा। उसकी आंखों से आग की चिंगारियां बरसने लगीं। उसने गरजती हुई आवाज़ में कहा, "इसे ज़ंजीरों में जकड़ दो और फिर उसी अंधेरी कोठरी में बंद कर दो। कल सुबह इसी की तलवार से इसकी गरदन उड़ा दो और इसकी लाश को शहर के बाहर फेंक दो, जिससे गिद्ध और चीलें इसका गोश्त नोंच लें और हवा इसकी बदबू को इसके घर वालों और इसके दोस्तों तक पहुंचा दे।"

नौजवान को वापस क़ैदखाने की तरफ ले जाया गया। लोगों की दु:ख भरी निगाहे उसके पीछे-पीछे गई, क्योंकि वह अभी कम उम्र का था, खूबसूरत था और हट्टा-कट्टा था।

इसके बाद सिपाही एक औरत को लिए कैदखाने से निकले। वह स्त्री बहुत सुदर और कोमलांगी थी। उसकी आखो मे दु:ख और निराशा का पीलापन झलक रहा था। उसकी आंखें नीची हो रही थीं और लज्जा के मारे उसकी गरदन झुकी थी।

अमीर ने उस पर निगाह डाली और कहा, "इस औरत ने, जो हमारे सामने ऐसे खड़ी है, जैसे सच के सामने छाया, क्या कसूर किया है?"

एक वजीर ने उत्तर दिया, "यह औरत कुलटा है। रात को जब इसका ख़ाविंद घर आया तब उसने देखा कि यह अपने एक यार के साथ सोई हुई है। इसका दोस्त डरकर भाग गया और खाविंद ने इसे पुलिस के हवाले कर दिया।"

यह सुनकर अमीर बहुत बिगड़ा। स्त्री शर्म के मारे पानी-पानी हो गई। अमीर ने ऊंची आवाज़ में कहा, "इसे वापस क़ैदखाने में ले जाओ और कांटों के बिस्तर पर सुलाओ, ताकि यह उस बिस्तर को याद करे, जिसे इसने अपने पाप से नापाक बनाया और इसे इनार[1] मिला हुआ सिरका[2] पिलाओ, ताकि यह अपने घर के खाने को याद करे। सुबह होने पर इसे नंगा करके खींचते और घसीटते हुए शहर के बाहर ले जाओ और संगसार[3] कर दो। इसकी लाश को वहीं पड़ा रहने दो, ताकि भेडिये इसका गोश्त खा जाएं और इसकी हड्डियों को कीड़े-मकोडे चाट लें।"

उस औरत को फिर कैदखाने की अंधेरी कोठरी मे ले जाया गया। लोग उसकी तरफ अफ़सोस की नज़रों से देख रहे थे। वह अमीर के इंसाफ़ पर खुश थे, लेकिन उन्हें उस स्त्री के सौंदर्य, कोमलता और उसकी दु:खी आखों पर भी रहम आ रहा था।

इसके बाद दो सिपाही अधेड़ उम्र के एक कमज़ोर आदमी को लिए हुए आए, जो अपने कांपते हुए घुटनों को घसीटता हुआ चलता था। उसने भीड़ की तरफ व्याकुल आखों से देखा। उसकी आखों में मायूसी, बर्बादी और गरीबी झलक रही थी।

---

1 कड़वा फल 2 शराब 3 इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का दंड जिसमें व्यभिचारी को जमीन में कमर तक गाड देते थे और उसके सिर पर पत्थर बरसा कर उसके प्राण लेते थे

अमीर ने उस पर निगाह डाली और जोश में आकर पूछा, ''इस गंदे आदमी ने, जो इस तरह खड़ा है, जैसे ज़िंदों में मुर्दा, क्या क़सूर किया है?''

वज़ीर ने जवाब दिया, ''यह चोर है। रात के वक्त यह कलीसा[1] में जा घुसा और जोगियों ने इसे पकड़ लिया। इसकी झोली में पूजा के बर्तन पाए गए।''

अमीर ने उसकी तरफ़ इस तरह देखा, जैसे भूखा गिद्ध पर-कटी चिड़िया की ओर देखता है और चिल्लाकर बोला, ''इसे फिर कैदखाने के अंधेरे में फेंक दो और जजीरों में जकड़ दो। जब सुबह हो जाए तब इसे रेशमी रस्सी से एक ऊंचे पेड़ पर लटका दो और इसी तरह इसे तब तक जमीन और आसमान के बीच लटका रहने दो जब तक इसकी गुनहगार उंगलिया सड़-गल न जाएं और उसकी बदबू चारो तरफ फैल न जाए।''

सिपाही चोर को फिर कैदखाने में ले गए और लोग कानाफूसी करने लगे कि इस मरियल काफिर ने पूजा के बर्तन चुराने की हिम्मत कैसे की?

अमीर गद्दी से उतरा और उसके विद्वान तथा बुद्धिमान सलाहकार भी उसके पीछे हो लिए कुछ सिपाही आगे और कुछ पीछे। लोगों की भीड़ तितर-बितर हो गई और इस तरह वह स्थान ख़ाली हो गया अलबत्ता क़ैदियों की आहें और गहरी सासें सुनाई देती रहीं।

मैं वहा खडा इस क़ानून पर हैरान हो रहा था, जो इंसान ने इंसान के लिए बनाया है। मैं उस चीज़ पर ग़ौर कर रहा था, जिसे लोग इंसाफ कहते हैं। सोचते-सोचते मेरे विचार इस तरह गायब हो गए, जिस तरह शाम की लाली धुंधलके में छिप जाती है। मैं उस मकान से निकला। अपने दिल में कहता था कि घास मिट्टी से बढ़ती है, बकरी घास को खा लेती है, भेडिया बकरी को अपनी ख़ुराक बनाता है, गैंडा भेड़िये को खा जाता है और शेर गैंडे को मौत के घाट उतारता है। क्या कोई ऐसी ताकत भी मौजूद है, जो मौत पर छा जाए और जुल्म के इस सिलसिले को खत्म कर दे? क्या कोई ऐसी ताकत मौजूद है, जो इन तमाम घिनौनी बातों को अच्छे नतीजे मे बदल दे? क्या कोई ऐसी ताक़त है, जो ज़िंदगी की सारी ताक़तों को अपने हाथ में ले ले और अपने अंदर जज्ब कर ले—जिस तरह समुद्र सारी नदियों को अपनी गहराइयों में समा लेता है? क्या कोई ऐसी ताक़त है, जो कातिल[2] को और मकतूल[3] को, बुरा काम करने वाली और उसके साथ बुरा काम करने वाले चोर और जिसके यहां चोरी की गई उसको तथा अमीर के आसन से ज़्यादा ऊंचे न्याय के आसन के सामने खड़ा कर दे?

दूसरे दिन मैं शहर से निकलकर खेतों की तरफ़ गया, ताकि मन को कुछ चैन मिले और जंगल का मनोहर वायुमंडल दुःख और मायूसी के उन जंतुओं को मार दे, जो शहर के तंग गली-कूचों और अंधेरे मकानों ने मेरे अंदर पैदा कर दिए थे।

गिरजाघर, 2 कत्ल करनेवाला 3 जिसका क़त्ल किया जाता है

जिस वक्त घाटी में पहुंचा तो देखा कि गिद्धों, चीलों और कौवों के झुंड-के-झुंड उड़ रहे हैं और जमीन पर उतर रहे हैं। उनकी आवाज़ों और परों की फड़फड़ाहट से वातावरण कांप रहा है। मैं जरा आगे बढ़ा तो देखा कि मेरे सामने एक लाश पेड़ पर लटक रही है और एक नंगी औरत की बेजान देह उन पत्थरों के ढेर में पड़ी है, जिनसे उसे संगसार किया गया था। उधर एक नौजवान की लाश धूल और ख़ून से सनी हुई है और उसका सिर धड़ से जुदा पड़ा है।

मैं वहीं ठहर गया। मेरी आंखों पर एक मोटा और अंधेरा पर्दा पड़ गया और मुझे कल्पना और मौत के सिवाय, जो ख़ून में सनी उन लाशों पर छाई हुई थी, कुछ भी दिखाई नहीं दिया। बर्बादी की पुकार के अलावा मेरे कान कुछ भी नहीं सुनते थे। इस पुकार में कौवों की आवाज भी मिली हुई थी, जो इंसानी कानून के शिकारों के चारों तरफ मंडरा रहे थे।

तीन इंसान कल तक जिंदा थे, आज सुबह मौत के मुंह में चले गए।

तीन आदमियों ने इंसान के अस्तित्व में अपनी निष्ठा को खो दिया और अंधे कानून ने हाथ बढ़ाकर उन्हें बेदर्दी के साथ पामाल कर दिया।

तीन आदमियों को जेल ने कसूरवार ठहराया क्योंकि वे कमजोर थे और कानून ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया क्योंकि वह ताकतवर था।

एक आदमी ने दूसरे को क़त्ल कर दिया था तो वह क़ातिल (खूनी) ठहरा, लेकिन जब अमीर ने उसे क़त्ल करवा दिया तो वह अमीर इंसाफ करने वाला समझा गया।

एक शख्स ने पूजा का सामान ले लिया तो लोगों ने उसे चोर कहा, लेकिन अमीर ने उसकी जिंदगी छीन ली तो वह अमीर विद्वान ठहरा!

एक औरत ने अपने पति से बेईमानी की तो लोगों ने उसे कुलटा ठहराया, लेकिन जब अमीर ने उसे नंगा करके संगसार करवाया तो वह अमीर शरीफ कहलाया!

ख़ून बहाना हराम है, लेकिन अमीर के लिए यह किसने हलाल कर दिया?

माल हड़प करना जुर्म है, लेकिन आत्माओं को हड़प करना किसने जायज करार दिया?

औरतों की बेईमानी ख़राब बात है, लेकिन यह किसने कहा कि खूबसूरत देहो को संगसार करना पाक काम है?

हम छोटी-सी बदमाशी के मुकाबले में बहुत बड़ी बदमाशी करते हैं और कहते हैं कि यह क़ानून है। हम फिसाद का बदला बदतरीन फिसाद से देते हैं और कहते हैं कि यह शील है। हम एक अपराध का बदला लेने के लिए दूसरा बड़ा अपराध करते हैं और चिल्लाते हैं कि यह इंसाफ़ है!

क्या अमीर ने कभी अपने दुश्मन को मौत के घाट नहीं उतारा? क्या उसने

कभी अपनी प्रजा के किसी कमज़ोर इंसान का माल हड़प नहीं किया? क्या उसने कभी किसी ख़ूबसूरत औरत की ओर आंख नहीं उठाई? क्या वह इन तमाम जुर्मों से पाक है कि जिससे क़ातिल की गरदन उड़ाना, चोर को सूली चढ़ाना और व्यभिचारिणी को संगसार करना उसके लिए जायज़ हो गया?

वे कौन थे, जिन्होंने चोर को दरख़्त पर लटकाया? क्या आसमान से फ़रिश्ते उतरे थे या वे वही इंसान थे, जो उस माल को, जो उनके हाथ में आ जाता है, हड़प लेते हैं?

और उस क़ातिल का सिर जिसने कलम किया था? क्या ऊपर से नबी और पैग़म्बर आए थे या वे ही सिपाही थे, जो क़त्ल और ख़ून करते रहते हैं?

और उस व्यभिचारिणी को किसने संगसार किया था? क्या उस काम के लिए पाक रूहें अपने स्थानों से आई थीं? या वे वही लोग थे, जो अंधेरे के पर्दे में बुरे काम किया करते हैं?

क़ानून...! क़ानून क्या चीज़ है? उसे आसमान की ऊंचाइयों से सूरज की किरणों के साथ उतरते किसने देखा है? और किस आदमी ने ख़ुदाई इच्छा को इसान के दिल से मिला-जुला पाया है? और किस ख़ानदान में फ़रिश्तों ने आकर इंसानों से कहा है कि कमज़ोरों को ज़िंदगी की रोशनी से महरूम कर दो, गिरे हुए को तलवार से उड़ा दो और क़सूर करने वाले को फ़ौलादी पांवों के नीचे रौंद डालो?

मेरे दिमाग में यही विचार चक्कर लगा रहे थे और मुझे परेशान कर रहे थे कि इतने में मैंने किसी के पैरों की आहट सुनी। आंख उठाई तो देखा कि एक औरत पेड़ों में से निकल कर लाशों के करीब आ रही है। उसके चेहरे पर ख़तरे के निशान दिखाई दे रहे थे, मानो वह उस भयावने नजारे को देखकर डर गई हो। वह उस लाश की तरफ़ बढ़ी, जिसका सिर कटा हुआ था और वह चीख़-चीख़कर रोने लगी। उसने कांपती हुई बांहों से उस लाश को गले लगाया। उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी। वह अपनी उंगलियां लाश के बालों पर फेर रही थी। जब थक गई तो उसने अपने हाथों से ज़मीन खोदना शुरू किया, यहां तक कि एक लंबी-चौड़ी क़ब्र खोद ली। फिर उसने उस नौजवान की लाश को उठाकर क़ब्र में रख दिया और क़ब्र को मिट्टी से ढांककर उसके ऊपर उस तलवार के फल को गाड़ दिया, जिससे उसका सिर काटा गया था। इसके बाद उसने आंसू बहाते हुए मुझसे कहा, "अमीर से कह दो कि बजाय इसके कि मैं उस इंसान की लाश को, जिसने मुझे बेइज़्ज़ती के क़ब्ज़े से छुड़ाया, जंगल के ख़ूंख़ार जानवरों और परिंदों के खाने के लिए छोड़ दूं, मेरे लिए बेहतर है कि मैं मर जाऊं और उस आदमी से जा मिलूं।"

मैंने उससे कहा, "ओ दुःखी औरत! मुझसे डरो मत, क्योंकि मैं तुमसे पहले इन मैयतों पर विलाप कर चुका हूं, लेकिन मुझे यह तो बताओ कि इस आदमी ने तुम्हें बेइज्जती के क़ब्ज़े से किस तरह बचाया था?'

उसने टूटती हुई आवाज में जवाब दिया, ''अमीर का एक अफसर हमारे खेतो मे लगान और जजिया वसूल करने आया था, लेकिन जब उसने मुझे देखा तो उसकी नीयत में बदी आ गई। इसके बाद उसने मेरे बाप की तरफ भारी रक़म निकाल दी। चूंकि मेरे गरीब बाप यह रकम अदा नहीं कर सकते थे, उस अफ़सर ने गुस्से मे आकर रुपये के बदले में मुझ पर कब्जा कर लिया, इस खयाल से कि मुझे अमीर के महल में पहुंचा दे। मैने रो-रोकर उससे दया की भीख मांगी, लेकिन उसे रहम नहीं आया। मैंने उससे बाप के बुढापे की तरफ ध्यान देने की मिन्नत की, लेकिन वह न पसीजा। तब मैंने चिल्ला-चिल्लाकर गाव वालों को इकट्ठा किया और उनके सामने फरियाद की। इस पर यह नौजवान, जिसके साथ मेरी मंगनी हो चुकी थी, आया और उसने मुझे अफ़सर के हाथों से छुडाया। अफसर ने गुस्से मे आकर उसे कत्ल कर देना चाहा, लेकिन नौजवान ने फुर्ती के साथ अपने को बचाया और दीवार से लटकती हुई तलवार खींचकर उसने अपने ऊपर के हमले के जवाब में और मेरे शरीर के बचाव के लिए अफसर को क़त्ल कर दिया। इसके बाद वह अपनी इज्जत के लिए मकतूल की लाश के पास ही खड़ा रहा। आखिरकार सिपाहियों ने उसे गिरफ्तार करके क़ैदखाने मे डाल दिया।''

यह कहते-कहते उसने मेरी तरफ़ दिल को पिघलाने वाली निगाह से देखा, फिर जल्दी से पीठ मोड़कर चल दी। उसकी दर्दनाक आवाज़ हवा में गूंजती रही।

थोडी देर के बाद मैने एक नौजवान को आते देखा, जिसने अपना चेहरा कपड़े से ढांक रखा था। वह व्यभिचारिणी की लाश के पास पहुंचकर रुक गया। उसने अपना कुर्ता उतारकर उससे उस नंगी औरत को ढांक दिया और अपने ख़ंजर से ज़मीन खोदने लगा। क़ब्र तैयार हो गई तो उसने उस औरत को उसमें दफ़ना दिया। जब यह काम पूरा हो गया तो उसने इधर-उधर से कुछ फूल तोड़कर उनका एक गुलदस्ता बनाया और उस कब्र पर रख दिया। जब वह जाने लगा तो मैंने उसे रोक लिया और कहा, ''इस औरत के साथ तुम्हारा क्या ताल्लुक़ था कि तुमने अमीर की इच्छा के खिलाफ और अपनी जिंदगी ख़तरे में डालकर इसके लिए इतनी मेहनत की और इसकी देह को कौवों और चीलों की ख़ुराक बनने से बचाया?''

नौजवान ने मेरी तरफ़ देखा। उसकी आंखों से मालूम हो रहा था कि वह बहुत रोया-धोया है और उसने सारी रात जागते हुए बिताई है। वह बहुत दुःख और मायूसी भरी आवाज में बोला, ''मैं वही बदनसीब आदमी हूं, जिसकी वजह से इस बेचारी को संगसार किया गया। हम एक-दूसरे को तभी से चाहते थे, जबकि हम बचपन के दिनों में इकट्ठे खेला करते थे। हम जवान हो गए और हमारी मुहब्बत भी पूरी तरह उभर आई। एक बार जब मैं शहर चला गया था, लड़की के बाप ने उसकी शादी जबरदस्ती किसी दूसरे आदमी के साथ कर दी मैं वापस आया और मैंने यह

ख़बर सुनी तो मेरी ज़िंदगी में अंधेरा छा गया और मेरा जीना दूभर हो गया। मैं अपनी भीतरी इच्छा के साथ बहुत झगड़ता रहा, लेकिन परास्त हो गया। मेरी मुहब्बत मुझे इस तरह लेकर चल दी जिस तरह आंखों वाला किसी अंधे को रास्ता दिखाता है। मैं छिपकर उसके घर पहुंचा, ताकि उसकी आंखों का नूर देखूं और उसकी आवाज़ का गीत सुनूं। मैंने उसे अकेला पाया। वह अपनी क़िस्मत को रो रही थी और अपनी ज़िंदगी पर अफ़सोस कर रही थी। मैं उसके पास बैठ गया। हम चैन से बातें करने में मग्न हो गए और ख़ुदा जानता है कि हमारे दिल पाक थे। लेकिन जब एक घंटा गुज़र गया तो एकाएक उसका ख़ाविंद आ गया। उसने जब मुझे देखा तो वह गुस्से से पागल हो गया। उसने अपनी औरत के गले में कपड़ा डालकर शोर मचाना शुरू कर दिया, 'लोगो! आओ! और इस औरत और इसके यार को देखो!' अड़ोसी-पडोसी जमा हो गए और थोड़ी देर में पुलिस वाले भी ख़बर पाकर आ पहुंचे। उस आदमी ने अपनी औरत को पुलिस के सख़्त हाथो में दे दिया, जो उसे घसीटते हुए थाने की तरफ़ ले गए। लेकिन किसी ने मुझ पर हाथ भी न उठाया, क्योंकि अंधा कानून और गंदी रूढ़ियां औरत का ही पीछा करती हैं, मर्द का तो हर क़सूर माफ़ समझा जाता है।''

यह कहानी सुनाने के बाद नौजवान अपना मुंह छिपाए शहर की तरफ चल दिया और मुझे लाश की तरफ़ देखते हुए छोड़ गया, जो पेड़ से लटक रही थी और हवा के झोंकों से पेड़ की शाखाओं के साथ हिल रही थी, मानो वह रूहों से दया की मांग कर रही हो, और चाहती हो कि उसे नीचे उतारकर जमीन पर इंसानियत के प्रेमियों और मुहब्बत के शहीदों के पहलू में डाल दिया जाए।

एक घंटे के बाद एक दुबली-पतली औरत आ पहुंची, जिसके कपड़े चिथड़े हो रहे थे। वह पेड़ से लटकती हुई लाश के क़रीब आकर ठहर गई और उसने रो-पीटकर अपने दिल को हलका किया। इसके बाद वह पेड पर चढ़ गई और अपने दांतों से रेशमी रस्सी को खोला। लाश गीले कपड़े की तरह ज़मीन पर आ गई। औरत पेड से नीचे उतरी और उसने दो कब्रों के पहलू में तीसरी क़ब्र खोदी और उसमें लाश को दफन कर दिया। जब वह क़ब्र पर मिट्टी डाल चुकी तो उसने लकडी के दो टुकड़े लेकर उनका सलीब बनाया और उसे क़ब्र के सिरहाने गाड़ दिया। जब वह जाने लगी तो मैंने आगे बढ़कर सवाल किया, ''ओ औरत, तुम्हें किस बात ने मजबूर किया कि तुम एक चोर को दफ़न करने के लिए यहां आओ?''

उसने मेरी तरफ़ देखा। उसकी निगाहों से परेशानी और बेचैनी के निशान दिखाई दे रहे थे। उसने कहा, ''यह मेरा ख़ाविंद, मेरी ज़िंदगी का साथी और मेरे बच्चों का बाप है। हमारे पांच बच्चे भूखों मर रहे हैं। उनमें सबसे बड़ा आठ साल का है और सबसे छोटा अभी दूध पीता है। मेरा ख़ाविंद चोर नहीं था। वह गिरजाघर

की जमीन में खेती–बाड़ी करता था और उसे गिरजाघर के जोगी इतना ही मेहनताना देते थे कि अगर हम शाम को खाना खा लेते तो सुबह के लिए हमारे पास कुछ न बचता। जब मेरा ख़ाविंद जवान था तो वह गिरजाघर के खेतों को अपने पसीने से सींचता था और अपनी बांहों की ताक़त से वहां के बाग़ों को हरा–भरा रखता था। लेकिन जब वह बूढ़ा हो गया और जब सालों की मेहनत ने उसकी ताकत को ख़त्म कर दिया और बीमारियों ने उसे घेर लिया तो उन्होंने उसे यह कहकर नौकरी से हटा दिया कि गिरजाघर को अब तुम्हारी ज़रूरत नहीं है, अब तुम चले जाओ। जब तुम्हारे बेटे जवान हो जाएं तो उन्हें यहां भेज देना, ताकि वे तुम्हारी जगह ले ले।'

"मेरा ख़ाविद उनके सामने बहुत रोया–धोया। उसने ईसा मसीह के नाम पर उनसे दया की भीख मांगी और उन्हें फ़रिश्तो तथा मसीह के साथियों की क़समे दिलाईं; लेकिन उन्होंने दया न की और न उस पर मेहरबानी की— न मुझ पर, न हमारे बच्चों पर।

"मेरा ख़ाविंद शहर में गया ताकि कोई नौकरी ढूंढ़े, लेकिन नाकामयाब होकर लौटा, क्योंकि उन महलों के रहने वाले सिर्फ़ जवान आदमियों को नौकर रखते थे। इसके बाद वह सड़क पर बैठ गया, ताकि लोगों से दान या भीख मिले। लेकिन किसी ने उसकी तरफ़ निगाह नहीं डाली। लोग कहते थे, 'ऐसे इंसान को भीख या खैरात देना मज़हब के ख़िलाफ़ है।'

"आख़िर एक ऐसी रात आ पहुंची, जबकि हमारे बच्चे भूख के मारे ज़मीन पर तड़प रहे थे। मेरा दूधमुंहा बच्चा मेरी छाती को चूसता था, लेकिन वहां दूध कहां था! यह नज़ारा देखकर मेरे ख़ाविंद का चेहरा बदल गया। वह अंधेरे के परदे में चुपके–से निकला और गिरजाघर के भंडार में पहुंच गया, जहां जोगी और पादरी अनाज और शराब जमा करके रखते हैं। मेरे ख़ाविंद ने अनाज की एक झोली भरकर अपने कंधे पर उठाई और बाहर निकलना चाहा, लेकिन वह कुछ ही गज गया था कि चौकीदार जाग उठे और उन्होंने उस ग़रीब को पकड़ लिया। उन्होंने उसे गालियां दीं, ख़ूब मारा–पीटा और जब सुबह हुई तो यह कहकर पुलिस के हवाले कर दिया कि यह चोर है और गिरजाघर के सोने के बर्तन चुराने आया था।

"पुलिस ने उसे क़ैदख़ाने में डाल दिया। उसके बाद इसे पेड़ से लटका दिया गया ताकि गिद्ध इसके गोश्त से अपना पेट भरें। इसका क़सूर क्या है? सिर्फ़ इतना ही कि इसने इस बात की कोशिश की थी कि इसके भूखे बच्चे उस अनाज से अपना पेट भरें, जो इसने अपनी बाज़ुओं की ताक़त से उन दिनों जमा किया था, जबकि वह गिरजाघर का नौकर था।"

इतना कहकर वह ग़रीब औरत चली गई, लेकिन उसकी बातों ने सारे वायुमंडल को उदास और दुःखी बना दिया। ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसके मुंह से धु के बादल निकलकर हवा में दु ख का पैदा कर रहे हैं

मैं उन क़ब्रों के पास खड़ा रहा, जिनकी मिट्टी के ज़र्रों से फ़रियादें निकल रही थीं। मैं खड़ा सोच रहा था कि अगर इस खेत के पेड़ों से मेरे दिल की आग की लपट छू जाए तो यह हलचल करने लग जाएं और अपनी जगह छोडकर अमीर और उसके सिपाहियों से जूझ पड़ें और गिरजाघर की दीवारों को तोड-फोड़कर पादरियों के सिर पर गिरा दें।

मैं उन नई क़ब्रों की ओर देख रहा था। मेरी निगाह से हमदर्दी की मिठास तथा दु:ख और अफ़सोस का कड़वापन निकल रहा था।

यह एक नौजवान की कब्र है, जिसने अपनी ज़िंदगी को एक अबला औरत की इज्जत बचाने के लिए न्योछावर कर दिया। इसने उस औरत को भेड़िये के मुंह से छुड़ाया और इस बहादुरी के लिए इसकी गरदन उड़ा दी गई। उस औरत ने अपने रहबर की कब्र पर तलवार गाड़ दी है, जो इस नौजवान की बहादुरी की तरफ़ इशारा करती है।

यह कब्र उस औरत की है, जो मारी जाने से पहले प्रेम की पुतली थी। इसे संगसार किया गया, क्योंकि वह मरते दम तक पाक रही। इसके दोस्त ने इसकी कब्र पर फूलों का गुच्छा रख दिया है, जो प्रीति की सुगध की तरफ़ इशारा करता है।

और यह उस बदनसीब ग़रीब की कब्र है, जिसकी बाजुओं में जब तक ताकत थी। वह गिरजाघर के खेतों में खेती-बाडी करता रहा, लेकिन जब उसमें ताकत न रही तो उसे निकाल दिया गया। वह काम करके अपने बच्चों का पेट पालना चाहता था, लेकिन उसे काम न मिला। फिर उसने भीख मांगना चाहा, लेकिन किसी ने उसे भीख न दी। आख़िरकार जब इसकी मायूसी हद से ज़्यादा बढ़ गई तो इसने उस अनाज में से थोड़ा-सा उठाना चाहा, जो उसने अपना ख़ून-पसीना एक करके जमा किया था। इसे पकड़ लिया गया और इसकी जान ले ली गई। इसकी औरत ने इसकी कब्र पर सलीब बना दिया है, ताकि रात के सूनेपन में आसमान के तारे पादरियो के जुल्म को देखें, जो मसीह की सिखावन को फैलाने का दावा तो करते हैं, लेकिन असलियत में तलवारों से दुखियों और कमजोरों की गरदनें उड़ाते हैं।

सूरज छिप रहा था, मानो वह आदमियों के जुल्म और अत्याचारों से तंग आ गया हो और उनसे नफ़रत करता हो। शाम अपने घूंघट में सारी दुनिया को छिपा रही थी। मैंने आसमान की तरफ देखा और कब्रों के राज़ पर हाथ मलते हुए ऊंची आवाज से कहा, ''यह है तुम्हारी तलवार, ऐ बहादुर मर्द। जो जमीन मे गड़ी है, ये हैं तुम्हारे फूल, ऐ औरत! जिनसे प्रीति की किरणें निकल रही हैं; और यह है तुम्हारा सलीब, ऐ ईसा मसीह, जो रात के अंधेरे में छिप रहा है।''

□□

11. महाकवि

बालबेक[1] ई०पू० ११२ बादशाह स्वर्ण सिहासन पर विराजमान था। उसके चारो ओर दीपक जल रहे थे और ऊद और धूप की अंगीठियां सुगंधित धुआ फैला रही थीं। दाएं-बाएं दरबारी, अमीर और धर्माचार्य बैठे थे। सामने गुलाम और सिपाही इस प्रकार खडे थे, जैसे सूरज के सामने पुतले।

थोड़ी देर के बाद, जब गायकों का संगीत समाप्त होकर रात के काले कपड़ो की तहों में गुम हो गया तो प्रधानमंत्री उठा और बादशाह के सामने हाथ बांधकर खड़ा हो गया। फिर बुढ़ापे की कमज़ोर आवाज़ में रुक-रुककर कहने लगा, "जहांपनाह, हिंदुस्तान से एक विचित्र दार्शनिक कल शहर में आया है। उसकी शिक्षाएं ऐसी अनोखी हैं कि आज तक सुनने में नहीं आईं। उसका मत है कि आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है और मनुष्य एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी में प्रविष्ट होता है। अंत में वह पूर्णत्व को पहुंचकर देवताओं की श्रेणी मे सम्मिलित हो जाता है। अपने इसी धर्म के प्रचार के लिए वह यहा आया है और चाहता है कि आज की रात आपके दर्शन करके आपके सामने अपने विश्वासों का विवरण प्रस्तुत करे।"

बादशाह ने सिर हिलाया और मुस्कराकर कहा, "हिंदुस्तान से ऐसी ही निराली चीजें आती हैं अच्छा, उसे हाजिर करो। हम उसकी दलीलें सुनना चाहते हैं।"

उसी क्षण एक अधेड़ उम्र का आदमी दरबार में उपस्थित किया गया, जिसका रंग गेहुंआ था। उसके चेहरे पर गंभीरता थी। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं। उसका

---

1. 'बालबेक' अथवा 'बालनगर' पुराने समय में सूर्यनगर के नाम से प्रसिद्ध था। यह नगर सूर्यदेव हीलिओ पोलिश के सम्मान में बनाया गया था। ऐतिहासकों का मत है कि एक समय मध्यपूर्व में यह सबसे सुंदर शहर माना जाता था। इसके खंडहरों द्वारा, जो आज भी देखे जा सकते हैं, ज्ञात होता है कि यहां की शिल्पकला आदि पर रोमनों का प्रभाव रहा है, क्योंकि उस समय सीरिया देश पर उन्हीं का राज था।

समूचा व्यक्तित्व ऐसा प्रसन्न और प्रफुल्लित था कि वह बिना कुछ बोले ही गहरे रहस्यो और अनोखे सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करता था। बादशाह को प्रणाम करके उसने आज्ञा पाकर अपना सिर उठाया, उसकी आंखों में चमक पैदा हुई और वह अपने नए मत का प्रतिपादन करने लगा। उसने बताया कि आत्मा अपने अधिकार किए हुए माध्यमों और प्राप्त किए हुए अनुभवों के द्वारा क्रमशः उन्नति करते हुए उच्चता और सामर्थ्य प्रदान करने वाली महिमाओं के साथ झूमते हुए तथा सौभाग्य और भलाई को आलिंगन देने वाली प्रीति के साथ विकसित होते हुए किस प्रकार एक शरीर से दूसरे शरीर मे प्रवेश करती है। फिर उसने समझाया कि मनुष्य किस प्रकार सद्गुणों की आवश्यकताओं की टोह लगाते हुए वर्तमान काल में भूतकाल के पापो का प्रायश्चित करता है और किस प्रकार एक पारी में बोई हुई खेती दूसरी पारी मे काटते हुए स्थानांतरण करता है।

जब प्रवचन बढ़ता गया और बादशाह के चेहरे पर बेचैनी और थकान के चिह्न दिखाई देने लगे तो प्रधानमंत्री नवागत दार्शनिक के पास पहुंचा और उसने उसके कान में चुपके से कहा, "बस! अब आगे की चर्चा को किसी और फुरसत के समय के लिए उठा रखो।"

दार्शनिक उल्टे पांव लौटा और धर्माचार्यों की पंक्ति में बैठ गया। उसने अपनी आंखे बन्द कर लीं, मानो अस्तित्व के रहस्यों को ध्यान से देखते-देखते वह थक गया हो।

थोडी देर तक शांति रही, जिसमें पैगम्बर का अभिमान और आत्म-विस्मृति थी। फिर बादशाह ने दाएं-बाएं देखकर पूछा, "हमारा कवि कहां है? हमने उसे बहुत दिनो से नही देखा। उस पर क्या बीती? वह तो हर रात हमारी सभा मे उपस्थित रहता था।"

एक धर्मगुरु ने निवेदन किया, "एक सप्ताह हुआ, मैंने उसे अशतरूत के मंदिर की देहली पर बैठे देखा था। वह अपनी दुःखी और स्थिर नजरों से दूर क्षितिज को देख रहा था, मानो उसकी कोई कविता बादलों में गुम हो गई थी।"

एक दरबारी बोला, "कल मैंने उसे बेंत और सरो के पेड़ों मे बैठे देखा था। मैंने उसे नमस्कार किया; पर उसने कोई उत्तर न दिया। वह उसी प्रकार अपने विचारों में डूबा रहा।"

जनानखाने के रखवालों की दारोग़ा ने कहा, "आज वह मुझे महल के बगीचे में नज़र आया था। मैं उसके पास गई तो देखा, उसका रंग पीला पड़ गया है, चेहरा दुःख की तस्वीर बना हुआ है, पलकों पर आंसू मचल रहे हैं और सांस घुट-घुटकर आ रही है।"

बादशाह ने विषादपूर्ण स्वर में आदेश दिया जाओ उसे तुरत खोजकर लाओ हम उससे मिलने के लिए बेचैन हैं

गुलाम और सिपाही कवि की खोज में चले गए और बादशाह सहित सारा दरबार स्तब्ध और चकित होकर प्रतीक्षा करता हुआ बैठा रहा। ऐसा लगता था, मानो वे सब कमरे के बीच में खड़े हुए एक अदृश्य साए का अस्तित्व अनुभव कर रहे हैं।

थोड़ी देर के बाद ज़नानख़ाने के रखवालों का हब्शी सरदार आया और बादशाह के क़दमों पर गिर पड़ा--उस पछी की तरह, जिसे शिकारी के तीर ने गिरा दिया हो। बादशाह उत्तेजित होकर चिल्लाया, "क्या बात है? क्या हुआ?"

हब्शी ने सिर उठाया और कांपती हुई आवाज़ में बोला, "कवि महल के बाग़ में मरा पड़ा है।"

बादशाह एकदम खड़ा हो गया। उसका चेहरा शोक और दु:ख से मुरझा गया। वह धीरे-धीरे बाग़ की ओर चला। उसके आगे-आगे हाथों में दीये लेकर ग़ुलाम चल रहे थे और पीछे-पीछे दरबारी और धर्माचार्य। बाग़ के अहाते के पास, जहां बादाम और अनार के पेड़ थे, मोमबत्तियों की पीली किरणों के प्रकाश में एक निष्प्राण शरीर दिखाई दिया, जो गुलाब की सूखी हुई टहनी की तरह घास में पड़ा था।

एक दरबारी ने कहा, "देखो तो, सितार को किस प्रकार गले से लगा रखा है, जैसे वह एक रूपवती कुमारी हो, जिससे उसे प्यार था और जो उससे प्यार करती थी। इसी प्रेम के कारण उन्होंने आपस में संकल्प कर लिया था कि हम दोनों साथ मरेंगे।"

एक सेनापति बोला, "अपनी आदत के अनुसार वह अब भी वायुमंडल की गहराइयों को ध्यान से देख रहा है, मानो तारों में उसे अनजान भगवान की परछाई दिखाई दे रही हो।"

प्रधानमंत्री ने बादशाह को संबोधित करते हुए कहा, "कल हम इसे पवित्र अशतरूत के मंदिर के साये में दफ़न करेंगे। शहर का हर छोटा-बड़ा आदमी इसकी मैयत के साथ होगा। नवयुवक इसके भावगीत गाएंगे और जवान लड़कियां इसके ताबूत पर फूल बरसाएंगी। चूंकि यह हमारे देश का सबसे बड़ा कवि था, इसलिए इसकी शवयात्रा का जुलूस भी शानदार होना चाहिए।"

बादशाह ने कवि के चेहरे पर से, जिस पर मृत्यु का घूंघट पड़ा हुआ था, अपनी निगाह हटाए बिना सिर हिलाया और वह धीमी आवाज से कहने लगा, "नहीं! जब यह जीवित था और देश के कोने-कोने को अपनी आत्मा की किरणों से प्रकाशमान और वायुमंडल के कण-कण को अपनी सांस की महक से सुगंधित कर रहा था, उस समय हमने उसे भुला दिया था। इसलिए अब अगर हम उसके मरने के बाद उसका सम्मान करेंगे तो देवता हमारी हंसी उड़ाएंगे तथा घाटियों और हरे भरे मैदानों की परिया हम पर हसेंगी अच्छा यही होगा कि इसे यहीं दफ्न

करो, जहां इसकी आत्मा इसकी देह से अलग हुई। इसके सितार को इसके शरीर से चिपटा रहने दो। अगर तुममें से कोई इसकी इज़्ज़त करना चाहता है तो वह घर जाकर अपने परिवार वालों को बताए कि बादशाह ने अपने कवि की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया, इसीलिए वह अकेले में उदास होकर मर गया।''

फिर उसने चारो ओर देखकर पूछा, ''भारतीय दार्शनिक कहां है?''

दार्शनिक आगे बढ़ा और बोला, ''जहांपनाह! हाजिर हूं।''

बादशाह ने पूछा, ''ऐ विद्वान बता। क्या देवता मुझे एक बादशाह और उसे एक कवि के रूप में फिर इस संसार में भेजेंगे? क्या मेरी आत्मा किसी बड़े बादशाह के युवराज का और उसकी आत्मा एक महाकवि का रूप धारण करेगी? क्या प्रकृति का नियम इसे दोबारा ईश्वरीय तेज के दरबार में हाजिर करेगा, ताकि यह जीवन को कविता की पोशाक पहना सके? और क्या अमर चारित्र्य मुझे फिर इस भौतिक ससार में भेज देगा, ताकि मैं उस पर उपहार-सम्मानों की वर्षा करूं और उसके अंत:करण को अनुग्रहों से प्रसन्न बना सकूं?''

दार्शनिक ने उत्तर दिया, ''आत्मा जो कुछ चाहती है, वह उसे मिलता है। वह शील, जो जाड़े के समाप्त होने पर वसंत ऋतु के वैभवों को लौटाता है, अवश्य ही आपको महान् सम्राट और इसे महाकवि बनाकर इस दुनिया में वापस भेजेगा।''

बादशाह का चेहरा खिल उठा। उसकी आत्मा में एक ताजगी, एक प्रफुल्लता करवटें लेने लगी। वह अपने महल की ओर चल दिया। उसका दिमाग़ भारतीय दार्शनिक की बातों पर विचार कर रहा था और उसका दिल उसके इन शब्दों को दोहरा रहा था, ''आत्मा जो कुछ चाहती है, वह उसे मिलता है।''

□□

काहिरा-मिस्र सं० १९१२ ई०। चांद ऊपर उठा और उसने अपनी रूपहली चादर शहर पर फैला दी। इस समय शहंशाह अपने महल के झरोखे में बैठा साफ़-सुथरे वातावरण को देख रहा था। वह उन समाजों के उदय और अस्त पर सोच रहा था, जो एक के बाद दूसरे नील नदी के किनारे से गुज़र रहे थे; उन बादशाहों और नेताओ की करतूतों का लेखा-जोखा ले रहा था, जो अबुलहौल के दबदबे और तेज के सामने ठिठककर खड़े हो गए थे और अपनी कल्पना में उन क़बीलों और वंशो के बड़े जुलूस का तमाशा देख रहा था, जिन्हें ज़माने ने अहरामे मिस्र के आसपास से निकालकर कस्रे आबिदैन (मिस्र से इराक) में पहुंचाया था।

जब उसके विचारों का घेरा विशाल हुआ और उसका चिंतन गहरा हो गया तो वह अपने ख़िदमतगार की ओर मुड़ा, जो उसके पास बैठा था और बोला, ''आज की रात हमारी तबीयत काव्य-साहित्य की तरफ़ झुक रही है। इसलिए कुछ सुनाओ।''

खिदमतगार ने आज्ञा पालन के तौर पर सिर झुकाया और बहुत पुराने समय के किसी कवि का गीत सुरीली आवाज मे सुनाना शुरू किया।

"किसी नए कवि का गीत सुनाओ," बादशाह ने उसे रोक दिया।

खिदमतगार ने दोबारा सिर झुकाया और किसी अज्ञात कवि का गीत सुनाने लगा।

"नहीं, नए-से-नए कवि का गीत सुनाओ," बादशाह ने फिर रोका।

खिदमतगार ने तीसरी बार फिर सिर झुकाया और मौशख अंदलुसी के शे'र पढने लगा।

"नहीं, इस ज़माने के किसी कवि का गीत सुनाओ।" बादशाह ने हुक्म दिया।

खिदमतगार ने अपना माथा पकडा, मानो इस जमाने के कवियों की सारी कविताओ को वह याद कर रहा हो। अचानक उसकी आंखो में चमक पैदा हुई। चेहरे पर खुशी की एक लहर दौड़ गई और वह मौजूदा जमाने के एक बहुत बडे कवि के शे'र सुरीली आवाज में गाने लगा। शे'र की उन पक्तियों मे विचारो की गहराई, सगीत का जादू, अर्थ की सूक्ष्मता, अछूतापन और ऐसे सुंदर, अप्रतिम रूपक आदि अलंकार थे, जो बुद्धि में समाकर उसे प्रकाशमान बना देते हैं तथा हृदय के चारों ओर चक्कर काटकर उसे भावातिरेक से पिघला देते हैं।

बादशाह ने उसकी ओर ध्यान से देखा। गीतों के अर्थ और सुरीलेपन ने उसे आत्मविभोर कर दिया था। वह एक ऐसे अदृश्य हाथ का अस्तित्व अनुभव कर रहा था जो उसे एक और ही दुनिया में—बहुत दूर की दुनिया में—खींचकर ले जा रहा था।

बादशाह ने पूछा, "ये शे'र किसके हैं?"

"एक बालबेकी शायर के," खिदमतगार ने उत्तर दिया।

"बालबेकी शायर?"

बालबेकी और कवि—दो अनोखे शब्द थे। ये शब्द बादशाह के कानों में गूजने लगे। उसके अत्यंत निर्मल, पारदर्शी मस्तिष्क में वे उन इच्छाओं और अभिलाषाओं की परछाइया छोड़ गए जो बहुत धुंधली, सूक्ष्म किंतु बडी प्राणवान थीं।

बालबेकी कवि—एक नया-पुराना नाम, जिसने बादशाह के मस्तिष्क में भूले हुए दिनों के चित्र ताजा कर दिए। उसके अंत:करण की गहराइयों में सोई हुई याद की परछाइयों को उसने उजागर कर दिया और उन रेखाओं में, जो बादलो के किनारों की तरह थीं, उस नवयुवक का चित्र उसकी आखों के सामने खींच दिया, जो सितार को अपने गले से लगाए मरा पडा था और जिसके चारो ओर सेनापति, धर्माचार्य और दरबारी लोग खडे थे

यह दृश्य बादशाह की आंखों के सामने से ओझल हो गया, जिस प्रकार सवेरा होते ही सपने मिट जाते हैं। वह अपने स्थान से उठा और अपने दोनों हाथ छाती पर रखकर टहलने लगा। वह बार-बार इस्लाम के पैग़म्बर की यह आयत दोहरा रहा था, "तुम मरे हुए थे, उसने तुम्हें जीवित किया। अब वह तुम्हे मारेगा और फिर जिलाएगा और अंत में तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे।"

इसके बाद बादशाह ने ख़िदमतगार को सम्बोधित करके कहा, "हमारे देश में बालबेकी कवि का होना, हमारे लिए बड़ी प्रसन्नता की बात है। हम उसके पास जाकर उसका सम्मान करेंगे।"

एक मिनट के बाद धंसी हुई आवाज में उसने फिर कहा, "कवि एक अनोखा पछी है, जो पवित्रता के हरे-भरे मैदानों से उड़कर चहचहाता हुआ इस संसार में आता है। इसलिए अगर हमने उसका सम्मान न किया तो वह दु:खी होगा और फिर अपने वतन चला जाएगा।"

रात बीत गई। प्रकृति ने अपनी वह पोशाक उतार दी, जिसमें तारे लगे हुए थे और सुबह की किरणों से बनी हुई जगमगाती पोशाक पहन ली, लेकिन बादशाह का मस्तिष्क अब भी अस्तित्व के जादुओं और जीवन के रहस्यों में डुबकिया लगा रहा था।

❑❑

12. इंसाफ़

एक रात शाही महल में एक दावत हुई। इस मौके पर एक आदमी आया और अपने आपको शहजादे के सामने पेश किया। सारे मेहमान उसकी तरफ देखने लगे। उन्होंने देखा कि उसकी एक आख बाहर निकल आई है और जख्म से खून बह रहा है।

शहजादे ने पूछा, "तुम्हारे साथ यह दुर्घटना कैसे हुई?"

उसने जवाब दिया, "मैं एक पेशेवर चोर हूं और पिछली रात जबकि चांद भी नही निकला था, मै एक साहूकार की दुकान में चोरी करने के लिए गया, किन्तु भूल से जुलाहे के घर मे पहुंच गया। ज्यों ही खिडकी में से कूदा, मेरा सिर जुलाहे के करघे मे टकरा गया और मेरी आंख फूट गई। ऐ शहजादे! अब मैं इस जुलाहे के मामले में इसाफ चाहता हू।"

यह सुनकर शहजादे ने जुलाहे को तलब किया और यह फ़ैसला दिया कि इसकी एक आंख निकाल दी जाए।

जुलाहा बहुत घबराया और सोचने लगा कि बिना बात मुसीबत गले पड़ गई और जिस प्रकार से शहजादे ने फैसला सुनाया था, वह तो बिल्कुल गैर सोच-समझ से सुनाया था। उसने सोचा इसमें बुद्धि नहीं है, अत: इसे अक्ल से बहलाना होगा। अपने बचाव का हक सभी को है, अत: क्यों न मैं अपना बचाव करूं और अपनी मुसीबत किसी और के गले मढ़ दूं। बिना घबराए उसने निर्णय लिया और बोला, "ऐ शहजादे। आपका यह न्याय उचित नहीं है कि मेरी आंख निकलवा रहे हैं। मेरे काम में दोनों आंखों की जरूरत है ताकि मैं उस कपडे को दोनों तरफ़ से देख सकू, जिसे मैं बुनता हूं। मेरे पड़ोस में एक मोची है। उसकी दो आंखें हैं, लेकिन उसे अपने काम के लिए दोनों आंखों की ज़रूरत नहीं।"

यह सुनकर शहज़ादे ने मोची को तलब किया। वह आया और उसकी दो आखों मे से एक आंख निकाल दी गई।

इस तरह उनकी दृष्टि में इंसाफ़ का तकाजा पूरा हो गया।

□□

13. तीन चीटियां

एक आदमी धूप मे पड़ा सो रहा था कि उसके शरीर पर इधर-उधर घूमती तीन चीटिया उसकी नाक पर आ इकट्ठी हुई। तीनो ही बेहद थकी और हताश दिखाई दे रही थीं। उनके मन में वैसे ही भाव थे जैसे अत्यधिक मेहनत के बाद किसी व्यक्ति के हाथ निराशा लगने पर उत्पन्न होते हैं। फिर भी एक-दूसरे को देखकर वे काफी प्रसन्न हुईं और अपने चेहरों पर उभरे निराशा के भावों को छिपाकर मुस्कराते हुए अपने- अपने खानदान की प्रथा के अनुसार एक-दूसरे का अभिवादन करने के बाद परस्पर वार्तालाप करने लगीं।

पहली चींटी ने कहा, ''मैंने इन पहाड़ों और घाटियो से ज्यादा बंजर जगह और कोई नहीं देखी। मैंने यहा सारे दिन दानों की तलाश की है, लेकिन मुझे एक दाना भी नहीं मिला।''

दूसरी चींटी ने कहा, ''मुझे भी कुछ नहीं मिला, यद्यपि एक-एक चप्पा छान मारा। मेरे खयाल से यह वही कोमल और अस्थिर भूमि है, जिसके बारे मे हमारे जाति वाले कहते हैं कि यहां कुछ पैदा नहीं होता।''

इसके बाद तीसरी चींटी ने सिर उठाया और कहा, ''मेरी सहेलियो! इस समय हम बड़ी चींटी की नाक पर बैठे हैं, जिसका सारा शरीर इतना बड़ा है कि हम उसे देख नहीं सकते। इसकी छाया इतनी विस्तृत है कि हम उसका अनुमान नहीं कर सकते। इसकी आवाज़ इतनी ऊंची है कि हमारे कान इसे सहन नहीं कर सकते, और वह हर जगह मौजूद है।''

जब तीसरी चींटी ने यह बात कही तो दूसरी चींटियों ने एक-दूसरे को देखा और जोर से हंसी।

ठीक उसी समय आदमी नींद में हिला। चींटियां लड़खड़ाई और गिरने के डर से उन्होंने अपने नन्हे-नन्हे पंजे उसकी नाक के मांस में गड़ा दिए, जिससे सोते-सोते में उस आदमी ने अपनी नाक को खुजलाया और तीनों चींटियां पिसकर रह गईं।

□□

14. पवित्र नगर

मैं अपने यौवन-काल में सुना करता था कि एक ऐसा शहर है, जिसके निवासी ईश्वरीय पुस्तकों के अनुसार धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं। मैंने कहा, "मै इस शहर की जरूर खोज करूगा और उससे कल्याण-साधन करूंगा।"

यह शहर बहुत दूर था। मैंने अपने सफ़र के लिए बहुत-सा सामान जमा किया। चालीस दिन के बाद उस शहर को देख लिया और इकतालीसवें दिन उस शहर में दाख़िल हुआ।

मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नगर के सभी निवासियो के केवल एक हाथ और एक आंख थी।

मैंने यह भी अनुभव किया कि वे स्वयं भी आश्चर्य में डूबे हुए हैं। मेरे दो हाथों और दो आंखों ने उन्हे आश्चर्य में डाल दिया था। इसलिए जब वे मेरे सम्बंध मे आपस में बातचीत कर रहे थे तो मैंने एक से पूछा, "क्या यह वही पवित्र नगर है, जिसका प्रत्येक निवासी धार्मिक जीवन व्यतीत करता है?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हां, यह वही नगर है।"

मैंने पूछा, "तुम्हारी यह दशा क्योंकर हुई? तुम्हारी दाहिनी आंख और दाहिने हाथ क्या हुए?"

वह मेरी बात से बहुत प्रभावित हुआ और बोला, "आओ और देखो।"

वे मुझे एक देवालय में ले गए, जो शहर के बीच में स्थित था। मैंने उस देवालय के चौक मे हाथों और आखों का एक बड़ा ढेर लगा देखा। वे सब गल-सड रहे थे। यह देखकर मैंने कहा, "अफ़सोस, किसी निर्दयी विजेता ने तुम्हारे साथ यह अत्याचार किया है।"

इतना सुनकर उन्होने आपस में धीरे-धीरे बातचीत करनी शुरू की और एक वृद्ध आदमी ने आगे बढकर मुझसे कहा, "यह हमारा काम है। किसी विजेता ने हमारी आख और हाथ नहीं काटे। ईश्वर ने हमें अपनी बुराइयों पर विजय प्रदान की है

यह कहकर वह मुझे एक ऊचे स्थान पर ले गया। बाकी सब लोग हमारे पीछे थे। वहां पहुंचकर मन्दिर के ऊपर एक लेख दिखाया, जिसके शब्द थे—

''यदि तुम्हारी दाहिनी आख तुम्हें ठोकर खिलाए तो उसे बाहर निकाल फेंको, क्योकि सारे शरीर के नरक में पडे रहने की अपेक्षा एक अंग का नष्ट होना अच्छा है, और यदि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हें बुराई करने के लिए विवश करे तो उसे भी काटकर फेंक दो, ताकि तुम्हारा केवल एक अंग नष्ट हो जाए और सारा शरीर नरक में न पड़ने पाए।''

यह लेख पढ़कर मुझे सारा रहस्य मालूम हो गया। मैंने मुह फेरकर सब लोगों को सम्बोधित किया, ''क्या तुममें कोई पुरुष या स्त्री ऐसा नहीं, जिसके दो हाथ और दो आंखें हों?''

सबने उत्तर दिया, ''नहीं, कोई नहीं। यहा बालकों के, जो कम उम्र होने के कारण इस लेख को पढ़ने और इसकी आज्ञाओं के अनुसार कार्य करने मे असमर्थ हैं, वही बचे हैं, कोई मनुष्य नहीं।''

जब हम देवालय से बाहर आए तो मै तुरन्त इस पवित्र नगर से भाग निकला, क्योकि मैं बच्चा नहीं था और उस शिलालेख को अच्छी तरह पढ सकता था।